Hindi (A)

खण्डक

अपठित बोध

अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

[1 × 5 = 5] [CBSE 2011]

कहा जाता है कि हमारा लोकतंत्र यदि कहीं कमज़ोर है तो उसकी एक बड़ी वजह हमारे राजनीतिक दल हैं। वे प्रायः अव्यवस्थित हैं, अमर्यादित हैं और अधिकांशतः निष्ठा और कर्मठता से सम्पन्न नहीं हैं। हमारी राजनीति का स्तर दृष्टि से गिरता जा रहा है। लगता है उसमें सुयोग्य और सच्चरित्र लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है। लोकतंत्र के मूल में लोकनिष्ठा होनी चाहिए, लोकमंगल की भावना और लोकानुभूति होनी चाहिए और लोकसम्पर्क होना चाहिए। हमारे लोकतंत्र में इन आधारभूत तत्वों की कमी होने लगी है, इसलिए लोकतंत्र कमज़ोर दिखाई पड़ता है। हम प्रायः सोचते हैं कि हमारा देश-प्रेम कहाँ चला गया, देश के लिए कुछ करने, मर-मिटने की भावना कहाँ चली गई? त्याग और बलिदान के आर्दश कैसे, कहाँ लुप्त हो गए? आज हमारे लोकतंत्र को स्वार्थान्धता का घुन लग गया है। क्या नाजनीतिज्ञ, क्या अफसर, अधिकांश यही सोचते हैं कि वे किस तरह से स्थिति का लाभ उठाएँ, किस तरह एक-दूसरे का इस्तेमाल करें। आम आदमी अपने आपको लाचार पाता है और ऐसी स्थिति में उसकी लोकतांत्रिक आस्थाएँ डगमगाने लगी हैं। लोकतंत्र की सफलता के लिए हमें समर्थ और सक्षम नेतृत्व चाहिए, एक नई दृष्टि, एक नई प्रेरणा, एक नई संवेदना, एक नया आत्मविश्वास, एक नया संकल्प और समर्पण आवश्यक है। लोकतंत्र की सफलता के लिए हम सब अपने आप से पूछें कि हम देश के लिए, लोकतंत्र के लिए क्या कर सकते हैं? और हम सिर्फ पूछकर ही न रह जाएँ, बल्कि संगठित होकर समझदारी, विवेक और संतुलन से लोकतंत्र को सफल और सार्थक बनाने में लग जाएँ।

(i) राजनीतिक दल लोकतंत्र की असफलता के कारण बताए जाते हैं, क्योंकि वे प्रायः-

(क) धन और पद-लोलुप हैं।

(ख) निष्ठाहीन और कर्तव्यविमुख हैं।

(ग) सम्प्रदायवादी और जातीयतावादी हैं।

(घ) केवल सत्ता-लालसी हैं।

(ii) लोकतंत्र का मूल तत्व नहीं है-

(क) लोक-मंगल के प्रति उपेक्षा।

(ख) लोक-निष्ठा की अपेक्षा।

(ग) लोक-संपर्क की इच्छा।

(घ) लोक के सुख-दुख की अनुभूति।

(iii) आम आदमी की लोकतांत्रिक आस्थाएँ डगमगाती हैं-

(क) लोकतंत्र की गिरती मर्यादाओं के समक्ष विवशता देखकर।

(ख) नेताओं और अफसरों का उपयोग होते देखकर।

(ग) भाई-भतीजावाद और पक्षपात देखकर।

(घ) केवल धनार्जन को ही जीवन का लक्ष्य पाकर।

(iv) लोकतंत्र की सफलता और सार्थकता आधारित नहीं है–

(क) नई दृष्टि, प्रेरणा और संवेदना पर।

(ख) विवेक और संतुलन की प्रवृत्ति पर।

(ग) संकल्प और समर्पण की वृत्ति पर।

(घ) संगठन और आत्मविश्वास के अभाव पर।

(v) 'हम देश के लिए, लोकतंत्र के लिए, क्या कर सकते हैं?' यह वाक्य है–

(क) कर्तृवाच्य में (ख) कर्मवाच्य में

(ग) भाववाच्य में (घ) अकर्तृवाच्य में

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए

[1 × 5 = 5] [CBSE 2011]

तिलक ने हमें स्वराज का सपना दिया और गांधी ने उस सपने को दलितों और स्त्रियों से जोड़कर एक ठोस सामाजिक अवधारणा के रूप में देश के सामने ला रखा। स्वतंत्रता के उपरान्त बड़े-बड़े कारखाने खोले गए, वैज्ञानिक विकास भी हुआ, बड़ी-बड़ी योजनाएँ भी बनीं, किन्तु गांधीवादी मूल्यों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता सीमित होती चली गई। दुर्भाग्य से गांधी के बाद गांधीवाद को कोई ऐसा व्याख्याकार न मिला जो राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संदर्भों में गांधी के सोच की समसामयिक व्याख्या करता। सो यह विचार लोगों में घर करता चला गया कि गांधीवादी विकास का मॉडल धीमे चलने वाला और तकनीकी प्रगति से विमुख है। उस पर ध्यान देने से हम आधुनिक वैज्ञानिक युग की दौड़ में पिछड़ जाएँगे। कहना न होगा कि कुछ लोगों की पाखण्डी जीवन शैली ने भी इस धारणा को और पुष्ट किया।

इसका परिणाम यह हुआ कि देश में बुनियादी तकनीकी और औद्योगिक प्रगति तो आई पर देश के सामाजिक और वैचारिक-ढाँचे में जरूरी बदलाव नहीं लाए गए। सो तकनीकी विकास ने समाज में व्याप्त फटेहाली, धार्मिक कूपमंडूकता और जातिवाद को नहीं मिटाया।

(i) गांधी ने स्वराज के सपने को सामाजिक अवधारणा का रूप कैसे दिया?

(क) ब्रिटिश शासकों की नीतियों के विरोध द्वारा।

(ख) देश के महिला वर्ग और दलितों से जोड़कर।

(ग) विदेशी शासन के विरूद्ध असहयोग आन्दोलन द्वारा।

(घ) अपने सत्याग्रहों से समाज में चेतना जगाकर।

(ii) गांधीवादी मूल्य स्वतंत्रता के उपरान्त आकर्षण का केन्द्र-बिन्दु क्यों नहीं बन सके?

(क) बड़े-बड़े उद्योगों के प्रति आकर्षण के कारण।

(ख) समयानुक्त वैज्ञानिक क्षमता के विकास के कारण।

(ग) गांधीवाद की समयानुकूल व्याख्या न होने के कारण।

(घ) पंचवर्षीय योजनाओं के कार्यान्वयन के कारण।

(iii) गांधीवाद की व्याख्या के अभाव में उसके विषय में धारणा बनी कि वह–

(क) वैज्ञानिक विकास का विरोधी है।

(ख) बड़े उद्योगों की स्थापना का समर्थक नहीं है।

(ग) शिथिल है और तकनीकी विकास में बाधक है।

(घ) पंचवर्षीय योजनाओं का पक्षधर नहीं है।

(iv) देश के सामाजिक और वैचारिक ढाँचे में बदलाव न आने का कारण था–

(क) देश का औद्योगिक विकास।

(ख) पंचवर्षीय योजनाओं के प्रति झुकाव।

(ग) गांधीवादी मूल्यों के प्रति लगाव का अभाव।

(घ) देशवासियों की वैचारिक संकीर्णता।

(v) "देश में बुनियादी तकनीकी और औद्योगिक प्रगति तो आई पर देश के सामाजिक और वैचारिक ढाँचे में जरूरी बदलाव नहीं लाये गए" वाक्य का प्रकार है–

(क) संयुक्त

(ख) मिश्र

(ग) साधारण

(घ) सरल

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2011]

हम जंग न होने देंगे!
विश्व शांति के हम साधक हैं,
जंग न होने देंगे!
कभी न खेतों में फिर खूनी खाद फलेगी,
खलिहानों में नहीं मौत की फसल खिलेगी,
आसमान फिर कभी न अंगोरे उगलेगा,
ऐटम से फिर नागासाकी नहीं जलेगी
युद्धविहीन विश्व का सपना भंग न होने देंगे।
हथियारों के ढेरों पर जिनका है डेरा,

मुँह में शान्ति, बगल में बम, धोखे का फेरा,
कफ़न बेचने वालें से कह दो चिल्लाकर,
दुनिया जान गई है उनका असली चेहरा,
कामयाब हों उनकी चालें, ढंग न होने देंगे!
हमें चाहिए शान्ति, जिंदगी हमको प्यारी,
हमें चाहिए शान्ति, सृजन की है तैयारी,
हमने छेड़ी जंग भूख से, बीमारी से,
आगे आकर हाथ बटाए दुनिया सारी,
हरी-भरी धरती को खूनी रंग न लेने देंगे!

(i) किस स्वप्न को कवि नहीं टूटने देना चाहता?
  (क) विश्वशांति का स्वप्न।
  (ख) विश्वशांति संसार का स्वप्न।
  (ग) युद्धरहित संसार का स्वप्न।
  (घ) पारस्परिक श्रेष्ठता का स्वप्न।

(ii) 'खलिहानों में नहीं मौत की फसल खिलेगी' का तात्पर्य है-
  (क) युद्ध के कारण फसल नष्ट नहीं होगी।
  (ख) युद्ध अपार जन संहार का कारण नहीं बनेगा।
  (ग) खेतों में मृत व्यक्तियों के शव नहीं दिखाई देंगे।
  (घ) खेती करने वाला मौत का शिकार नहीं बनेगा।

(iii) कवि ने 'कफ़न वाले' ऐसे देशों को कहा है जो-
  (क) युद्ध के रूप में शक्ति-प्रदर्शन करते हैं।
  (ख) घातक अस्त्र-शस्त्रों के सौदागर हैं।
  (ग) शक्ति के आधार पर नरसंहार करते हैं।
  (घ) अशान्ति और अव्यवस्था में विश्वास रखते हैं।

(iv) कवि ऐसे युद्ध को समर्थक समझता है जो-
  (क) राक्षसी शक्तियों का संहारक हो।
  (ख) भूख और रोग का विनाशक हो।
  (ग) अशान्ति के समर्थकों का सहयोगी हो।
  (घ) विश्व के कल्याण का साधक हो।

(v) 'कभी न खेतों में फिर खूनी खाद फलेगी' में अलंकार है-
  (क) यमक
  (ख) श्लेष
  (ग) उपमा
  (घ) अनुप्रास

4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- [1 × 5 = 5] [CBSE 2011]

जिसके निमित तप-त्याग किए हँसते-हँसते बलिदान दिए,
कारागारों में कष्ट सहे, दुर्दमन नीति ने देह दहे,
घर-बार और परिवार मिटे, नर-नारि पिटे, बाजार लुटे
आई, पाई वह 'स्वतंत्रता', पर सुख से नेह न नाता है-
क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है।
शुचि, स्नेह, अहिंसा, सत्य, कर्म, बतलाए, 'बापू' ने सुधर्म,
जो बिना धर्म की राजनीति, उसको कहते थे वह अनीति,
अब गांधीवाद बिसार दिया, सद्भाव, त्याग, तप मार दिया,
व्यवसाय बन गया देश-प्रेम, खुल गया स्वार्थ का खाता है-
क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है।

(i) 'क्या यही स्वराज्य है' - कथन है:
  (क) एक प्रश्न (ख) एक व्यंग्य
  (ग) एक समस्या (घ) एक समाधान

(ii) 'दुर्दमन नीति ने देह दहे' का अभिप्राय है-
  (क) स्वतंत्रता-प्रेमियों को दमन में शामिल किया गया।
  (ख) उत्पीड़न से देशप्रेमियों का जीवन समाप्त किया गया।
  (ग) स्वराज्य के संघर्षशीलों को उकसाया गया।
  (घ) परतंत्रता के विरोधियों का दहन किया गया।

(iii) स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद की स्थित पर कौन सा कथन अनुपयुक्त है?
  (क) समाज में सर्वत्र धन का महत्व बढ़ना।
  (ख) सुख-सुविधा और स्नेह की प्राप्ति होना।
  (ग) उचित व्यवहार का सर्वत्र साम्राज्य होना।
  (घ) सब जगह सत्य का बोलबाला होना।

(iv) गांधी किसके समर्थक नहीं थे?
  (क) सत्य और अहिंसा के।
  (ख) धर्महीन राजनीति के।
  (ग) तप, त्याग और शुचिता के।
  (घ) सत्कर्म और सद्भाव के।

(v) 'सुख-सुविधा, समता पाएँगे' में अलंकार है-
  (क) यमक
  (ख) अनुप्रास
  (ग) रूपक
  (घ) श्लेष

5. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए:

[1 × 5 = 5] [CBSE 2012]

पाटलिपुत्र पहुँचकर यूनानी दूत मेगास्थनीज आचार्य विष्णुगुप्त से भेंट करने के लिए नगर की सीमा से बाहर स्थित उनकी कुटिया पर जब पहुँचा, उस समय शाम ढलने ही वाली थी, अँधेरा छाने लगा था। मेगास्थनीज ने बाहर से ही देखा कि आचार्य अपने आसन पर बैठे कुछ काम करने में लगे हैं। प्रकाश की व्यवस्था के लिए वहीं रखी एक तिपाई पर दीया जल रहा था। मेगास्थनीज के द्वार के निकट पहुँचने पर आचार्य ने उसे भीतर आकर स्थान ग्रहण करने का संकेत किया और स्वयं अपने कार्य में तल्लीन रहे। कुछ समय के उपरांत उन्होंने अपना कार्य समाप्त करके प्रकाशमान दीपक को बुझा दिया और पास ही रखा एक अन्य दीपक जला लिया। मेगास्थनीज सोचने लगा कि जब एक दीपक जल ही रहा था तो आचार्य ने उसे बुझाकर दूसरा दीपक क्यों जलाया? उससे रहा नहीं गया और उसने आचार्य से इसका कारण पूछ ही लिया। आचार्य ने सहजता से कहा, 'तुम जब यहाँ आए, तब मैं जो काम कर रहा था, वह राज्य-व्यवस्था से सम्बन्धित था और कार्य समाप्त हो गया, इसलिए मैंने वह दीपक बुझा दिया। अभी जो दीपक मैंने जला रखा है उसके खर्च का वहन मैं अपनी आय से करता हूँ। मैं अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए राज्य के संसाधन का दुरुपयोग कैसे कर सकता हूँ?'

मेगास्थनीज ने नैतिक जवाबदेही का ऐसा उदाहरण और कहीं नहीं देखा था। वह समझ गया कि मौर्य-शासन का भविष्य उज्जवल है।

(i) आचार्य कहाँ रहते थे?

(क) पाटलिपुत्र के भव्य भवन में।

(ख) गाँव की एक मामूली झोंपड़ी में।

(ग) नगर की सीमा से बाहर कुटिया में।

(घ) गंगातट पर बने आश्रम में।

(ii) मेगास्थनीज के सोच का कारण था

(क) विष्णुगुप्त का कुटिया में निवास करना।

(ख) पिताजी का क्रोधी तथा शक्की स्वभाव।

(ग) उनका अत्यन्त व्यस्त रहना।

(घ) अपने कार्य को समय पर निबटाना।

(iii) मेगास्थनीज ने आचार्य से क्या पूछा?

(क) उनके स्वास्थ्य की कुशल।

(ख) दूसरा दीपक जलाने का कारण।

(ग) राज्य-व्यवस्था के बारे में।

(घ) राज्य की प्रजा के विषय में।

(iv) दीपक की घटना संदेशवाहक है।

(क) प्रशासक की कर्मठता की।

(ख) प्रशासक की नैतिक जवाबदेही की।

(ग) प्रशासक की कुशल प्रशासन शैली की।

(घ) राज्य के प्रति प्रशासकीय निष्ठा की।

(v) 'दुरुपयोग' शब्द में उपसर्ग है

(क) दु (ख) दुर

(ग) दुरु (घ) दुर्

6. प्रस्तुत गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प लिखिए:

[1 × 5 = 5] [CBSE 2012]

जीवन का कोई भी रास्ता सफल अथवा निर्बाध नहीं होता। कामयाबी के हर रास्ते में कई मुश्किलों का आना तय है। हर बड़ी सफलता के पीछे अनेक छोटी-छोटी असफलताएँ छिपी रहती हैं। किसी बड़े पत्थर के टुकड़े करने को दो टुकड़ों में बाँट देता है। लेकिन क्या अंतिम प्रहार से पहले किए गए सारे प्रहार निरर्थक थे? नहीं। ऊपर से बेशक पहले का हर प्रहार निरर्थक लगता हो लेकिन हर प्रहार पूरी तरह सार्थक था क्योंकि उन प्रहारों में ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी हुई थी। हर चोट ने निरंतर उस पत्थर को टूटने के अधिकाधिक निकट ला दिया था। वास्तव में थोड़ी-बहुत असफलताओं के बिना सफलता संभव ही नहीं।

व्यक्ति अपनी असफलताओं की बजाय सफलताओं से सीखता है। हर असफलता से उसे पुनमूल्यांकन का अवसर मिलता है। सफलता के बाद हम कभी अपना पुनर्मूल्यांकन नहीं करते। समस्या आए बगैर हम रास्ता नहीं खोजते। समस्याएँ ही हमें उपाय खोजने के लिए प्रेरित करती हैं, हमें चिंतनशील बनाती हैं, हममें धैर्य का विकास करती है। ठोकर खाने के बाद ही हम अपनी असफलताओं के कारण जानने का प्रयास करते हैं। उसके बाद ही नए सिरे से आगे बढ़ने के लिए अपनी क्षमता का विकास करते हैं।

जीवन की हर असफलता किसी बड़ी सफलता का आधार बनती है।

(i) बड़ी सफलता के पीछे असफलताएँ छिपी रहती हैं, क्योंकि

(क) दुनिया में फूलों के साथ काँटे भी होते हैं।

(ख) रुकावटों को हटाकर ही आगे बढ़ा जाता है।

(ग) जीवन का कोई भी मार्ग बाधा रहित नहीं होता।

(घ) प्रत्येक कार्य में रुकावटें किसी-न-किसी रूप में आती ही हैं।

(ii) पत्थर पर पड़ने वाले असंख्य प्रहार सिद्ध करते हैं कि

(क) छोटी-छोटी असफलताओं को जीतकर ही बड़ी सफलता मिलती है।

(ख) बड़ा पत्थर लगातार छोटे प्रहारों से ही टूटता है।

(ग) उन पर ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी है।

(घ) पत्थर बड़े प्रहार से नहीं टूट सकता

(iii) व्यक्ति सफलताओं के बजाय असफलताओं से अधिक सीखता है, क्योंकि

(क) असफलताएँ उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर देती हैं।

(ख) सफलताएँ यह अवसर नहीं देती।

(ग) सफलता प्राप्ति पर व्यक्ति निश्चिंत हो जाता है।

(घ) असफलताएँ उसको सफलता के लिए प्रेरित करती हैं।

(iv) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है

(क) सफलता का मार्ग

(ख) सफलता और असफलता

(ग) असफलताओं से प्रेरणा

(घ) असफलता सफलता का आधार

(v) 'आधार' का पर्यायवाची शब्द है

(क) धारदार (ख) स्थिर

(ग) बुनियाद (घ) जड़

7. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2012]

मान लूँ मैं हार कैसे?
रोकना मुझको असंभव रूप की मदिरा पिलाकर,
ईंट-पत्थर और काँटे राह में मेरी बिछाकर,
रुक नहीं सकता कदम गर उठ गया जलती चिता पर,
उठ गया तो क्या चिता, शव उठ चलेगा साथ पथ पर,
सौंप दूँ दुर्भाग्य को अपना मनुज-अधिकार कैसे?
आज अंतर-प्यास मेरी रस नहीं, विष चाहती है,
दग्ध प्राणों में प्रलय की गूँज भरना चाहती है,
चाहता मन सिंधु-नभ-थल-गिरि-अतल को जीत लेना,
ज़िन्दगी मेरी कहीं पर भी न रुकना चाहती है,
मैं मरुस्थल का पथिक हूँ, सींच दूँ रसधार कैसे?

(i) लक्ष्य की ओर बढ़ते पथिक के मार्ग में बाधक नहीं है

(क) रूप की मदिरा।

(ख) मार्ग की बाधाएँ।

(ग) दुर्भाग्य का अभिशाप।

(घ) जलती चिता।

(ii) अपराजेय पथिक हार न मानता हुआ चाहता है

(क) मदिरा द्वारा अन्तर की प्यास बुझाना।

(ख) उत्साही जीवन में विनाश की हुंकार भरना।

(ग) मार्ग की बाधाओं को हटाना।

(घ) विजय के मार्ग को प्रशस्त करना।

(iii) पथिक किस पर विजय प्राप्त करना चाहता है?

(क) पथ की बाधाओं पर।

(ख) मरुभूमि जैसे रसहीन जीवन पर।

(ग) सागर, आकाश, भूमि और पर्वत पर।

(घ) गतिहीन जीवन पर।

(iv) 'मैं मरुस्थल का पथिक हूँ, पंक्ति का आशय है

(क) मैं रेतीले मैदान का बटोही हूँ।

(ख) मैं युद्धस्थली का योद्धा हूँ।

(ग) मैं कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलने का आदी हूँ।

(घ) मैं जीवन की दुर्गम और नीरस राह का राहगीर हूँ।

(v) 'मनुज-अधिकार' में समास है

(क) द्विगु (ख) कर्मधारय

(ग) तत्पुरुष (घ) बहुव्रीहि

8. नीचे लिखे पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2012]

धूप की तपन ख़ुद सहने
छाँव सबको देने का प्रण
पेड़ों ने लिया,
धूप ने बदले में
फूलों को रंगीन
पेड़ों को हरा-भरा कर दिया।
हजारों मील चलकर
गईं थीं जो नदियाँ

और मीठा पानी खारी समंदर को दिया
बदल गया इतना मन समंदर का
रख लिया खारीपन पास अपने
और बादलों के हाथ भेजा मीठे जल का तोहफ़ा
नदियों को फिर जिसने भर दिया।

(i) पेंड़ों की प्रतिज्ञा है
  (क) सबको फल देना
  (ख) धूप की तपन लेना
  (ग) स्वयं कष्ट उठाकर सुख देना
  (घ) संसार का हित करना

(ii) बदले में धूप पेंड़ों को देती है
  (क) शीतल छाया
  (ख) फूलों की सुगंध
  (ग) पत्तों की हरियाली
  (घ) शाखाओं की मज़बूती

(iii) नदियाँ हज़ारों मील किसलिए चलती है?
  (क) प्राणियों की प्यास बुझाने के लिए।
  (ख) भूमि को उर्वर बनाने के लिए।
  (ग) सागर को मीठा जल देने के लिए।
  (घ) मरुस्थल को सरस बनाने के लिए।

(iv) सागर नदियों का ऋण चुकाता है
  (क) उनके मीठे पानी को स्वीकार कर।
  (ख) उनको खारी जल का उपहार देकर।
  (ग) मेघों के माध्यम से मीठा जल भेजकर।
  (घ) नदियों की बाढ़ का कारण बनकर।

(v) कविता का संदेश है
  (क) जैसे के साथ तैसा व्यवहार।
  (ख) अपकारी के प्रति उपकार का भाव।
  (ग) उपकारी के प्रति गहन कृतज्ञता।
  (घ) कृतघ्नता जीवन का अभिशाप।

9. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए-

[1 × 5 = 5] [CBSE 2013]

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार पत्रों में ठगी, चोरी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। ऐसा लगता है देश में कोई ईमानदार आदमी रह ही नहीं गया है हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता; जो भी कुछ करेगा, उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिये जायेंगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है। गुणी कम या बिलकुल ही नहीं यह चिन्ता का विषय है। तिलक और गांधी के सपनों का भारतवर्ष क्या यही है? विवेकानन्द और रामतीर्थ का आध्यात्मिक ऊँचाई वाला भारतवर्ष कहाँ है? रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान, सुसंस्कृत और सभ्य भारतवर्ष पतन के किस गहन गर्त में जा गिरा है? आर्य और द्रविड़, हिन्दू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलनभूमि 'महामानव समुद्र; क्या सूख ही गया है?

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह श्रमजीवी पिस रहे है। और झूठ और फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भूरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है। किन्तु ऐसी दशा से हमारा उद्धार जीवन-मूल्यों में आस्था रखने से ही होगा। ऐसी स्थिति में हताशा हो जाना ठीक नहीं है।

(i) 'मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है' वाक्य का आश्य है-
  (क) लेखक के मन में पछतावा होता है।
  (ख) लेखक का मन दुखी हो जाता है।
  (ग) लेखक को अपराध भाव की अनुभूति होती है।
  (घ) लेखक का हृदय देश की दुर्दशा से चिन्तित हो उठता है।

(ii) कौन-सी स्थिति चिन्ता का विषय है?
  (क) व्यक्ति के गुणों की उपेक्षा और दोषों पर अधिक ध्यान
  (ख) व्यक्ति का कर्मशीलता के प्रति उपेक्षा का भाव
  (ग) व्यक्ति की ईमानदाारी की उपेक्षा
  (घ) निठल्ले लोगों की सुखमयता

(iii) 'महामानव समुद्र; क्या सूख ही गया' का अभिप्राय है-
  (क) विशाल सागर जलहीन हो गया
  (ख) समुद्र का विस्तार सीमित हो गया
  (ग) आदर्शों का जलनिधि रत्नहीन हो गया
  (घ) भारत का जलनिधि रत्नहीन हो गया

(iv) इस उथल-पुथल में देशवासियों के लिए संदेश है-
  (क) ईमानदारी और मेहनत से जीविका चलाना
  (ख) झूठ और फरेब से नफरत करना
  (ग) जीवन-मूल्यों में आस्था रखना
  (घ) देश की समृद्धि के लिए कार्य करना

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–

(क) समाज में व्यास अनैतिकता

(ख) महान् महर्षियों का देश भारत

(ग) जीवन-मूल्यों में आस्था

(घ) निराशाजनक स्थित और हमारा देश

10. निम्नलिखित गाद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए [1 × 5 = 5] [CBSE 2013]

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया। उसकी दृष्टि में मनुष्य के भीतर जो आन्तरिक तत्व भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन और बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना, बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष ने उन्हें सदा संयम के बन्धन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है।

इस देश के कोटि-कोटि दरिद्र जनों की हीन अवस्था को सुधारने के लिए अनेक कायदे-कानून बनाए गए। जिन लोगों को इन्हें कार्यन्वित करने का काम सौंपा गया वे अपने कर्त्तव्यों को भूलकर अपनी सुख-सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगे। वे लक्ष्य की बात भूल गए और लोभ, मोह जैसे विकारों में फँसकर रह गए। आदर्श उनके लिए मज़ाक का विषय बन गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है- लोग लोभ और मोह में पड़कर अनर्थ कर रहे हैं। इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं। अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

(i) लेखक के मतानुसार निकृष्ट आचरण स्वरूप है–

(क) व्यक्ति का दुश्चरित्र होना और आदर्शों से पतन

(ख) स्वार्थ हेतु दूसरों के कार्यों में बाधा

(ग) मन और बुद्धि पर लोभ-मोह आदि का नियंत्रण

(घ) कानून के उल्लंघन द्वारा सामाजिक अव्यवस्था

(ii) लोभ-मोह आदि विकारों के नियंत्रण साधन है–

(क) धर्म (ख) कानून

(ग) संयम (घ) सत्संगति

(iii) करोड़ों गरीबों की दशा सुधारने के प्रयास सफल नहीं हुए क्योंकि लागू करने वाले–

(क) स्वार्थवश अपना कर्त्तव्य भूल गए

(ख) काम पूरा न कर सके

(ग) सफलता के प्रति शंकालु हो गए

(घ) पर्याप्त धन न होने से असफल हो गए

(iv) आदर्श एवं संयम को दकियानूसी मानने का दुष्परिणाम है–

(क) देश में फैली अराजकता

(ख) समाज में व्याप्त नैतिकता

(ग) लोभ और मोह से हो रहे अनर्थ

(घ) भ्रष्ट साधनों से अर्जित धन

(v) 'दकियानूसी' का पर्यावाची है–

(क) भाग्यवादी (ख) रूढ़िवादी

(ग) साम्यवादी (घ) विस्तारवादी

11. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिएः [1 × 5 = 5] [CBSE 2013]

बिन बैसाखी अपनी शर्तों पर, मैं मदमस्त चला।
सब्ज़बाग़ को दिखा-दिखा
कंचन और कामिनी ने भी
अपनी छटा दिखाई
सतरंगे जग के साँचे में, मैं न कभी ढला।
चिनगारी पर चलते-चलते
रुका-झुका ना पल-छिन।
गिरे हुओं को रहा उठाता
गले लगाता अनुदिन।
हालाहल पीते-पीते ही मैं जीवन-भर चला।।
कितने बढ़े-चढ़े द्रुत चलकर
शैलशिखर शृंगों पर।
कितने अपनी लाश लिए
फिरते अपने कंधों पर।
सबकी अपनी अलग नियति है, है जीने की कला।।
आँधी से जूझा करना ही
बस आता है मुझको।
पीड़ाओं के संग-संग जीना
भाता है बस मुझको।
मैं तटस्थ, जो भी जग समझे कह ले बुरा-भला।।

(i) सतरंगी संसार कवि को मोहित न कर सका, क्योंकि–

(क) सांसारिकता के प्रति उसका लगाव नहीं है

(ख) मोहकता उसको मोहने में समर्थ नहीं है

(ग) उसको केवल अपने सिद्धान्तों से ही प्यार है

(घ) वह सांसारिक मोह को तुच्छ समझता है

(ii) कवि को जीवन में क्या रास नहीं आया?

(क) कष्टों से भरे मार्ग पर चलना

(ख) दीनों-दलितों का उद्धार करना

(ग) जीवन के सुखमय क्षणों को भोगना

(घ) आजीवन वेदनाओं के विष का पान करना

(iii) कवि का विश्वास है कि हरेक का भाग्य अलग-अलग होता है, इसलिए संसार में-

(क) कोई धनिक है तो कोई धनहीन

(ख) कोई उन्नति करता है तो कोई निराश जीवन जीता है

(ग) कोई जीवन में सुख भोगता है तो कोई दुख

(घ) कोई सम्पन्न होकर भी सुखों से वंचित रहता है

(iv) कवि ने जीवन बिताया है-

(क) कष्टों से जूझ कर और पीड़ाओं को चूमकर

(ख) दुखियों को बचाकर और भूखों को भोजन देकर

(ग) डूबते को बचाकर और भूखों को भोजन देकर

(घ) क्रान्ति का बिगुल बजाकर और मातृभूमि को जीवन देकर

(v) 'कितने बढ़े-चढ़े द्रुज चलकर शैल-शिखर शृंगों पर' अलंकार है-

(क) उपमा

(ख) अनुप्रास

(ग) रूपक

(घ) यमक

12. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- [1 × 5 = 5] [CBSE 2013]

जब कभी मछेरे को फेंका हुआ
फैला जाल
समेटते हुए देखता हूँ
तो अपना सिमटता हुआ
'स्व' याद हो आता है-
जो कभी समाज, गाँव और
परिवार के वृहत्तर परिधि में
समाहित था
'सर्व' की परिभाषा बनकर,
और अब केन्द्रित हो
गया हूँ मात्र बिन्दु में।
जब कभी अनेक फूलों पर,
बैठ, पराग को समेटती
मधुमक्खियों को देखता हूँ
तो मुझे अपने पूर्वजों की
याद हो आती है,
जो कभी फूलों को रंग, जाति, वर्ग
अथवा कबीलों में नहीं बाँटते थे
और समझते रहे थे कि
देश एक बाग़ है
और मधु-मनुष्यता
जिससे जीने की अपेक्षा होती है।
किन्तु अब
बाग़ और मनुष्यता
शिलालेखों में जकड़ गई है
मात्र संग्रहालय की जड़ वस्तुएँ

(i) कविता में 'स्व' शब्द का आशय है-

(क) धन, सम्पत्ति, दौलत

(ख) अपना, अपनापन, लगाव

(ग) कल्याण, हितभावना, भलाई

(घ) प्रशासन, शासन, अनुशासन

(ii) किसी समय में कवि की 'स्व' की सीमा थी-

(क) अपने माता-पिता तक

(ख) अपनी पत्नी और बच्चों तक

(ग) पूरे समाज और गाँव तक

(घ) केवल घनिष्ठ मित्रों तक

(iii) पुराने समय में कवि के पूर्वज विश्वास करते थे-

(क) रंग के आधार पर देशवासियों के विभाजन में

(ख) जाति के आधार पर देशवासियों के वर्गीकरण में

(ग) भाषा एवं धर्म के आधार पर देश के बँटवारे में

(घ) भिन्न वर्गों एवं जातियों की एकता में

(iv) देश को एक बाग़ माना गया है क्योंकि यहाँ विविध प्रकार के-

(क) फूल होते हैं (ख) तितलियाँ हैं

(ग) लोग रहते हैं (घ) पशु-पक्षी रहते हैं

(v) काव्यांश का संदेश है-

(क) मनुष्यता की परिभाषा बदल गई है

(ख) मनुष्यता जड़ वस्तु बनकर रह गई है

(ग) मनुष्यता का स्वरूप संकीर्ण हो गया है

(घ) मनुष्यता संगठन में नहीं विघटन में देखी जाती है

13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखो–

[1 × 5 = 5] [CBSE 2015]

एक जमाना था जब मुहल्लेदारी पारिवारिक आत्मीयता से भरी होती थी। सब मिल-जुलकर रहते थे। हारी-बीमारी, खुशी-गम सब में लोग एक-दूसरे के साथ थे। किसी का किसी से कुछ छिपा नहीं था। आज के लोगों को शायद लगे कि लोगों की अपनी 'प्राइवेसी' क्या रही होगी, लेकिन इस 'प्राइवेसी' के नाम पर ही तो हम एक-दूसरे से कटते रहे और कटते-कटते ऐसे अलग हुए कि अकेले पड़ गए। पहले अलग चूल्हे-चौके हुए, फिर अलग मकान लेकर लोग रहने लगे, निजी स्वतंत्रता को अपनी नई परिभाषा देकर यह एकाकीपन हमने स्वयं अपनाया है। मुहल्ले में आपस में चाहे जितनी चखचख हो, यह थोड़े ही संभव था कि बाहर का कोई आ कर किसी को कड़वी बात कह जाए! पूरा मोहल्ला टिड्डी-दल की तरह उमड़ पड़ता था।

देखते-देखते जमाना हवा हो गया। मुहल्लेदारी टूटने लगी, आबादी बढ़ी, महँगाई बढ़ी पर सबसे ज्यादा जो चीज दुर्लभ हो गई वह थी आपसी लगाव, अपनापन। लोगों की आँखों का शील मर गया।

देखते-देखते कैसा रंग बदला है! लोग अपने-आप में सिमट कर पैसे के पीछे भागे जा रहे हैं। सारे नाते-रिश्तों को उन्होंने ताक पर रख दिया है, तब फिर पड़ोसी से उन्हें क्या लेना-देना है। यह नीरस महानगरीय सभ्यता महानगरों से चलकर कस्बों और देहातों तक को अपनी चपेट में ले चुकी है। मकानों में रहने वाले एक-दूसरे को नहीं जानते। इन जगहों में आदमी का अस्तित्व समाप्त हो गया है। यदि आपको फ्लैट नंबर मालूम नहीं है तो उसी बिल्डिंग में जा कर भी वांछित व्यक्ति को नहीं ढूँढ पाएँगे। ऐसी जगहों में किसी प्रकार के सम्बंधों की अपेक्षा ही कहाँ की जा सकती है?

(i) 'प्राइवेसी' से तात्पर्य है

(क) निजता (ख) आत्मीयता

(ग) मेल-जोल (घ) भाईचारा

(ii) मुहल्लेदारी के बारे में क्या सच नहीं है?

(क) आपस में मिल-जुलकर रहना

(ख) दुख-सुख में साथ देना

(ग) अपनी बात किसी से गुप्त न रखना

(घ) आस-पड़ोस का हस्तक्षेप पसंद न करना

(iii) आज के व्यक्ति को 'प्राइवेसी' के नाम पर प्राप्त हुआ है

(क) अलगाव और अकेलापन

(ख) अपने में ही सीमित होने का आनंद

(ग) संयुक्त परिवार की समस्याओं से मुक्ति

(घ) मुहल्ले के झंझटों से छुटकारा

(iv) आज बहुत कठिनाई से प्राप्त होने वाली वस्तु है

(क) संबंधों की महत्ता (ख) धन-सम्पत्ति

(ग) आत्मीयता (घ) वैचारिक स्वतंत्रता

(iv) 'ताक पर रखना' का अर्थ है

(क) उपेक्षा करना (ख) आशा रखना

(ग) छोड़ देना (घ) निन्दा करना

14. गद्यांश को पढ़कर पूछे गए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखो– [1 × 5 = 5] [CBSE 2015]

गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों को मानव-मात्र की समानता और स्वतंत्रता के प्रति जागरूक बनाने का प्रयत्न किया। इसी के साथ उन्होंने भारतीयों के नैतिक पक्ष को जगाने और सुसंस्कृत बनाने के प्रयत्न भी किए। गांधी जी ने ऐसा क्यों किया? इसलिए कि वे मानव-मानव के बीच काले-गोरे, या ऊँच-नीच का भेद ही मिटाना पर्याप्त नहीं समझते थे, वरन् उनके बीच एक मानवीय स्वाभाविक स्नेह और हार्दिक सहयोग का संबंध भी स्थापित करना चाहते थे। इसके बाद जब वे भारत आए, तब उन्होंने इस प्रयोग को एक बड़ा और व्यापक रूप दिया। विदेशी शासन के अन्याय-अनीति के विरोध में उन्होंने जितना बड़ा सामूहिक प्रतिरोध संगठित किया, उसकी मिसाल संसार के इतिहास में अन्यत्र नहीं मिलती। पर इसमें उन्होंने सबसे बड़ा ध्यान इस बात का रखा कि इस प्रतिरोध में कहीं भी कटुता, प्रतिशोध की भावना अथवा कोई भी ऐसी अनैतिक बात न हो जिसके लिए विश्व-मंच पर भारत का माथा नीचा हो। ऐसा गांधी जी ने इसलिए किया क्योंकि वे मानते थे कि बंधुत्व, मैत्री, सद्भावना, स्नेह-सौहार्द्र आदि गुण मानवता-रूपी टहनी के ऐसे पुष्प हैं जो सर्वदा सुगन्धित रहते हैं।

(i) अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों के पीड़ित होने का कारण था

(क) निर्धनता-धनिकता पर आधारित भेदभाव

(ख) रंग-भेद और सामाजिक स्तर से संबंधित भेदभाव

(ग) धार्मिक भिन्नता पर आश्रित भेदभाव

(घ) विदेशी होने से उत्पन्न मन-मुटाव

(ii) गांधी जी अफ्रीकावासियों और भारतीय प्रवासियों के मध्य स्थापित करना चाहते थे

(क) सहज प्रेम एवं सहयोग

(ख) पारिवारिक अपनत्व की भावना

(ग) अहिंसा एवं सत्य के प्रति लगाव

(घ) विश्वबन्धुत्व का सद्भाव

(iii) भारत में गांधी जी का विदेशी शासन का प्रतिरोधी आधारित था

(क) संगठन की भावना पर

(ख) नैतिक मान्यताओं पर

(ग) राष्ट्रीयता के विचारों पर

(घ) शान्ति की सद्भावना पर

(iv) बंधुत्व, मैत्री आदि गुणों की पुष्पों के साथ तुलना आधारित है

(क) उनकी सुन्दरता पर

(ख) उनकी कोमलता पर

(ग) उनके अपनत्व पर

(घ) उनके कायिक प्रभाव पर

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा

(क) अफ्रीका में गांधी जी

(ख) प्रवासी भारतीय और गांधी जी

(ग) गांधी जी की नैतिकता

(घ) गांधी जी और विदेशी शासन

15. काव्यांश को पढ़कर पूछे गए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखो– [1 × 5 = 5] [CBSE 2015]

शीश पर मंगल-कलश रख
भूलकर जन के सभी दुख
चाहते हो तो मना लो जन्म-दिन भूखे वतन का।
जो उदासी है हृदय पर,
वह उभर आती समय पर,
पेट की रोटी जुड़ाओं,
रेशमी झंडा उड़ाओ,
ध्यान तो रक्खो मगर उस अधफटे नंगे बदन का।
तन कहीं पर, मन कहीं पर,
धन कहीं, निर्धन कहीं पर,
फूल की ऐसी विदाई,
शूल को आती रुलाई
आँधियों के साथ जैसे हो रहा सौदा चमन का।
आग ठंगी हो, गरम हो,
तोड़ देती है, मरम को,
क्रान्ति है आनी किसी दिन,
आदमी घड़ियाँ रहा गिन,
राख कर देता सभी कुछ अधजला दीपक भवन का
जन्म-दिन भूखे वतन का।

(i) देश की स्वतंत्रता के मांगलिक उत्सव शोभाहीन होते हैं यदि

(क) देश की जनता दुखी और भूखी है

(ख) राष्ट्र का जनसमुदाय निर्धन है

(ग) मुल्क के अधिकांश लोग परेशान हैं

(घ) पूरे राज्य का भविष्य अंधकारमय है

(ii) देश के शासकों को कवि का संबोधन है

(क) भूखे को भोजन और नंगे को वस्त्र देने के लिए

(ख) लोगों की उदासी और कष्ट-निवारण के लिए

(ग) समय की गति और परिस्थितियों की विषमता समझने के लिए

(घ) राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने के लिए

(iii) 'आँधियों के साथ जैसे रहा सौदा चमन का' कथन का आशय है

(क) आँधियों के झटकों को झेलना उपवन की विवशता हो गई है

(ख) देश की निरीह जनता कुशासन को सहने की अभ्यस्त हो गई है

(ग) देश की जनता दुखों और आपदाओं से समझौता कर रही है

(घ) देश का जनसमुदाय कठिनाइयों और कष्टों को सह रहा है

(iv) 'आग ठंडी हो, गरम हो' का प्रतीकार्थ है

(क) क्रान्ति शिथिल हो या उग्र

(ख) अक्रोश धीमा हो या तीव्र

(ग) क्रोध मन्द हो या घातक

(घ) हिंसा सीमित हो या असीमित

(v) 'अधजला दीपक भवन का' कथन का आशय है

(क) क्रोधी व्यक्ति (ख) निर्धन मुनष्य

(ग) भूखा इन्सान (घ) व्यथित प्राणी

16. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखो– [1 × 5 = 5] [CBSE 2015]

बहती रहने दो मेरी धमनियों में
जन्मदात्री मिट्टी की गंध,
मानवीय संवेदनाओं की पावनी गंगा,
सदा-सदा को वांछित रह सकने वाले
पसीने की खारी यमुना।
शपथ खाने दो मुझे
केवल उस मिट्टी की
जो मेरे प्राणों का आदि है,
मध्य है,
अन्त है।

सिर झुकाओ मेरा
केवल उस स्वतंत्र वायु के सम्मुख
जो विश्व का गरल पीकर भी
बहता है
पवित्र करने को कण-कण
क्योंकि
मैं जी सकता हूँ
केवल उस मिट्टी के लिए,
केवल इस वायु के लिए
क्योंकि
मैं मात्र साँस लेती
खाल होना नहीं चाहता।

(i) 'जन्मदात्री मिट्टी की गंध' पंक्ति में कवि की अभिव्यक्त इच्छा का स्वरूप है
  (क) मातृभूमि के प्रति गहन अनुराग
  (ख) वर्षा से भीगी मिट्टी की गंध
  (ग) अन्न उपजाने वाली मिट्टी की महक
  (घ) जन्म देने वाली माँ के प्यार की लालसा

(ii) 'मानवीय संवेदनाओं की पावनी गंगा' से कवि का आशय है
  (क) देशवासियों के सुख-दुख की सहज अनुभूति
  (ख) आपद्ग्रस्त देशवासियों के प्रति सहानुभूति
  (ग) पीड़ित मानवता के उद्धार की अभिलाषा
  (घ) मानवता के कल्याण हेतु गहन प्रेरणा

(iii) कवि शपथ लेना चाहता है देश की उस मिट्टी की जो उसके
  (क) जीवन को बनाने वाली है
  (ख) जीवन की सर्वस्व है
  (ग) रग-रग में प्याप्त है
  (घ) प्राणों का आधार है

(iv) 'मात्र साँस लेती खाल' का आशय है
  (क) पुरुषार्थहीन जीवन (ख) निष्प्राण जीवन
  (ग) निरूद्देश्य जीवन (घ) दिशाहीन जीवन

(v) 'पवित्र करने को कण-कण' में अलंकार है
  (क) यमक (ख) अनुप्रास
  (ग) श्लेष (घ) उपमा

17. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिएः

[1 × 5 = 5] [CBSE 2016]

सड़क मार्ग से हम आगे बढ़े और सरयू पुल पर ही बस्ती जिले की सीमा में प्रवेश किया। हमारा पहला पड़ाव कुशीनगर था, मगर हम कुछ देर मगहर में रुके। कबीर की निर्वाण भूमि, मगर फिरका-परस्तों ने उनकी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया है और उन्हें मंदिर और मकबरे में बाँट दिया है। मठ के महंत ने हमारे भोजन की व्यवस्था की और आसपास के स्कूल और कॉलेज की लड़कियों से मुलाकात भी कराई। उनसे बातचीत से हमने जाना कि अब स्थितियाँ बदली हैं, लड़कियों की पढ़ाई और नौकरी पर ध्यान दिया जाता है। मगर सामाजिकता का लोप-सा होने लगा है, अब ब्याह और मरनी-हरनी में भी एका नजर नहीं आता। गीतों की बात चली तो वहाँ मौजूद पचास-साठ लड़कियों में किसी को भी लोकगीत याद नहीं थे।

वहाँ से हम कुशीनगर पहुँचे। रात घिरने लगी थी, मगर हम पंडरी गाँव के लोगों से मिले। कुशीनगर से लगभग बीस किलोमीटर होने पर भी विकास का एक कण भी यहाँ नहीं पहुँचा था। मगर यहाँ के युवा सजग हैं, वे स्वप्रयास से स्कूल भी चलाते हैं। रात को हम बौद्ध मठ में ठहरे। यह मठ किसी शानदार विश्रामगृह से कम नहीं था। सुबह हम केसरिया गाँव गए। सामाजिक और पारिवारिक विघटन के इस दौर में एकमात्र संयुक्त परिवार मिला। हमने उनसे बात की। उस परिवार की सबसे बुजुर्ग महिला के पास तीज-त्योहार, गीत-गवनई की अनुपम थाती थी, मगर उनसे सीखने वाला कोई नहीं था। नई पीढ़ी लोक से विरत थी।

(क) लेखक मगहर में रुकने के बाद सर्वप्रथम कहाँ रुकेः
  (i) बस्ती में
  (ii) कुशीनगर में
  (iii) कबीर की निर्वाण भूमि में
  (iv) पंडरी गाँव में

(ख) कबीर की किस मेहनत पर पानी फिर गया?
  (i) सांप्रदायिक भावना से ऊपर उठाने का प्रयास
  (ii) हिंदू धर्म के प्रचार-प्रसार का प्रयास
  (iii) ब्याह और मरनी में एका करने का प्रयास
  (iv) कुशीनगर को बचाने का प्रयास

(ग) कौन सी विशेषता पंडरी गाँव के युवाओं की नहीं हैः
  (i) सचेत हैं
  (ii) शिक्षा के प्रति सजग हैं
  (iii) विकास से वंचित हैं
  (iv) खेती के लिए नए अनुसंधान करते हैं

(घ) "मगर सामाजिकता का लोप-सा होने लगा है," -का भाव हैः
  (i) सामाजिक सरोकारों का अभाव
  (ii) मरने-जीने पर एकता दिखती है

(iii) सांस्कृतिक ज्ञान का अभाव

(iv) सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार

(ङ) गद्यांश के लिए उचित शीर्षक है:

(i) मगहर से कुशीनगर

(ii) हमारी यात्रा हमारा देश

(iii) सरयू से बागमती तक

(iv) कबीर की अनुपम थाती

18. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए:

[1 × 5 = 5] [CBSE 2016]

उन दिनों में अपने छात्रों को आनुवंशिकी पढ़ाया करता था। उस समय मैं माँसपेशियों की कमजोरियों पर भी कुछ प्रयोग कर रहा था। इन प्रयोगों से ही 'एपिजेनेटिक्स' की विधा नकल कर आई थी। मैं मूल कोशिकाओं के प्रतिरूप तैयार करता था। ये मूल कोशिका की एकदम ठीक नकल होते थे। इन प्रतिरूपी कोशिकाओं को मैं एक-एक कर के अलग करता और इन्हें अलग-अलग वातावरण में रखता, अलग-अलग बर्तनों में।

इस संस्कार में रखी कोशिकाएँ हर 10-12 घंटे में विभाजित होती हैं, एक से दो हो जाती हैं। फिर अगले 10-12 घंटे में दो से चार, और फिर चार से आठ। इसी तरह दो हफ्ते में हजारों कोशिकाएँ तैयारी होतीं। फिर मैंने तीन भिन्न वातावरण में कोशिकाओं की भिन्न बस्तियाँ तैयार कीं। इन 'बस्तियों' का रासायनिक वातावरण एकदम अलग-अलग था। ठीक कुछ वैसे ही जैसे हर व्यक्ति के शरीर का वातावरण अलग होता है और एक ही शरीर के भीतर भी कई तरह के वातावरण होते हैं। अलग-अलग वातावरण में भी रखी गई इन कोशिकाओं का 'डी.एन.ए.' तो एकदम समान था। उनका पर्यावरण, उनका वातावरण भिन्न था। जल्दी ही इस प्रयोग के नतीजे सामने आने लगे।

एक बर्तन में उन्हीं कोशिकाओं ने हड्डी का रूप ले लिया था, एक में माँसपेशी का, और तीसरे बर्तन में कोशिकाओं ने वसा या चर्बी का रूप ले लिया। यह प्रयोग इस सवाल का जवाब ढूँढ़ने के लिए किया था कि कोशिकाओं की किस्मत कैसे तय होती है। सारी कोशिकाएँ एक ही मूल से निकली थीं। तो नए सिरे से सिद्ध हुआ कि कोशिकाओं की आनुवंशिकी नियति तय नहीं करती है। जवाब था; परिवेश। पर्यावरण। वातावरण।

(क) लेखक ने आनुवंशिकी के प्रयोग के लिए सर्वप्रथम क्या किया?

(i) मूल कोशिकाओं के प्रतिरूप तैयार कर भिन्न-भिन्न वातावरण में रखना

(ii) कोशिकाओं के संस्कार को समझने का प्रयास

(iii) अपने छात्रों को आनुवंशिकी का 'नियतिवाद' पढ़ाना

(iv) 40 साल पहले का इतिहास समझाने का प्रयास

(ख) संस्कार में रखी कोशिकाएँ हर 10-12 घंटे में विभाजित होकर कितनी हो जाती हैं?

(i) चौगुनी (ii) तिगुनी

(iii) दुगुनी (iv) हजार गुनी

(ग) लेखक ने किस प्रश्न का उत्तर समझने के लिए यह प्रयोग किया था?

(i) कौन-सी कोशिकाएँ हड्डी बनती हैं

(ii) कौन-सी कोशिकाएँ माँसपेशी का रूप लेती हैं

(iii) कोशिकाएँ वसा में कैसे बदलती हैं

(iv) कोशिकाओं की किस्मत कैसे निश्चित होती हैं

(घ) प्रयोग से क्या नतीजा निकला?

(i) कोशिकाओं की नियति तय करने वाला घटक है- परिवेश

(ii) कोशिकाओं की आनुवंशिकी (डी.एन.ए.) उनकी नियति तय करती है

(iii) मानव का स्वभाव कोशिकाओं की नियति तय करता है

(iv) सर्वोच्च सत्ता कोशिकाओं की नियति तय करती है

(ङ) अपने प्रयोग के दौरान लेखक तैयार करता था:

(i) मूल कोशिकाएँ

(ii) नई माँसपेशियाँ

(iii) मूल कोशिकाओं की नकलें

(iv) भिन्न वातावरण

19. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए:

[1 × 5 = 5] [CBSE 2016]

जब बचपन तुम्हारी गोद में
आने से कतराने लगे,
जब माँ की कोख से झाँकती ज़िंदगी
बाहर आने से घबराने लगे,
समझो कुछ गलत है।
जब तलवारें फूलों पर,
जोर आज़माने लगें
जब मासूम आँखों में
खौफ नज़र आने लगे
समझो कुछ गलत है।

जब किलकारियाँ सहम जाएँ
जब तोतली बोलियाँ, खामोश हो जाएँ, समझो ....
कुछ नहीं, बहुत कुछ गलत है
क्योंकि जोर से बारिश होनी चाहिए थी,
पूरी दुनिया में, हर जगह, टपकने चाहिए थे आँसू,
रोना चाहिए था ऊपर वाले को, आसमाँ से फूट-फूट कर
शर्म से झुकनी चाहिए थीं, इंसानी सभ्यता की गर्दनें
शोक का नहीं, सोच का वक्त है
मातम नहीं, सवालों का वक्त है
अगर इसके बाद भी सर उठा कर
खड़ा हो सकता है इंसान
समझो कि बहुत कुछ गलत है।

(क) माँ की कोख से झाँकती जिंदगी को घबराहट क्यों हो सकती है?
(i) उसे बाहर की असुरक्षा का आभास हो रहा है
(ii) उसे प्रदूषण का डर सता रहा है
(iii) उसे माँ ने बाहर की वास्तविकता बताई है
(iv) बाहर का मौसम अनुकूल नहीं है

(ख) जब तलवारें फूलों पर जोर आज़माने लगें, जब मासूम आँखों में खौफ नज़र आने लगे-का तात्पर्य है:
(i) जब मासूमों पर अत्याचार होने लगे
(ii) मानव अपने स्वार्थ के लिए उद्यान उजाड़ने लगे
(iii) जब मासूम बच्चों को भय के बिना रहना पड़े
(iv) जब मासूम आपस में लड़ने लगें

(ग) कवि के अनुसार बहुत गलत कब है?
(i) जब ओस तलवार की नोक पर गिरे
(ii) जब मासूम सहम जाएँ
(iii) जब बचपन समाप्ति की कगार पर हो
(iv) जब किलकारियों की गूँज खामोश हो जाए

(घ) कुछ भी गलत नहीं है, यदि:
(i) बचपन गोद में आने लगे
(ii) बच्चों पर अत्याचार होने लगे
(iii) बाल श्रम बढ़ जाए
(iv) भ्रूण हत्या होने लगे

(ङ) कवि के अनुसार अभी किसका वक्त है:
(i) सोच-विमर्श का (ii) दुख मानने का
(iii) उत्सव मनाने का (iv) मासूमों का

20. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए:

[1 × 5 = 5] [CBSE 2016]

थोड़े से बच्चों के लिए
एक बगीचा है
उनके पाँव दूब पर पड़ रहे हैं
असंख्य बच्चों के लिए
कीचड़, धूल और गंदगी से पटी
गलियाँ हैं जिनमें वे
अपना भविष्य बीन रहे हैं
एक मेज़ है
सिर्फ छह बच्चों के लिए
और उनके सामने
उतने ही अंडे और उतने ही सेब हैं
एक कटोरदान है सौ बच्चों के बीच
और हज़ारों बच्चे
एक हाथ में रखी आधी रोटी को
दूसरे से तोड़ रहे हैं
ईश्वर होता तो इतनी देर में उसकी देह कोढ़ में गलने लगती
सत्य होता तो वह अपनी न्यायाधीश की
कुर्सी से उतरकर जलती सलाखें आँखों में खुपस लेता,
सुंदर होता तो वह अपने चेहरे पर
तेज़ाब पोत अंधे कुएँ में कूद गया होता लेकिन .....
यहाँ दृश्य में
सिर्फ कुछ छपे हुए शब्द हैं
चापलूसी की नाँद में
लपलपाती जुबानें
और मस्तिष्क में काले गणित का
पैबंद है।

(क) दूब पर पड़ने वाले पाँव किन बच्चों के हो सकते हैं?
(i) जो अभी बहुत छोटे हैं
(ii) जो समृद्ध परिवार से हैं
(iii) जो शिक्षित परिवार से हैं
(iv) जो गरीब परिवार से हैं

(ख) 'वे अपना भविष्य बीन रहे हैं' का तात्पर्य है:

(i) कूड़ा बीन कर गरीब बच्चे अपना जीवन चलाते हैं

(ii) वे कूड़े में रहते हैं

(iii) असंख्य बच्चे सुख नहीं पाते

(iv) गलियों में बच्चे अपना भविष्य बनाते हैं

(ग) एक मेज़ है/ सिर्फ छह बच्चों के लिए/ और उनके सामने/ उतने ही अंडे और उतने ही सेब हैं/ एक कटोरदान है सौ बच्चों के बीच/ और हज़ारों बच्चे एक हाथ में रखी आधी रोटी को/ दूसरे से तोड़ रहे हैं

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि किस असमानता की बात कर रहा है?

(i) धार्मिक असमानता

(ii) सामाजिक असमानता

(iii) आर्थिक असमानता

(iv) शैक्षिक असमानता

(घ) कवि किस बात से निराश हो गया है?

(i) नैतिक मूल्य कहीं खो गए हैं

(ii) असीम सत्ता को लोग पहचानते नहीं

(iii) न्याय पाने के लिए लंबी प्रतीक्षा करनी पड़ती है

(iv) बच्चों की पोशाकों में भी बहुत अंतर है

(ङ) कवि हमें किस वास्तविकता से परिचित करवाता है:

(i) समाज में असमानताएँ हैं और ईश्वर को चिंता नहीं है

(ii) बातें सिर्फ कागज़ी हैं, चापलूसी ओर जोड़-तोड़ का धंधा फल-फूल रहा है

(iii) यदि सत्य होता तो सच में न्यायाधीश अपना काम करते

(iv) बहुत से बच्चे होटलों में काम करने को मजबूर हैं

21. गद्यांश को पढ़कर सही विकल्पों को चुनकर लिखो- [1 × 5 = 5] [CBSE 2017]

देश की आज़ादी को उनहत्तर वर्ष हो चुके हैं और आज जरूरत है अपने भीतर के तर्कप्रिय भारतीयों को जगाने की, पहले नागरिक और फिर उपभोक्ता बनने की। हमारा लोकतंत्र इसलिए बचा है कि हम सवाल उठाते रहे हैं। लेकिन वह बेहतर इसलिए नहीं बन पाया क्योंकि एक नागरिक के रूप में हम अपनी ज़िम्मेदारियों से भागते रहे हैं। किसी भी लोकतांत्रिक प्रणाली की सफलता जनता की जागरूकता पर ही निर्भर करती है।

एक बहुत बड़े संविधान विशेषज्ञ के अनुसार किसी मंत्री का सबसे प्राथमिक, सबसे पहला जो गुण होना चाहिए वह यह कि वह ईमानदार को और उसे भ्रष्ट नहीं बनाया जा सके। इतना ही जरूरी नहीं, बल्कि लोग देखें और समझें भी कि यह आदमी ईमानदार है। उन्हें उसकी ईमानदारी में विश्वास भी होना चाहिए। इसलिए कुल मिलाकर हमारे लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है। संविधान, शासन प्रणाली, दल, निर्वाचन ये सब लोकतंत्र के अनिवार्य अंग हैं। पर जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी, लोगों का आचार-विचार ठीक न रहेगा तब तक अच्छे से अच्छे संविधान और उत्तम राजनीतिक प्रणाली के बावजूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं कर सकता। स्पष्ट है कि लोकतंत्र की भावना को जगाने व सवंर्द्धित करने के लिए आधार प्रस्तुत करने की ज़िम्मेदारी राजनीतिक नहीं बल्कि सामाजिक है।

आजादी और लोकतंत्र के साथ जुड़े सपनों को साकार करना है, तो सबसे पहले जनता को स्वयं जाग्रत होना होगा। जब तक स्वयं जनता का नेतृत्व पैदा नहीं होता, तब तक कोई भी लोकतंत्र सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। सारी दुनिया में एक भी देश का उदाहरण ऐसा नहीं मिलेगा जिसका उत्थान केवल राज्य की शक्ति द्वारा हुआ हो। कोई भी राज्य बिना लोगों की शक्ति के आगे नहीं बढ़ सकता।

(क) लगभग 70 वर्ष की आजादी के बाद नागरिकों से लेखक की अपेक्षाएँ हैं?

(i) समझदार हों

(ii) प्रश्न करने वाले हों

(iii) जगी हुई युवा पीढ़ी के हों

(iv) मजबूत सरकार चाहने वाले हों

(ख) हमारे लोकतांत्रिक देश में अभाव है?

(i) सौहार्द का

(ii) सद्भावना का

(iii) जिम्मेदार नागरिकों का

(iv) एकमत पार्टी का

(ग) किसी मंत्री की विशेषता होनी चाहिए?

(i) देश की बागडोर सँभालने वाला

(ii) मिलनसार और समझदार

(iii) सुशिक्षित और धनवान

(iv) ईमानदार और विश्वसनीय

(घ) किसी भी लोकतंत्र की सफलता निर्भर करती है?

(i) लोगों में स्वयं ही नेतृत्व भावना हो

(ii) सत्ता पर पूरा विश्वास हो

(iii) देश और देशवासियों से प्यार हो

(iv) समाज-सुधारकों पर भरोसा हो

(ङ) लोकतन्त्र की भावना को जगाना-बढ़ाना दायित्व है?

(i) राजनीतिक

(ii) प्रशासनिक

(iii) सामाजिक

(iv) संवैधानिक

22. गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखो- [1 × 5 = 5] [CBSE 2017]

गीता के इस उपदेश की लोग प्रायः चर्चा करते हैं कि कर्म करें, फल की इच्छा न करें। यह कहना तो सरल है पर पालन उतना सरल नहीं। कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अन्तिम फल न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए उसका जो जीवन बीता वह संतोष या आनन्द में बीता उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना-बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न-कर्म के अनुसार, उसके एक-एक अंक की योजना होती है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वेद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला-लाकर रोगी को देता जाता है तब तक उसके चित्त में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ जो आनन्द का उन्मेष होता रहता है- यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोता हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दुख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्म-ग्लानि के उस कठोर दुख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच-सोच कर होता कि मैंने पूरा प्रयत्न नहीं किया।

कर्म में आनन्द अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनन्द भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फल-स्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और शमन करते हुए कर्म करने से चित्त में जो तुष्टि होती है वहीं लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है।

(क) कर्म करने वाले को फल न मिलने पर भी पछतावा नहीं होता क्योंकि :

(i) अंतिम फल पहुँच से दूर होता है

(ii) प्रत्यन न करने का भी पश्चाताप नहीं होता

(iii) वह आनन्दपूर्वक काम करता रहता है

(iv) उसका जीवन संतुष्ट रूप से बीतता है

(ख) घर के बीमार सदस्य का उदाहरण क्यों दिया गया है?

(i) पारिवारिक कष्ट बताने के लिए

(ii) नया उपचार बताने के लिए

(iii) शोक और दुख की अवस्था के लिए

(iv) सेवा के संतोष के लिए

(ग) 'कर्मण्य' किसे कहा गया है?

(i) जो काम करता है

(ii) जो दूसरों से काम करवाता है

(iii) जो काम करने में आनन्द पाता है।

(iv) जो उच्च और पवित्र कर्म करता है।

(घ) कर्मवीर का सुख किसे माना गया है?

(i) अत्याचार का दमन

(ii) कर्म करते रहना

(iii) कर्म करने से प्राप्त संतोष

(iv) फल के प्रति तिरस्कार भावना

(ङ) गीता के किस उपदेश की ओर संकेत है?

(i) कर्म करें तो फल मिलेगा

(ii) कर्म की बात करना सरल है

(iii) कर्म करने से संतोष होता है

(iv) कर्म करें फल की चिंता नहीं

23. काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखो- [1 × 5 = 5] [CBSE 2017]

सूख रहा है समय
इसके हिस्से की रेत
उड़ रही है आसमान में
सूख रहा है
आँगन में रखा पानी का गिलास
पँखुरी की साँस सूख रही है
जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी
उससे अब हाँफने की आवाज आती है
हर पौधा सूख रहा है
हर नदी इतिहास हो रही है
हर तालाब का सिमट रहा है कोना
यही एक मनुष्य का कंठ सूख रहा है

वह जेब से निकालता है पैसे और
खरीद रहा है बोतल बंद पानी
बाकी जीव क्या करेंगे अब
न उनके पास जेब है न बोतल बंद पानी।

(क) 'सूख रहा समय' कथन का आशय है :
- (i) गर्मी बढ़ रही है
- (ii) जीवन-मूल्य समाप्त हो रहे हैं
- (iii) फूल मुरझाने लगे हैं
- (iv) नदियाँ सूखने लगी हैं

(ख) हर नदी के इतिहास होने का तात्पर्य है-
- (i) नदियों के नाम इतिहास में लिखे जा रहे हैं
- (ii) नदियों का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है
- (iii) नदियों का इतिहास रोचक है
- (iv) लोगों को नदियों की जानकारी नहीं है

(ग) 'पखुँरी की साँस सूख रही है, जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी।'' ऐसी परिस्थिति किस कारण उत्पन्न हुई?
- (i) मौसम बदल रहे हैं
- (ii) अब पक्षी के पास सुंदर चोंच नहीं रही
- (iii) पतझड़ के कारण पत्तियाँ सूख रहीं थीं
- (iv) अब प्रकृति की ओर कोई ध्यान नहीं देता

(घ) कवि के दर्द का कारण है
- (i) पँखुरी की साँस सूख रही है
- (ii) पक्षी हाँफ रहा है
- (iii) मानव का कंठ सूख रहा है
- (iv) प्रकृति पर संकट मँडरा रहा है।

(ड.) 'बाकी जीव अब क्या करेंगे-कथन में व्यंग्य है?
- (i) जीव मनुष्य की सहायता नहीं कर सकते
- (ii) जीवों के पास अपने बचाव के कृत्रिम उपाय नहीं हैं
- (iii) जीव निराश और हताश बैठे हैं
- (iv) जीवों के बचने की कोई उम्मीद नहीं रही

24. काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखो- [1 × 5 = 5] [CBSE 2017]

नदी में नदी का अपना कुछ भी नहीं
जो कुछ है
सब पानी का है।
जैसे पोथियों में उनका अपना
कुछ नहीं होता
कुछ अक्षरों का होता है
कुछ ध्वनियों और शब्दों का
कुछ पेड़ों का कुछ धागों का
कुछ कवियों का
जैसे चूल्हे में चूल्हे का अपना
कुछ भी नहीं होता
न जलावन, न आँच, न राख
जैसे दीये में दीये का
न रुई, न उसकी बाती
न तेल न आग न दियली
वैसे ही नदी में नदी का
अपना कुछ नहीं होता।
नदी न कहीं आती है न जाती है
वह तो पृथ्वी के साथ
सतत पानी-पानी गाती है।
नदी और कुछ नहीं
पानी की कहानी है
जो बूँदों से सुन कर बादलों को सुनानी है।

(क) कवि ने ऐसा क्यों कहा कि नदी का अपना कुछ भी नहीं सब पानी का है?
- (i) नदी का अस्तित्व ही पानी से है
- (ii) पानी का महत्व नदी से ज्यादा है
- (iii) ये नदी का बड़प्पन
- (iv) नदी की सोच व्यापक है

(ख) पुस्तक निर्माण के संबंध में कौन-सा कथन सही नहीं है-
- (i) ध्वनियों और शब्दों का महत्व है
- (ii) पेड़ों और धागों का योगदान होता है
- (iii) कवियों की कलम उसे नाम देती है
- (iv) पुस्तकालय उसे सुरक्षा प्रदान करता है

(ग) कवि, पोथी, चूल्हे आदि उदाहरण क्यों दिए गए हैं?
- (i) इन सभी के बहुत से मददगार हैं
- (ii) हमारा अपना कुछ नहीं
- (iii) उन्होंने उदारता से अपनी बात कही है
- (iv) नदी की कमजोरी को दर्शाया है

(घ) नदी की स्थिरता की बात कौन-सी पंक्ति में कही गई है?
- (i) नदी में नदी का अपना कुछ भी नहीं
- (ii) वह तो पृथ्वी के साथ सतत पानी-पानी गाती है

(iii) नदी न कहीं आती है न जाती है

(iv) जो कुछ है सब पानी का है

(ङ) बूँदे बालों से क्या कहना चाहती होगी?

(i) सूखी नदी और प्यासी धरती की पुकार

(ii) भूखे-प्यासे बच्चों की कहानी

(iii) पानी की कहानी

(iv) नदी की खुशियों की कहानी

25. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखोः

[8 Marks] [CBSE 2018]

महात्मा गांधी ने कोई 12 साल पहले कहा था- मैं बुराई करने वाले को सजा देने का उपाय ढूँढ़ने लगूँ तो मेरा काम होगा उनसे प्यार करना और धैर्य तथा नम्रता के साथ उन्हें समझाकर सही रास्ते पर ले आना। इसलिए असहयोग या सत्याग्रह घृणा का गीत नहीं है। असहयोग का मतलब बुराई करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है।

आपके असहयोग का उद्देश्य बुराई को बढ़ावा देने से नहीं है। अगर दुनिया बुराई को बढ़ावा देना बंद कर दे तो बुराई अपने लिए आवश्यक पोषण के अभाव में अपने-आप मर जाए। अगर हम यह देखने की कोशिश करें कि आज समाज में जो बुराई है, उसके लिए खुद हम कितने जिम्मेदार हैं तो हम देखेंगे कि समाज से बुराई कितनी जल्दी दूर हो जाती है। लेकिन हम प्रेम की एक झूठी भावना में पड़कर इसे सहन करते हैं। मैं उस प्रेम की बात नहीं करता, जिसे पिता अपने गलत रास्ते पर चल रहे पुत्र पर मोहांध होकर बरसाता चला जाता है, उसकी पीठ थपथपाता है, और न मैं उस पुत्र की बात कर रहा हूँ जो झूठी पितृ-भक्ति के कारण अपने पिता के दोषों को सहन करता है। मैं उस प्रेम की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। मैं तो उस प्रेम की बात कर रहा हूँ, जो विवेकयुक्त है और जो बुद्धियुक्त है और जो एक भी गलती की ओर से आँख बंद नहीं करता। यह सुधारने वाला प्रेम है।

(क) गाँधीजी बुराई करने वालों को किस प्रकार सुधारना चाहते हैं। [2]

(ख) बुराई को कैसे समाप्त किया जा सकता है? [2]

(ग) 'प्रेम' के बारे में गांधीजी के विचार प्रकट करो। [2]

(घ) असहयोग से क्या तात्पर्य है? [1]

(ङ) उपर्युक्त शीर्षक [1]

26. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखो :

[7 Marks] [CBSE 2018]

तुम्हारी निश्चल आँखें
तारों-सी चमकती हैं मेरे अकेलेपन की रात के आकाश में
प्रेम पिता का दिखाई नहीं देता है
जरूर दिखाई देती होगी नसीहतें
नुकीले पत्थरों-सी
दुनिया भर के पिताओं की लंबी कतार में
पता नहीं कौन-सा कितना करोड़वाँ नंबर है मेरा
पर बच्चों के फूलों वाले बगीचे की दुनिया में
तुम अव्वल हो पहली कतार में मेरे लिए
मुझे माफ करना
मैं अपनी मूर्खता और प्रेम में समझता था
मेरी छाया के तले ही सुरक्षित रंग-बिरंगी दुनिया होगी तुम्हारी
अब तब तुम सचमुच की दुनिया में निकल गई हो
मैं खुश हूँ सोचकर
कि मेरी भाषा के अहाते से परे है तुम्हारी परछाई।

(क) 'बच्चे माता-पिता की उदासी में उजाला भर देते हैं' यह भाव किन पंक्तियों में आया है- [1]

(ख) प्रायः बच्चों को पिता की सीख कैसी लगती है? [1]

(ग) माता-पिता के लिए अपना बच्चा सर्वश्रेष्ठ क्यों होता है? [1]

(घ) कवि ने किस बात को अपनी मूर्खता माना है और क्यों? [2]

(ङ) भाव स्पष्ट करो - 'प्रेम पिता का दिखाई नहीं देता'। [2]

उत्तर माला

1. (i) (ख)
(ii) (क)
(iii) (क)
(iv) (घ)
(v) (क)

2. (i) (ख)
(ii) (ग)

(iiii) (ग)

(iv) (घ)

(v) (क)

3. (i) (ग)

(ii) (क)

(iiii) (ख)

(iv) (का)

(v) (घ)

4. (i) (घ)

(ii) (ख)

(iiii) (घ)

(iv) (ख)

(v) (क)

5. **(i)** (ग) नगर की सीमा से बाहर कुटिया में।

(ii) (ख) एक दीपक बुझा कर अन्य दीपक जलाना।

(iii) (ख) दूसरा दीपक जलाने का कारण।

(iv) (ख) प्रशासक की नैतिक जवाबदेही की।

(v) (घ) दुर।

6. **(i)** (ग) जीवन का कोई भी मार्ग बाधा रहित नहीं होता।

(ii) (ग) उन पर ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी है।

(iii) (क) असफलताएँ उसे पूर्णमूल्यांकन का अवसर देती हैं।

(iv) (घ) असफलता सफलता का आधार।

(v) (घ) बुनियाद

7. **(i)** (ग) दुर्भाग्य का अभिशाप।

(ii) (घ) विजय के मार्ग को प्रशासित करना।

(iii) (ग) सागर आकाश भूमि और पर्वत पर।

(iv) (घ) मैं जीवन की दुर्गम और नीरस राह का राहगीर हूँ।

(v) (घ) तत्पुरुष

8. **(i)** (ग) स्वयं कष्ट उठाकर सुख देना

(ii) (ग) पत्तों की हरियाली।

(iii) (ग) सागर को मीठा जल देने के लिए।

(iv) (ग) मेघों के माध्यम से मीठा जल भेजकर।

(v) (ग) उपकारी के प्रति गहन कृतज्ञता।

9. (i) (घ)

(ii) (क)

(iiii) (ग)

(iv) (ग)

(v) (ग)

10. (i) (ग)

(ii) (ग)

(iiii) (क)

(iv) (ग)

(v) (ख)

11. (i) (क)

(ii) (ग)

(iiii) (ग)

(iv) (क)

(v) (ग)

12. (i) (ग)

(ii) (ग)

(iiii) (घ)

(iv) (ग)

(v) (क)

13. (i) (क)

(ii) (घ)

(iii) (क)

(iv) (क)

(v) (क)

14. (i) (ख)

(ii) (क)

(iii) (क)

(iv) (ग)

(v) (ग)

15. (i) (क)

(ii) (ख)

(iii) (घ)

(iv) (ख)

(v) (घ)

16. (i) (क)

(ii) (घ)

(iii) (घ)

(iv) (क)

(v) (ख)

17. (क) (i) कुशीनगर

(ख) (i) सांप्रदायिक भेदभाव से ऊपर उठने का प्रयास

(ग) (iii)

(घ) (i)

(ङ) (iv) कबीर की अनुपम थाती

18. (क) (i)

(ख) (iv)

(ग) (iv)

(घ) (i)

(ङ) (iii)

19. (क) (i)

(ख) (i)

(ग) (ii)

(घ) (i)

(ङ) (i)

20. (क) (ii)

(ख) (iv)

(ग) (iii)

(घ) (i)

(ङ) (i)

21. (क) (iii)

(ख) (iii)

(ग) (iv)

(घ) (i)

(ड़) (iii)

22. (क) (iii)

(ख) (iv)

(ग) (iii)

(घ) (i)

(ड़) (iv)

23. (1) (ii)

(2) (ii)

(3) (iv)

(4) (iv)

(5) (ii)

24. (1) (i)

(2) कवियों की कलम उसे नाम देती है।

(3) (ii)

(4) (ii)

(5) (iii)

25. (क) गाँधीजी बुराई करने वालों को प्यार, धैर्य तथा नम्रता से सुधारना चाहते हैं।

(ख) बुराई को समाज से इस प्रकार समाप्त किया जा सकता है जैसे कि उसे समाज में बढ़ावा ही न मिले। साथ ही हम स्वयं को बुराई के प्रति आकर्षित न होने के लिए भी जिम्मेदारी लें।

(ग) गाँधीजी का प्रेम के विषय में कहना है कि प्रेम-विवेकयुक्त, बुद्धियुक्त होता है और जो एक भी गलती की ओर से आखँ नहीं बंद करता। यह सुधारने वाला प्रेम है।

(घ) असहयोग का मतलब बुराई करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है।

(ड.) बुराई से असहयोग।

26. (क) तुम्हारी निश्चल आँखें, तारों-सी चमकती हैं, मेरे अकेलेपन की रात के आकाश में।

(ख) बच्चों को पिता की सीख नुकीले पत्थरों की तरह लगती है।

(ग) क्योंकि वे अपने बच्चों से बहुत प्रेम करते हैं, इसलिए वे उन्हें अव्वल ही समझते हैं।

(घ) कवि यह समझता है कि उसकी छाया के तले ही बच्चे खुश तथा सुरक्षित रहेंगे, लेकिन यह सोच मूर्खतापूर्ण थी। क्योंकि बच्चों की भी अपनी एक अलग ही दुनिया होती है, जिसमें वे खुश रह सकते हैं।

(ड.) इस पंक्ति का तात्पर्य है कि बच्चों को हमेशा पिता की नसीहतें नुकीले पत्थरों जैसे ही दिखाई देती हैं, पर प्रेम दिखाई नहीं देता।

Smart Notes .....

खण्ड ख

व्याकरण

व्याकरण

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए। [1 × 4 = 4] [CBSE 2011]

(क) धीरे-धीरे धुंध की चादर छंटी।

(ख) वह अभिशप्त राजकुमारी की तरह बैठी थी।

(ग) आखिरकार मूर्तिकार को बुलावा गया।

(घ) मेहनत का फल मीठा होता है।

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

[1 × 4 = 4] [CBSE 2011]

(क) सभा में दिया गया मेरा भाषण अखबारों में छा गया। (मिश्र वाक्य बनाए)

(ख) मूर्तिकार मूर्ति बनाने के साथ पढ़ाता है। (सयुंक्त वाक्य में बदलिए)

(ग) वह ऐसे बोल रहा था जैसे कोई बड़ा अधिकारी हो। (वाक्य-भेद लिखिए)

(घ) सन्ध्या के पाँच बजे और वह घूमने चला गया। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

[1 × 4 = 4] [CBSE 2011]

(क) मैंने गत वर्ष खरीदी कार बेच दी। (कर्मवाच्य बनाइए)

(ख) इस समय उसके द्वारा गीता पढ़ी जा रही होगी। (कर्तृवाक्य में बदलिए)

(ग) किसी के द्वारा दरवाजा खटखटाया जा रहा है। (कर्तृवाक्य में बदलिए)

(घ) तुम टहल ही नहीं सकते हो। (भाववाक्य का रूप बनाइए)

4. निम्नलिखित काव्य-पक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों का नामोल्लेख कीजिए। [1 × 4 = 4] [CBSE 2011]

(क) बालकु बोलि बधौं नहि तोही

(ख) कोटि कुलिस सम वचन तुम्हारा

(ग) हमारे हरि हारिल की लकरी

(घ) ऊँचा होता ताड़ का वृक्ष मानो छूने अम्बर तल को

5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। [1 × 4 = 4] [CBSE 2011]

(क) हाय, यह क्या हो गया! (रेखांकित का पद परिचय लिखिए)

(ख) वह अन्यायी की भांति व्यवहार कर रहा था। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ग) फादर रिश्ता बनाकर तोड़ते नहीं हैं। (कर्मवाच्य में बदलिए)

(घ) प्रीति नदी में पाँउ न बोर्‌यौ (अलंकार का नाम लिखिए)

6. (i) जहाँ एक प्रधान उपवाक्य और एक या एकाधिक उपवाक्य योजकों द्वारा जुड़े हों, उसे कहते हैं [1 × 4 = 4] [CBSE 2012]

(क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य (घ) जटिल वाक्य

(ii) नीचे लिखे वाक्यों में मिश्र वाक्य छाँटिए:

(क) वे भारत आए और 73 वर्ष की जिंदगी जीकर स्वर्गवासी हो गए।

(ख) वे अक्सर माँ स्मृति में डूब जाते थे।

(ग) उनको जितनी चिंता हिंदी की थी उतनी और किसी की नहीं।

(घ) समय पर कार्य समाप्त करो या यहाँ से चले जाओ।

(iii) निम्नलिखित वाक्यों में सूक्त वाक्य का चयन कीजिए:

(क) मैंने जब उन्हें देखा तब वे बीमार थे।

(ख) उन्होंने कोलकाता से बी.ए. किया और इलाहाबाद से एम.ए.।

(ग) बाँहें खोलकर इस बार उन्होंने गले नहीं लगाया।

(घ) वे दिन याद आते हैं जब हम एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे थे।

(iv) निम्नांकित वाक्यों में से मिश्र वाक्य छाँटिए:

(क) हमारी गोष्ठियों में वे गंभीर बहस करते।

(ख) वे बेबाक राय और सुझाव देते थे।

(ग) उन्होंने कभी सोचा भी न था कि इतने आदमी एकत्रित होंगे।

(घ) दिल्ली आने पर वे मुझसे मिले।

7. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के पद-परिचय के लिए दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए: [1 × 4 = 4] [CBSE 2012]

(i) उसने उनके <u>अनुकरणीय</u> जीवन को नमन किया।

(क) विशेषण, परिमाणवाचक, पुल्लिग, एकवचन।

(ख) विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिग, एकवचन।

(ग) विशेषण, सार्वनामिक, पुल्लिग, एकवचन।

(घ) विशेषण, संख्यावाचक, पुल्लिग, एकवचन।

(ii) उन्होंने <u>श्रद्धांजलि</u> अर्पित की।

(क) संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिग, एकवचन।

(ख) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिग, एकवचन।

(ग) संज्ञा, भाववाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन।

(घ) संज्ञा, द्रव्यवाचक, पुल्लिग, एकवचन।

(iii) वे माँ की स्मृति में <u>अक्सर</u> डूब जाते।

(क) क्रिया-विशेषण, कालवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण।

(ख) क्रिया-विशेषण, स्थानवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण।

(ग) क्रिया-विशेषण, रीतिवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण।

(घ) क्रिया-विशेषण, परिमाणवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण।

(iv) <u>जैसा</u> करोगे वैसा भरोगे।

(क) सर्वनाम, प्रश्नवाचक, पुल्लिग, एकवचन।

(ख) सर्वनाम, सम्बन्धवाचक, पुल्लिग, एकवचन।

(ग) सर्वनाम, अनिश्चयवाचक, पुल्लिग, एकवचन।

(घ) सर्वनाम, निजवाचक, पुल्लिग, एकवचन।

8. (i) कर्मवाच्य कहते हैं [1 × 4 = 4] [CBSE 2012]

(क) जहाँ कर्ता प्रधान होता है।

(ख) जहाँ कर्म प्रधान होता है।

(ग) जहाँ भाव प्रधान होता है।

(घ) जहाँ अन्यपद प्रधान होता है।

(ii) निम्नलिखित में कर्तृवाच्य वाला वाक्य छाँटिए:

(क) उन्हें मुम्बई भेज दिया गया है।

(ख) किस आधार पर ऐसा कहा गया है?

(ग) आप इस प्रसंग का उल्लेख मत कीजिए।

(घ) उससे यहाँ बैठा नहीं जाएगा।

(iii) निम्नलिखित में से कर्मवाच्य वाला वाक्य छाँटिए:

(क) वह भारत की एक उल्लेखनीय विभूति है।

(ख) उस निबंध को पढ़िए और समझिए।

(ग) उसके विषय में जानकारी एकत्र की जाए।

(घ) वह पंखहीन है, उससे उड़ा नहीं जाएगा।

(iv) निम्नांकित में से भाववाच्य वाले वाक्य का चयन कीजिए:

(क) वह हमारा विरोध कर रहा है।

(ख) उससे यह काम समय पर पूरा न हो सकेगा।

(ग) अदालत में उसके नाम का उल्लेख किया गया।

(घ) आइए, बैठा जाए।

9. (i) निम्नलिखित वाक्यों में मिश्र वाक्य का चयन कीजिए: [1 × 4 = 4] [CBSE 2012]

(क) तुम देश का हित-चिंतन करो।

(ख) तुम जिस देश में रहते हो वह महान् है।

(ग) आस-पास देखिए और पता लगाइए।

(घ) यह इस कविता का केन्द्रीय भाव है।

(ii) 'नेताजी ने देश के लिए सब कुछ त्याग दिया' - वाक्य का कर्मवाच्य होगा

(क) नेताजी से देश के लिए सब कुछ त्यागा गया था।

(ख) नेताजी द्वारा देश के लिए सब कुछ का त्याग कर दिया था।

(ग) नेताजी द्वारा देश के लिए सब कुछ त्यागा गया।

(घ) नेताजी द्वारा देश के लिए सब कुछ त्याग दिया गया।

(iii) अरे! तुमने भी ऐसा कह दिया? रेखांकित का परिचय दीजिए।

(क) अव्यय, घृणासूचक

(ख) अव्यय, हर्षसूचक

(ग) अव्यय, शोकसूचक

(घ) अव्यय, विस्मयसूचक

(iv) 'मधुप गुन-गुनाकर कह जाता कौन कहानी यह अपनी।' मैं कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) यमक (घ) अनुप्रास

10. (i) 'मैया मैं तो चन्द्र-खिलौना लैहों' में अलंकार है [1 × 4 = 4] [CBSE 2012]

(क) उत्प्रेक्षा (ख) उपमा

(ग) रूपक (घ) श्लेष

(ii) प्रस्तुत काव्यांशों में 'यमक' अलंकार का उदाहरण छाँटिए:

(क) पहेली-सा जीवन है व्यस्त।

(ख) दुख हैं जीवन-तरु के फूल।

(ग) क्यों सहे संसार हाहाकार।

(घ) कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।

(iii) 'पीपर-पात सरिस मन डोला' में कौने-सा पद 'उपमान' है?

(क) पीपर-पात (ख) मन

(ग) सरिस (घ) डोला

(iv) देखूँ उसे मैं नित बार-बार,

मानों मिला मित्र मुझे पुराना।

काव्यांश में अलंकार है

(क) रूपक (ख) उपमा

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) श्लेष

11. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए- [1 × 5 = 5] [CBSE 2013]

(क) लखनऊ स्टेशन से गाड़ी छूट रही थी।

(ख) खीरे की पनियाती फाँकें बहुत स्वाष्टि थीं।

(ग) तुम्हें भागवत ध्यान से पढ़नी चाहिए।

(घ) बिस्मिल्ला खाँ इस मंगलध्वनि के नायक थे।

(ड.) अरे, तुम भी आ गए?

12. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2013]

(क) मैंने सुना है कि तुम अपनी कक्षा में प्रथम आए हो- वाक्य का प्रकार बताइए।

(ख) वह स्टेशन पहुँचा और हम वहाँ से चल दिए- यह किस प्रकार का वाक्य है?

(ग) उन्होंने जैसे ही शहनाई बजानी शुरू की, सब उसकी ध्वनि में मग्न हो गए- संयुक्त वाक्य में बदलिए।

(घ) मेरे पास एक किताब है जो बहुत रुचिकार है- सरल वाक्य में बदलिए।

(ड.) वह बहुत विनम्र है और सर्वत्र सम्मान प्राप्त करती है- मिश्र वाक्य में रूपान्तरित कीजिए।

13. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2013]

(क) मालिक झोली से सुर का फल निकालकर मेरी ओर उछालेगा-कर्मवाच्य में बदलिए।

(ख) घायल होने के कारण वह उड़ नहीं पाया- भाववाच्य में बदलिए।

(ग) मोहिनी क्षण भर के लिए भी शान्त नहीं बैठती है- भाववाच्य में बदलिए।

(घ) श्रद्धालु काशीवासियों द्वारा इस सभा का आयोजन किया जाता है- कर्तृवाच्य में बदलिए।

(ड.) उन्होंने दोनों भाइयों को पढ़ाया- कर्मवाच्य में बदलिए।

14. निम्नांकित काव्यांशों में प्रयुक्त अलंकारों के नामों का उल्लेख कीजिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2013]

(क) क्यों सहे संसार हाहाकार।

(ख) आँख लगती है तब आँख लगती ही नहीं।

(ग) नील गगन-सा शान्त हृदय था हो रहा।

(घ) नीरजनयन भावते जी के

(ड.) देखा यमुना का मृदुल हास।

15. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिएः [1 × 4 = 4] [CBSE 2014]

(क) हम स्वतंत्रता का स्वागत करते हैं।

(ख) मैं चाहता हूँ तुम विद्वान बनो।

(ग) वहाँ चार छात्र बैठे है।

(घ) तुम सदा सत्य बोलो।

16. निर्देशानुसार उत्तर दीजिएः [1 × 4 = 4] [CBSE 2014]

(क) उपदेशक मंच पर बैठकर उपदेश देने लगा।
(संयुक्त वाक्य में रूपान्तरण कीजिए)

(ख) सूर्य उदित हुआ और चारों ओर प्रकाश फैल गया।
(मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ग) जैसे ही वह धन-समन्न हुआ वैसे ही उसकी समस्यायें बढ़ने लगीं।
(वाक्य-भेद बताइए)

(घ) भविष्यवाणी है कि आज वर्षा होगी।
(वाक्य-भेद लिखिए)

17. निर्देशानुसार उत्तर दीजिएः [1 × 4 = 4] [CBSE 2014]

(क) आओ! कुछ बातें करें। (कर्मवाच्य में बदलिए)

(ख) हमने उसको अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया।
(कर्मवाच्य में बदलिए)

(ग) आपके द्वारा उनके विषय में क्या सोचा जाता है?
(कर्तृवाच्य में बदलिए)

(घ) आज निश्चिन्त होकर सोया जाएगा।
(वाक्य का भेद बताइए)

18. प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइएः [1 × 4 = 4] [CBSE 2014]

(क) सब स्वस्थ रहें सब सुख पाएँ।

(ख) भारत के भाग्य-गगन पर हाँ, फिर संकट-घन घहराता है।

(ग) तापस-बाला-सी गंगा निर्मल।

(घ) नेह सारसावन में मेह बरसावन में
सावन में झूलिबो सुहावनो लगत है।

19. निर्देशानुसार उत्तर दीजिएः [1 × 4 = 4] [CBSE 2014]

(क) हाय, यह क्या हो गया! (रेखांकित का पद परिचय लिखिए)

(ख) वह अन्यायी की भांति व्यवहार कर रहा था। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ग) फादर रिश्ता बनाकर तोड़ते नहीं है। (कर्मवाच्य में बदलिए)

(घ) प्रीति नदी में पाँउ न बोर्‌यौ (अलंकार का नाम लिखिए)

20. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए। [1 × 4 = 4] [CBSE 2015]

(क) वह भावुक व्यक्ति है।

(ख) द्वार पर कोई भिखारी खड़ा है।

(ग) रमेश यहाँ रहता है।

(घ) वे घर पहुँच चुके हैं।

21. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। [1 × 4 = 4] [CBSE 2015]

(क) विदुषी कक्षा में बैठकर अपनी सहेली रेखा की प्रतीक्षा करने लगी। (सयुंक्त वाक्य में बदलिए)

(ख) जैसे ही उसने औषधि ली, उसका रक्तचाप सामान्य हो गया। (वाक्य-भेद बनाइए)

(ग) प्रतिस्पर्धा में प्रथम आने वाल छात्र को बुलाओ। (मिश्र वाक्य बनाइए)

(घ) वह गाड़ी चलाने के साथ-साथ मोबाइल पर बात भी करता है। (संयुक्त वाक्य बनाइए)

22. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। [1 × 4 = 4] [CBSE 2015]

(क) माँ रो भी नहीं सकती। (भाववाच्य में बदलिए)

(ख) मंत्री जी ने राहत-सामग्री बँटवाई। (कर्मवाच्य में बदलिए)

(ग) उनके द्वारा कैप्टेन की देशभक्ति का सम्मान किया गया। (कर्तृवाक्य बनाइए)

(घ) चलिए, अब सोया जाय। (कर्तृवाक्य में बदलिए)

23. निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त अलंकार बताइएः [1 × 4 = 4] [CBSE 2015]

(क) जीवन में सुरंग सुधियाँ सुहावनी।

(ख) थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

(ग) माखन-सा मन ले गए कन्हैया।

(घ) प्रीति-नदी में पाँव न बोर्‌यौ।

24. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। [1 × 4 = 4] [CBSE 2015]

(क) नाव धीरे-धीरे बहने लगी। (रेखांकित का पद परिचय लिखिए)

(ख) शर्मिला नाश्ता करके नानी से मिलने चल दी। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(ग) बीमारी के बाद दादी चल भी नहीं पाती। (भाववाच्य में बदलिए)

(घ) जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे हैं। (प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए)

25. निम्नलिखित प्रश्नों को हल कीजिएः

[1 × 3 = 3] [CBSE 2016]

(क) एक तुमने ही इस जादू पर विजय प्राप्त की है। (वाक्य भेद लिखिए)

(ख) एक मोटरकार उनकी दुकान के सामने आकर रुकी। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(ग) सभी विद्यार्थी कवि-सम्मेलन में समय में पहुँचे और शांति से बैठे रहे। (मिश्रित वाक्य में बदलिए)

26. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिएः

[1 × 4 = 4] [CBSE 2016]

(क) मेरे द्वारा समय की पाबंदी पर निबंध लिखा गया। (कर्तृवाच्य में)

(ख) मेरे मित्र से चला नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में)

(ग) उनके सामने कौन बोल सकेगा? (भाववाच्य में)

(घ) भाई साहब ने मुझे पतंग दी। (कर्तृवाच्य में)

27. रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिएः

[1 × 4 = 4] [CBSE 2016]

सुरेश, यदि मैं बीमार हो जाऊँ तो घर की व्यवस्था रुक जाएगी।

28. काव्यांश पढ़कर उसमें निहित रस पहचानकर लिखिएः

[1 × 4 = 4] [CBSE 2016]

(क) एक पल, मेरी प्रिया के दृग-पलक,
थे उठे-ऊपर, सहज नीचे गिरे।
चपलता ने इस विकंपित पुलक से,
दृढ़ किया मानो प्रणय-संबंध था।

(ख) वीर रस का स्थायीभाव क्या है?

(ग) भय किस रस का स्थायीभाव है?

(घ) निम्नलिखित काव्यांश में कौन सा स्थायी भाव है?
जसोदा हरि पालने झुलावै।
हलरावै, दुलरावै, मल्हावै, जोई-सोई कछु गावै।

29. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। [1 × 3 = 3] [CBSE 2017]

(क) जीवन की कुछ चीजें हैं जिन्हें हम कोशिश करके पा सकते हैं।
(आश्रित उपवाक्य छाँटकर उसका भेद भी लिखिए)

(ख) मोहनदास और गोकुलदास सामान निकालकर बाहर रखते जाते थे। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(ग) हमें स्वयं करना पड़ा और पसीने छूट गए।
(मिश्रवाक्य में बदलिए)

30. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। [1 × 4 = 4] [CBSE 2017]

(क) कूजन कुंज में आसपास के पक्षी संगीत का अभ्यास करते हैं। (कर्मवाच्य में)

(ख) श्यामा द्वारा सुबह-दोपहर के राग बखूबी गाए जाते हैं। (कर्तृववाच्य में)

(ग) दर्द के कारण वह चल नहीं सकती। (भाववाच्य में)

(घ) श्यामा के गीत की तुलना बुलबुल के सुगम संगीत से की जाती है। (कर्तृववाच्य में)

31. रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए।

[1 × 4 = 4] [CBSE 2017]

सुभाष पालेकर ने प्राकृतिक खेती की जानकारी अपनी पुस्तकों में दी है।

32. (क) काव्यांश पढ़कर रस पहचानकर लिखिए।

[1 × 4 = 4] [CBSE 2017]

(प) साक्षी रहे संसार करता हूँ प्रतिज्ञा पार्थ मैं, [1]
पूरा करूँगा कार्य सब कथनानुसार यथार्थ मैं।
जो एक बालक को कपट से मार हँसते हैं अभी,
वे शत्रु सत्वर शोक-सागर-मग्न दीखेंगे सभी।

(पप) साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए, [1]
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए।

(ख) **निम्नलिखित काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है?** [1]

(प) मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहै न आनि सुवावै
तू काहै नहिं बेगहीं आवै, तोको कान्ह बुलावै

(पप) श्रृंगार रस के स्थायी भाव का नाम लिखिए। [1]

33. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

[1 × 3 = 3] [CBSE 2018]

(क) बालगोबिन जानते हैं कि अब बुढ़ापा आ गया।
(आश्रित उपवाक्य छाँटकर उसका भेद भी लिखिए)

(ख) मॉरीशस की स्वच्छता देखकर मन प्रसन्न हो गया।
(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(ग) गुरूदेव आराम कुर्सी पर लेटे हुए थे ओर प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले रहे थे।
(सरल वाक्य में बदलिए)

34. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। [1 × 4 = 4] [CBSE 2018]

(क) मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलेज वालों ने नोटिस थमा दिया। (कर्मवाच्य में)

(ख) देशभक्तों की शहादत को आज भी याद किया जाता है। (कर्तृववाच्य में)

(ग) खबर सुनकर वह चल भी नहीं पा रही थी। (भाववाच्य में)

(घ) जिस आदमी ने पहले-पहल आग का आविष्कार किया होगा, वह कितना बड़ा आविष्कारकर्ता होगा। (कर्तृववाच्य में)

35. रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए।

[1 × 4 = 4] [CBSE 2018]

अपने <u>गाँव की</u> <u>मिट्टी</u> छूने के लिए <u>मैं</u> <u>तरस</u> <u>गया</u>।

36. (क) 'रति' किस रस का स्थायी भाव है?

[1 × 4 = 4] [CBSE 2018]

(ख) 'करूण' रस का स्थायी भाव क्या है?

(ग) 'हास्य' रस का एक उदाहरण लिखिए?

(घ) निम्नलिखित पंक्तियों में रस पहचान कर लिखिए:

मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमान मत जानो मुझे,
यमराज से भी युद्ध को प्रस्तुत सदा मानो मुझे।

उत्तर माला

1. (क) धीरे-धीरे - रीतिवाचक क्रिया विशेषण

(ख) अभिशप्त - गुणवाचक विशेषणए, एकवचन

(ग) मूर्तिकार - पुल्लिंग, एकवचन, जातिवाचक संज्ञा

(घ) मेहनत - भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग

2. (क) सभा में जो भाषण मैने दिया वह अखबारों में छप गया।

(ख) मूर्तिकार मूर्ति भी बनाता है और पढ़ाता है।

(ग) मिश्र वाक्य

(घ) सन्ध्या के पाँच जैसे ही बजे, वह घूमने चला गया।

3. (क) मेरे द्वारा गत वर्ष खरीदी गई कार बेच दी गई।

(ख) वह इस समय गीता पढ़ रहा होगा।

(ग) कोई दरवाजा खटखटा रहा है।

(घ) तुम्हारे द्वारा टहला ही नहीं जा सकता।

4. (क) अनुप्रास अलंकार

(ख) अनुप्रास अलंकार

(ग) अनुप्रास अलंकार

(घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

5. (क) पद परिचय - हो गया - भूतकाल, क्रिया एकवचन, पुल्लिंग।

(ख) वह ऐसे व्यवहार कर रहा था जैसे कि वह अन्यायी हो। (मिश्र वाक्य)

(ग) फादर द्वारा रिश्ता बनाकर तोड़ा नहीं जाता है। (कर्मवाच्य)

(घ) रूपक अलंकार।

6. (i) (ग) मिश्र वाक्य

(ii) (ग)

(iii) (ख)

(iv) (ग)

7. (i) (ख)

(ii) (ग)

(iii) (क)

(iv) (ख)

8. (i) (ख)

(ii) (ग)

(iii) (ग)

(iv) (घ)

9. (i) (ख)

(ii) (घ)

(iii) (घ)

(iv) (घ)

10. (i) (ग)

(ii) (घ)

(iii) (क)

(iv) (ग)

11. (क) जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन

(ख) गुणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, बहुवचन

(ग) (सर्वनाम) पुरुषवाचक, एकवचन, पुल्लिग

(घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता

(ड.) हर्ष बोधक अव्यय।

12.(क) मिश्र वाक्य।

(ख) संयुक्त वाक्य।

(ग) उन्होंने शहनाई बजाना शुरू की और सब उसकी ध्वनि में मग्न हो गए।

(घ) मेरे पास एक बहुत रुचिकर किताब है।

(ड.) वह जो बहुत विनर्म है, वह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करती है।

13.(क) मालिक द्वारा झोली से सुर का फल निकालकार मेरी ओर उछाला जाएगा - (कर्तृवाच्य)

(ख) भाववाच्य- घायल होने के कारण उससे उड़ा नहीं जाता।

(ग) भाव वाच्य- मोहिनी द्वारा क्षण भर के लिए भी शान्त नहीं बैठा जाता।

(घ) कर्तृवाच्य- श्रद्धालु काशी-वासी इस सभा का आयोजन करते है।

(ड.) कर्मवाच्य- उनके द्वारा दोनों भाइयों को पढ़ाया गया।

14.(क) अनुप्रास अलंकार

(ख) श्लेष अलंकार

(ग) उपमा अलंकार

(घ) रूपक अलंकार

(ड.) मानवीयकरण अलंकार

15.(क) स्वतंत्रता का - भाववाचक संज्ञा, एकवचन संबंध कारक, स्त्रीलिंग।

(ख) मैं - कर्ता कारक, पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग।

(ग) चार - संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग।

(घ) सदा - अव्यय, एकवचन, पुल्लिंग।

16.(क) उपदेशक मंच पर बैठा और उपदेश देने लगा।

(ख) सूर्य जैसे ही उदय हुआ, चारों ओर प्रकाश फैल गया।

(ग) मिश्र वाक्य।

(घ) मिश्र वाक्य।

17.(क) आओ, कुछ बातें की जाएँ।

(ख) हमारे द्वारा उसको अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया गया।

(ग) आप उनके विषय में क्या सोचते हो?

(घ) (भाववाच्य)

18.(क) अनुप्रास अलंकार, पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार

(ख) अनुप्रास, रूपक अलंकार

(ग) मानवीयकरण, उपमा अलंकार

(घ) अनुप्रास अलंकार

19.(क) हो गया - भूतकाल, एकवचन, पुल्लिंग, अकर्मक क्रिया।

(ख) वह ऐसे व्यवहार कर रहा था कि अन्यायी हो।

(ग) फादर द्वारा रिश्ता बनाकर तोड़ा नहीं जाता।

(घ) रूपक अलंकार।

20.(क) भावुक -भाववाचक संज्ञा, एकवचन

(ख) कोई - अनिश्चयवाचक सर्वनाम, एकवचन

(ग) यहाँ - अव्यय

(घ) वे - अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम, बहुवचन, पुल्लिंग

21.(क) विदुषी कक्षा में बैठी और अपनी सहेली की प्रतीक्षा करने लगी।

(ख) मिश्र वाक्य

(ग) प्रतिस्पर्धा में जो छात्रा प्रथम आए हैं, उन्हें बुलाओ।

(घ) वह गाड़ी चलाता है और मोबाइल पर बात करता है।

22.(क) माँ द्वारा रोया भी नहीं जा सकता। (भाववाच्य)

(ख) मंत्री जी द्वारा राहत सामग्री बँटवाई गई। (कर्मवाच्य)

(ग) उन्होंने कैप्टन की देशभक्ति का सम्मान किया। (कतृवाच्य)

(घ) चलो अब सो जाते हैं।

23.(क) अनुप्रास अलंकार

(ख) मानवीयकरण अलंकार

(ग) उपमा अलंकार

(घ) रूपक अलंकार

24.(क) धीरे-धीरे - क्रिया विशेषण, अव्यय।

(ख) शर्मिला ने नाश्ता किया और नानी के घर उनसे मिलने गई। (संयुक्त वाक्य)

(ग) बीमारी के बाद दादी द्वारा चला भी नहीं जाता। (भाववाच्य)

(घ) श्लेष अलंकार, अनुप्रास अलंकार।

25.(क) सरल वाक्य

(ख) एक मोटरकार आई और उनकी दुकान के सामने आकर रूकी।

(ग) सभी विद्यार्थी जो कवि-सम्मेलन में समय से पहुँचे, वे शांति से बैठे रहे।

26.(क) मैंने समय की पाबंदी पर निबंध लिखा।

(ख) मेरा मित्र चल नहीं पाता।

(ग) उनके सामने किनके द्वारा बोला जाएगा।

(घ) भाई साहब द्वारा मुझे पतंग दी गई।

27.सुरेश – पुल्लिंग, एकवचन, व्यक्तिवाचक संज्ञा, कर्ता

मैं – पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता

घर की – जातिवाचक संज्ञा, संबंध कारक, एकवचन पुल्लिंग

एक जाएगी – भविष्यकाल, स्त्रीलिंग, क्रिया

28.(क) काव्यांश – शृंगार रस

(ख) वीर रस का स्थायी भाव – वीरता होता है।

(ग) भय – भयानक रस का स्थायी भाव होता है।

(घ) वात्सल्य रस – वत्सल (स्थायी भाव)

29.(क) हम कोशिश करके पा सकते हैं–सरल वाक्य

(ख) मोहन दास और गोकुल दास सामान निकालते हैं और बाहर रखते जाते थे।

(ग) जैसे ही हमने स्वयं किया वैसे ही पसीने छूट गए।

30.(क) कूजन कुंज में आसपास के पक्षियों द्वारा संगीत का अभ्यास किया जाता है।

(ख) श्यामा सुबह दोपहर के राग बखूबी गाती है।

(ग) दर्द के कारण उससे चला नहीं जाता।

(घ) श्यामा और बुलबुल के संगीत की तुलना की जाती है।

31.(क) सुभाष पालेकर – व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन

(ख) प्राकृतिक – भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग

(ग) जानकारी – स्त्रीलिंग, भाववाचक

(घ) दी है – क्रिया, वर्तमान काल

32. (क)(i) रौद्र रस

(ii) करूण रस

(ख) (i) वत्सल

(ii) रति

33.(क) बालगोबिन जानते हैं कि – मिश्र वाक्य

(ख) मॉरीशस की स्वच्छता जब देखी तो मन प्रसन्न हो गया।

(ग) गुरूदेव आराम कुर्सी पर लेटकर प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद ले रहे थे।

34. वाक्य बदलो

(क) कॉलेज वालों द्वारा मई महीने में शीला अग्रवाल को नोटिस थमा दिया।

(ख) देशभक्तों की शहादत आज भी याद करते हैं।

(ग) खबर सुनकर उससे चला भी नहीं जा रहा था।

(घ) आग का आविष्कार करने वाला आदमी बहुत बड़ा आविष्कारकर्ता होगा।

35. पद परिचय दो

(1) गाँव की –जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक।

(2) मिट्टी–जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन

(3) मैं – पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन

(4) तरस – भाववाचक संज्ञा

(5) गया–अकर्मक क्रिया, भूतकाल

36.(क) रति – शृंगार रस

(ख) करूण रस – शोक

(ग) हास्य रस का उदाहरण

चीटे न चाटते से न सूँघते, बांस में माछी न आवत नेरे,

आनि धरे जबसे घर में तब से रहै हैजा परोसिन घेरे।

(घ) वीर रस

Smart Notes .....

Smart Notes ....

खण्ड ग

पाठ्यपुस्तक व पूरक
पाठ्यपुस्तक क्षितिज

गद्य खण्ड

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखो।

[CBSE 2018] [5]

जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे, और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाना चाहिए। महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है; वरना तो देशभक्ति भी आजकल मज़ाक की चीज़ होती जा रही है।

दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुजरे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिया। ध्यान से देखा तो पाया चश्मा दूसरा है।

(क) हालदार साहब को कस्बे के नागरिकों का कौन-सा प्रयास सराहनीय लगा और क्यों?

(ख) "देशभक्ति भी आजकल मज़ाक की चीज होती जा रही है।" इस पंक्ति में देश और लोगों की क्या स्थिति प्रकट होती है?

(ग) दूसरी बार मूर्ति देखने पर हालदार को उनमें क्या परिवर्तन दिखाई दिया?

2. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखें। [CBSE 2018]

'बालगोबिन भगत' पाठ में किन सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार किया गया? [2]

3. निम्नलिखित प्रश्न का संक्षेप में उत्तर दीजिएः

[CBSE 2011]

फ़ादर की मृत्यु किस रोग के कारण हुई? पाठ के लेखक ने उनके लिए उस रोग के विधान पर क्या टिप्पणी की है? स्पष्ट कीजिए। [2]

4. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः [CBSE 2014] [5]

पर यह पितृ-गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनपर गौरव़-गान करना है, बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की कौन-सी खूबी और खामियाँ मेरे व्यक्तित्व के ताने-बाने में गुँथी हुई हैं या कि अनजाने-अनचाहे किए उनके व्यवहार ने मेरे भीतर किन ग्रंथियों को जन्म दे दिया। मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिताजी की कमज़ोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहिन सुशील से हर बात में तुलना और उनकी प्रशंसा ने ही क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीन-भाव की ग्रंथि पैदा नहीं कर दी कि नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पाई? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई कुछ विशेषता लगाकर मेरी लेखकीय उपलब्धियों का जिक्र करने लगता है तो मै संकोच से सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने-गड़ने को हो आती हूँ।

(i) लेखिका द्वारा अपने पिता के व्यक्तित्व के विषय में लिखने का उद्देश्य है-

(क) उनका गौरव-गान।

(ख) उनके गुण-दोषों की चर्चा।

(ग) अपने व्यक्तित्व की संरचना में उनका प्रभाव।

(घ) उनके व्यक्तित्व के विभिन्न रूपों का बखान।

(ii) लेखिका की हीन-भावना का कारण था-

(क) पिताजी का अनजाना-अनचाहा व्यवहार।

(ख) पिताजी का क्रोधी तथा शक्की स्वभाव।

(ग) लेखिका का रूप-रंग तथा बहिन से तुलना।

(घ) गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहिन।

(iii) लेखिका के मन में उपजी हीन-भावना का क्या परिणाम हुआ?

(क) साहित्यिक चिंतन बाधित हुआ।

(ख) स्वास्थ्य और गतिविधियाँ प्रभावित हुई।

(ग) उपलब्धि और प्रतिष्ठा के बाद भी आत्मविश्वास न रहा।

(घ) पिता के प्रति व्यवहार सराहनीय न रहा।

(iv) लेखकीय उपलब्धियों के प्रशंसा के क्षणों में भी लेखिका के अतिशय संकोच का कारण है-

(क) उपलब्धियाँ की कमी।

(ख) रचनाओं की सदोषता।

(ग) हीन-भावना का प्रभाव।

(घ) विनम्र और संकोची स्वभाव।

(v) 'उपलब्धि' का समानार्थक शब्द है-

(क) उपेक्षा (ख) अपेक्षा

(ग) समाप्ति (घ) प्राप्ति

5. निम्नलिखित प्रश्न का संक्षेप में उत्तर दीजिएः

[CBSE 2012]

'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के लेखक ने स्त्री-शिक्षा के विषय में जो विचार प्रकट किए है उन्हें अपने शब्दों में लिखिए। [2]

6. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दें- [CBSE 2011]

देश की आज़ादी के संघर्ष में मन्नू भण्डारी की सक्रिय भागीदारी को लेकर पिताजी के साथ उनके टकराव की स्थिति को अपने शब्दों में लिखो। [2]

7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखो- [CBSE 2015] [5]

शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदारी बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएँ हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थी। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होगी वे जिन्होंने आँखें मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते रहते।

(i) पिता के व्यक्तित्व में सकारात्मक पहलू न रहने के पीछे कारण थे

(क) निरंतर पुस्तक-पुस्तिकाओं का अध्ययन

(ख) समाज-सुधार के कार्यों में रूचि

(ग) आर्थिक स्थिति और अंहकार

(घ) नवाबी आदतें और पत्नी के प्रति क्रोध

(ii) 'विस्फारित अहं' का अभिप्राय है-

(क) बनावटी स्वाभिमान

(ख) बढ़ा हुआ ग़रूर

(ग) मिथ्याभिमान

(घ) मदान्धता

(iii) लेखिका की माँ के प्रति उसके पिता के क्रोध का कारण था

(क) बेहद क्रोधी और अहंवादी स्वभाव

(ख) अधूरी इच्छाएँ तथा प्रतिष्ठा गिरने का भय

(ग) पतनशील आर्थिक स्थिति से

(घ) पत्नी और संतान के बेमेल विचार

(iv) लेखिका के पिता का स्वभाव से शक्की बनने का कारण था

(क) उनकी आर्थिक दशा

(ख) सकारात्मक दृष्टि न होना

(ग) अपनों की कृतघ्नता

(घ) अधूरी महत्वाकांक्षाएँ

(v) 'यातना' का समानार्थक नहीं है-

(क) वेदना

(ख) संवेदना

(ग) व्यथा

(घ) पीड़ा

8. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दें- [CBSE 2015]

(क) देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में मन्नू भण्डारी की भागीदारी के दो उदाहरण दो। [2]

(ख) मन्नू भण्डारी की अपने पिता से वैचारिक टकराहट के कारणों का उल्लेख करो। [2]

9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिएः

[CBSE 2016]

(क) 'मन्नू भंडारी की माँ त्याग और धैर्य की पराकाष्ठा थी- फिर भी लेखिका के लिए आदर्श न बन सकी।' क्यों? [1]

(ख) मन्नू भंडारी की ऐसी कौन सी खुशी थी जो 15 अगस्त, 1947 की खुशी में समाकर रह गई। [1]

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखों-

[CBSE 2017]

(क) मन्नू भंडारी ने अपने पिताजी के बारे में इंदौर के दिनों की क्या जानकारी दी है? [1]

(ख) मन्नू भंडारी की माँ धैर्य और सहनशक्ति में धरती से कुछ ज्यादा ही थीं, - ऐसा क्यों कहा गया? [1]

11. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प छाँटकर लिखिएः [CBSE 2017] [5]

भारतरत्न से लेकर इस देश के ढेरों विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्मविभूषण जैसे सम्मानों से नहीं, बल्कि अपनी अजेय संगीतयात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे। नब्बे वर्ष की भूरी-पूरी आयु में 21 अगस्त, 2006 को संगीत-रसिकों की हार्दिक सभा से विदा हुए खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत पूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजिविषा को अपने भीतर ज़िंदा रखा।

(i) बिस्मिल्ला खाँ को प्राप्त सर्वोच्च सम्मान था

(क) पद्मविभूषण।

(ख) संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार।

(ग) विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियाँ।

(घ) भारतरत्न।

(ii) बिस्मिल्ला खाँ हमेशा के लिए संगीत के नायक क्यों बने रहेंगे।

(क) शहनाई की जादुई आवाज़ के कारण।

(ख) सातों सुरों को बरतने की तमीज़ के कारण।

(ग) भाईचारे की भावना को मज़बूत करने के कारण।

(घ) अज्ञेय संगीतयात्रा के कारण।

(iii) बिस्मिल्ला खाँ की सबसे बड़ी देन है

(क) संगीत-रसिकों को रसविभोर करना।

(ख) संगीत की शास्त्रीय परंपरा को जागृत रखना।

(ग) संगीत की पूर्णता एवं ज्ञान की इच्छा को जीवन-भर सँजोए रखना।

(घ) एक सच्ची इन्सानियत का उदाहरण पेश करना।

(iv) 'संगीत नाटक अकादमी' क्या है और कहाँ स्थित है?

(क) दिल्ली में, संगीत और नाटकों का आयोजन करने वाली संस्था।

(ख) दिल्ली में, संगीतकारों एवं नाटककारों का एक संगठन।

(ग) नई दिल्ली में स्थित एक विश्वविद्यालय।

(घ) नई दिल्ली स्थित संगीत और नाट्यकला से संबद्ध संस्था।

(v) 'खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर ज़िंदा रखा।' - प्रस्तुत वाक्य का प्रकार है

(क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य (घ) असाधारण वाक्य

12. निम्नलिखित प्रश्न का संक्षेप में उत्तर दीजिएः

[CBSE 2011]

शहनाई की दुनिया में 'डुमराँव' को क्यों याद किया जाता है? पाठ के आधार पर लिखिए। [1]

13. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिएः

[CBSE 2013] [5]

मसलन बिस्मिल्ला खाँ की उम्र 14 साल है। वही काशी है वही पुराना बालाजी का मंदिर जहाँ बिस्मिल्ला खाँ को नौबतखाने रियाज़ के लिए जाना पड़ता है। मगर एक रास्ता है बालाजी मंदिर तक जाने का। यह रास्ता रसूलनबाई और बतूलनबाई के यहाँ से होकर जाता है। इस रास्ते से अमीरुद्दीन को जाना अच्छा लगता है। इस रास्ते न जाने कितने तरह के बोल-बनवाए कभी ठुमरी, कभी टप्पे, कभी

दादरा के मार्फत ड्योढ़ी तक पहुँचते रहते हैं। रसूलन और बतूलन जब गाती हैं तब अमीरुद्दीन को खुशी मिलती है। अपने ढेरों साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खाँ साहब ने स्वीकार किया है कि उन्हें अपने जीवन के आरम्भिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहिनों को सुनकर मिली है। एक प्रकार से उनकी अबोध उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत प्ररेणा की वर्णमाला रसूलनबाई और बतूलनबाई ने उकेरी है।

(i) बिस्मिल्ला खाँ का मूल नाम है–

(क) सादिक हुसैन

(ख) शम्सुद्दीन

(ग) अमीरुद्दीन

(घ) अलीबख्श

(ii) बिस्मिल्ला खाँ को बालाजी मन्दिर जाने के लिए एक खास रास्ता ही क्यों पसंद था?

(क) वह रास्ता छोटा था

(ख) उस रास्ते पर उनके मित्रों के घर थे

(ग) उस रास्ते पर दो बहिनों का गायन सुनने को मिलता था

(घ) उन्हें ठुमरी, टप्पा, दादरा पसंद था।

(iii) कैसे कहा जा सकता है कि उन्हें संगीत की प्रेरणा इन दोनों बहिनों से मिली?

(क) इनका गायन बहुत उत्कृष्ट था

(ख) यह गायन प्रायः उन्हें सुनने को मिलता था

(ग) इस गायन के प्रति आसक्ति को उन्होंने स्वीकार किया है

(घ) इस गायन में एक विशेष मोहकता थी।

(iv) संगीत का एक रूप नहीं है–

(क) शहनाई (ख) टप्पा

(ग) ठुमरी (घ) दादरा

(v) 'रसूलन और बतूलन जब गाती हैं तब अमीरुद्दीन को खुशी मिलती है' – वाक्य का प्रकार है–

(क) सरल

(ख) संयुक्त

(ग) मिश्र

(घ) साधारण

14. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दो– [CBSE 2013]

आप कैसे कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ एक सच्चे और अच्छे इंसान थे। [2]

15. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखो– [CBSE 2015] [5]

काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया हैं काशी आनंद-कानन है। सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज़ सिखाने वाला नायाब हीरा रहा है जो हमेशा से दो कौमों को एक होने व आपस मे भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा। भारतरत्न से लेकर इस देश के ढेरों विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी-पुरस्कार एवं पद्मविभूषण जैसे सम्मानों से नहीं, बल्कि अपनी अजेय संगीत-यात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे।

(i) काशी की सबसे बड़ी विशेषता लेखक के अनुसार है

(क) संगीत के संस्कार

(ख) मरण को भी मंगल मानना

(ग) बिस्मिल्ला खाँ जैसा संगीतकार

(घ) आपसी भाईचारा

(ii) बिस्मिल्ला खाँ का जीवन प्रेरित करता है–

(क) संगीत के प्रति अनुराग

(ख) जातियों में परस्पर बंधुत्व का भाव

(ग) लय और सुर की परख करना

(घ) काशी से अनुराग

(iii) बिस्मिल्ला खाँ को प्राप्त पुरस्कारों में सबसे विशेष है–

(क) संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार

(ख) विश्वविद्यालय की मानद उपाधि

(ग) पद्मविभूषण

(घ) भारतरत्न

(iv) बिस्मिल्ला खाँ सदा याद किए जाएँगे–

(क) काशी के प्रति प्रेम के लिए

(ख) सर्वश्रेष्ठ संगीतकार होने के कारण

(ग) अनेक उपाधियों से अलंकृत होने के कारण

(घ) भाईचारे की प्रेरणा देने के कारण

(v) 'सुर की तमीज़' से तात्पर्य है-

(क) संगीत से लगाव

(ख) संगीत की समझ

(ग) संगीत की साधना

(घ) संगीत की प्रेरणा

16. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दो- [CBSE 2015]

उदाहरण देकर स्पष्ट करो कि बिस्मिल्ला खाँ वास्तविक अर्थों में सच्चे इंसान थे। [2]

17. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: [CBSE 2015]

शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं। शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग होता है। रीड अंदर से पोली होती है जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है। रीड, नरकट (एक प्रकार की घास) से बनाई जाती है जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है। इतनी ही महत्ता है इस समय डुमराँव की जिसके कारण शहनाई जैसा वाद्य बजता है। फिर अमीरुद्दीन जो हम सबके प्रिय हैं, अपने उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ साहब हैं। उनका जन्म-स्थान भी डुमराँव ही है। इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव निवासी थे। बिस्मिल्ला खाँ उस्ताद पैगंबरबख्श खाँ और मिट्ठन के छोटे साहबजादे हैं।

(क) शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के पूरक हैं, कैसे? [2]

(ख) यहाँ रीड के बारे में क्या-क्या जानकारियाँ मिलती हैं? [2]

(ग) अमीरुद्दीन के माता-पिता कौन थे? [1]

18. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर संक्षेप में लिखे- [CBSE 2017]

उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को बाला जी के मंदिर का कौन -सा रास्ता प्रिय था और क्यों? [1]

19. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखे। [CBSE 2018]

'काशी में बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरयरे के पूरक हैं।- कथन का क्या आशय है? [1]

उत्तर माला

1. (क) हालदार साहब को कस्बे के नागरिकों का प्रयास सराहनीय लगा क्योंकि ऐसे समय में जबकि देशभक्ति का लोग मज़ाक उड़ाते हैं, उस समय लोगों द्वारा किया गया यह प्रयास उनका देश के प्रति प्रेम प्रकट करता है।

(ख) इस पंक्ति के द्वारा लोगों में देश के प्रति संवेदनहीनता, स्वार्थ की भावना, तथा हमेशा दूसरों की हँसी उड़ाने की आदत तथा भावना का पता चलता है।

(ग) उन्हें दूसरी बार मूर्ति का चश्मा अलग लगा।

2. इस पाठ में उन रूढ़ियों पर प्रहार किया गया है, जो समाज में आज तक अपनाई नहीं गई है। जैसे- पति के मरने पर पत्नी द्वारा ही उसे अग्नि देना। लेकिन भगत ने अपनी पतोहू से ही बेट की चिता को आग लगवाई। साथ ही उसकी दूसरी शादी को भी कहा।

3. फादर की मृत्यु गैंग्रीन से हुई। वह सफेद लंबा चौगा पहने हमेशा गले लगाने को आतुर लगती थी। लेखक अचंभित थे कि जो व्यक्ति हमेशा स्नेह बांटते थे उन्हें बुढ़ापे में इस बीमारी का दुख क्यों मिला।

4. (i) ग - अपने व्यक्तित्व की संरचना में उनका प्रभाव

(ii) ग- लेखिका का रूप-रंग और बहिन से तुलना

(iii) ग- उपलब्धि और प्रतिष्ठा के बाद भी आत्मविश्वास न रहा

(iv) ग- हीन भावना का प्रभाव

(v) घ- प्राप्ति

5. लेखक ने अपने निबंध में स्त्रियों की शिक्षा का समर्थन किया है। उन्होंने प्रकट किया है कि स्त्री शिक्षा से ही समाज की उन्नति संभव है और स्त्री को भी पुरुष के समान अधिकार दिया जाना चाहिए। इस निबंध में लेखक ने अपनी खुली सोच का परिचय दिया है।

6. जब मन्नू जी के घर में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सभाएँ तथा गोष्ठियाँ की जा रही थी, तब वह भी अपने देश की आजादी के प्रति जागरूक हो गई। हालांकि उनके पिता इस तरह उनका आंदोलन में हिस्सा लेना पसंद नहीं करते थे, पंरतु पिता की नाराजगी के बावजूद बहुत ही जोश के साथ उन्होंने इस आंदोलन में हिस्सा लिया। उन्होंने हड़तालों, नारेबाजी तथा भाषणों में अपनी पूरी जान लगा दी।

7. (i) (ग) आर्थिक स्थिति और अहंकार

(ii) (ग) मिथ्याभियान

(iii) (ख) अधूरी इच्छाएँ तथा प्रतिष्ठा गिरने का भय

(iv) (ग) अपनों की कृतघ्नता

(v) (ख) संवेदना

8. (क) जब मन्नू जी के घर में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए सभाएँ तथा गोष्ठियाँ की जा रही थी, तब वह भी अपने देश की आज़ादी के प्रति जागरूक हो गई। हालाँकि उनके पिता इस तरह उनका आन्दोलन में हिस्सा लेना पसंद नहीं करते थे, परन्तु पिता की नाराज़गी के बावजूद बहुत ही जोश के साथ उन्होंने इस आन्दोलन में हिस्सा लिया। उन्होंने हड़तालों, नारेबाज़ी तथा भाषणों में अपनी पूरी जान लगा दी।

(ख) लेखिका तथा उसके पिता के बीच अकसर जीवन मूल्यों को लेकर टकराव की स्थिति पैदा हो जाती थी। लेखिका के पिता ने उसे आज़ादी तो दी लेकिन एक सीमा भी निश्चित कर दी। परन्तु लेखिका सम्पूर्ण आज़ादी चाहती थी। फिर चाहे वह विचार प्रकट करने की आज़ादी हो, खुद के निर्णय लेने की आज़ादी हो या फिर देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति की हो।

9. (क) मन्नू भंडारी की माँ त्याग और धैर्य की पराकाष्ठा थी फिर भी लेखिका के लिए आदर्श इसलिए नहीं बन सकी क्योंकि वे बहुत ही धैर्यशील और सहनशील थी। पति के हर आदेश को मौन भाव से पूरा करती। बच्चों की उचित-अनुचित इच्छा और ज़िद को पूरा करती। घर के सभी लोगों का लगाव माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग लेखिका का आदर्श नहीं बन सका।

(ख) लड़कियों को भड़काने और कॉलिज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में शीला अग्रवाल को सन् 1947 मई महीने में कॉलेज वालों ने नोटिस थमा दिया। इस बात को लेकर हुड़दंग न मचे इसलिए जुलाई में थर्ड इयर की क्लासेस बंद करके लेखिका और दो-तीन छात्राओं का प्रवेश निष्द्धि कर दिया।

लेखिका ने बाहर रहकर इतना हुड़दंग मचाया कि कॉलिज वाले को अगस्त में आखिर थर्ड इयर खोलना पड़ा। लेखिका की जीत हुई वह बहुत खुश थी लेकिन उनकी यह खुशी 15 अगस्त, 1947 की खुशी में समाकर रह गई।

10. (क) लेखिका के पिता इन्दौर में बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। राजनीति में भी उनकी बहुत पहुँच थी। कांग्रेज में वे कार्यकर्ता के रूप में थे तथा साथ ही समाज-सुधारक भी थे। हर दिन उनके घर में सभाएँ होती थी। उन्होंने कई गरीब बच्चों को भी घर में मुफ्त पढ़ाया था। लेकिन वे गुस्से वाले भी बहुत थे तथा साथ ही थोड़े से अहंकारी भी थे।

(ख) मन्नु की माँ एक अनपढ़ घरेलू महिला थी। वे बहुत सहनशील थी। उनकी पूरी दुनिया अपने पति व बच्चों के आस-पास ही थी। हर समय सेवा में लगे रहना जैसे उनकी दिनचर्या थी। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मन्नू जी की माँ त्याग व सहनशीलता की परिचायक थी।

11. (i) (घ) भारत रत्न।

(ii) (घ) अज्ञेय संगीत यात्रा के कारण।

(iii) (ग) संगीत की पूर्णता एवं ज्ञान की इच्छा को जीवन भर संजोए रखना।

(iv) (घ) नई दिल्ली स्थित संगीत और नाट्य कला से संबद्ध संस्था।

(v) (ग) मिश्र वाक्य

12. (घ) शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म स्थान डुमराव में सोन नदी के किनारे पाई जाने वाली 'नरकट घास' से शहनाई बजाने में प्रयोग होने वाली रीड बनाई जाती है। इसलिए शहनाई की दुनिया में डुमरांव को याद किया जाता है।

13. (i) (ग) अमीरूद्दीन

(ii) (ग) उस रास्ते पर दो बहिनों का गायन सुनने को मिलता था।

(iii) (ख) यह गायन प्रायः उन्हें सुनने को मिलता था।

(iv) (क) शहनाई

(v) (ग) मिश्र

14. बिस्मिल्ला खाँ एक सच्चे इंसान थे। वे मानवता को ही सबसे बड़ा धर्म समझते थे। हिन्दु तथा मुस्लिम दोनों धर्मों का सम्मान करते थे। उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया था, लेकिन फिर भी उनमें घमंड नहीं बल्कि सुर था।

15. (i) (ग) बिस्मिल्ला खाँ जैसा संगीतकार।

(ii) (ख) जातियों में परस्पर बंधुत्व का भाव।

(iii) (क) संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार।

(iv) (ख) सर्वश्रेष्ठ संगीतकार होने के कारण।

(v) (ख) संगीत की समझ

16. बिस्मिल्ला खाँ एक सच्चे इंसान थे। वे मानवता को ही सबसे बड़ा धर्म समझते थे। हिन्दु तथा मुस्लिम दोनों धर्मों का सम्मान करते थे। उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया था, लेकिन फिर भी उनमें घमण्ड नहीं, बल्कि सुर था।

17. (क) डुमराँव विश्व प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ की जन्मभूमि है। तथा शहनाई बजाने में जिस रीड का प्रयोग होता है, वह मुख्यतः डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाने वाली नरकट घास से बनाई जाती है। इस प्रकार डुमराँव के कारण ही शहनाई जैसा वाद्य बजता है। इस प्रकार ये दोनों एक दूसरे के पूरक है।

(ख) यहाँ रीड के बारे में यह जानकारी मिलती है कि रीड का प्रयोग शहनाई बजाने में किया जाता है। यह रीड, नरकट (एक प्रकार की घास) से बनाई जाती है जो मुख्यतः डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाती है।

(ग) अमीरुद्दीन उस्ताद पैगंबरबख्श खाँ और मिट्ठन के छोटे साहबज़ादे साहबज़ादे थे?

18. जब भी उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ बालाजी के मन्दिर जाते थे, वे हमेशा रसूलन बाई तथा बतूलनबाई के यहाँ से होकर गुजरते थे, क्योंकि उन्हें कभी टप्पे, तो कभी ठुमरी या फिर अलग तरह के राग सुनने को मिलते थे। उन दोनों की इस गायकी को सुनने के लिए ही वे इस रास्ते से गुजरते थे।

19. बिस्मिल्ला खाँ और विश्वनाथ एक-दूसरे के पूरक है। क्योंकि खाँ साहब हमेशा विश्वनाथ के मंदिर में बैठ कर घण्टों रियाज़ करते थे। साथ ही जब कभी खाँ साहब काशी के बाहर जाते तो विश्वनाथ के मन्दिर की तरफ मुँह करके ही शहनाई बजाते थे। यह उनकी देव-भक्ति भावना को प्रकट करती है।

Smart Notes .....

काव्य खण्ड

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखो। [CBSE 2018]

हमारै हरि हारिल की लकरी।

मन क्रम वचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।

जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जनकारी।

सुनत जोग लागत है एसौ, ज्यों करुई ककरी

सु तो ब्याधि हमकों ले जाए, देखी सुनी न करी।

यह तो 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।

(क) 'हारिल की लकरी' किसे कहा गया है और क्यों? [2]

(ख) 'तिनहिं लै सौंपौ' में किसकी ओर संकेत किया गया है [2]

(ग) गोपियों को योग कैसा लगता है और क्यों? [1]

2. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिएः [CBSE 2011]

परशुराम के चरित्र की दो विशेषताएँ कौन-कौन सी हैं। [2]

3. काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः [CBSE 2011]

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।

पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।

इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाही। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।

देखि कुठारू सरासन बाना। मैं कुद कहा सहित अभिमाना।।

(क) 'मुनीसु' कौन है? लक्ष्मण उनसे बहस क्यों कर रहे हैं? [1]

(ख) लक्ष्मण के हँसने का क्या कारण है? [1]

(ग) लक्ष्मण की 'मृदुवाणी' की क्या विशेषता है? [1]

(घ) आशय स्पष्ट करो- चहत उड़ावन फूँकि पहारू [1]

(ड) 'कुम्हड़बतिया' का उदाहरण क्यों दिया गया है? [1]

4. निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः [CBSE 2012] [5]

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।

आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।

सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी कर करिअ लराई।।

सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।

(क) पद्यांश के आधार पर राम के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ख) परशुराम ने 'सेवक' और 'शत्रु' किसको कहा है?

(ग) 'सहसबाहू' कौन था?

5. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दो– [CBSE 2013]

बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।

बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रिय कुल द्रोही।

भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महि देवहन्ह ही दीन्ही।

सहसबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।

(क) काव्यांश में किसका किसके प्रति संबोधन है? [1]

(ख) परशुराम की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख करो– [1]

(ग) 'परशु' की क्या विशेषता थी? लिखिए। [1]

(घ) अलंकार बताओ– भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं [1]

(ङ) आशय स्पष्ट करो

'केवल मुनि जड़ जानहि मोही' [1]

6. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखो– [CBSE 2013]

लखन कहेउ मुनि सुजस तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा।।

अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी।।

नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू।।

बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावत सोभा।।

(क) लखन/लक्ष्मण परशुराम को ही अपना यश बखालने में समर्थ क्यों मानते हैं? [1]

(ख) आपके विचार से लक्ष्मण का कौन सा कथन सर्वाधिक व्यंग्यपूर्ण है? [1]

(ग) अपने मुँह अपना गुणगान करने वाला व्यक्ति समाज में क्या कहलाता है? [1]

(घ) आशय स्पष्ट करो–

'नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू'। [1]

(ङ) लक्ष्मण ने परशुराम के किन गुणों की ओर संकेत किया है? [1]

7. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लिखो– [CBSE 2013]

परशुराम के क्रोध का मूल कारण क्या था? स्पष्ट करो। [1]

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिएः [CBSE 2016]

(क) 'गाधिसूनु' किसे कहा गया है? वे मुनि की किस बात पर मन ही मन मुस्कुरा रहे थे? [2]

(ख) स्वयंवर स्थल पर शिवधनुष तोड़ने वाले को परशुराम ने किस प्रकार धमकाया? [2]

9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखों– [CBSE 2017]

(क) "बहु धनु ही तोरी लरिकाई" यह किसने कहा और क्यों? [2]

(ख) लक्ष्मण ने शूरवीरों के क्या गुण बताए हैं? [2]

10. 'कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं।' 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के इस कथन में निहित जीवनमूल्यों को स्पष्ट कीजिए और बताइए कि देश की प्रगति में नागरिक की क्या भूमिका है? [CBSE 2017] [5]

11. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में लिखो। [CBSE 2018]

"बादलों की गर्जना का आह्वान कवि क्यों करना चाहता है।" 'उत्साह' कविता के आधार पर स्पष्ट करो। [2]

12. निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः [CBSE 2012] [5]

एक के नहीं,

दो के नहीं,

ढेर सारी नदियों के पानी का जादू;

एक के नहीं,

दो के नहीं,

लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा;

एक की नहीं,

दो की नहीं,

हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुणधर्म।

(क) फ़सल को उपजाने में नदी का क्या योगदान है?

(ख) फ़सल से 'हाथों के स्पर्श' का क्या सम्बन्ध है?

(ग) फ़सल मिट्टी का गुणधर्म कैसे है?

13. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिएः [CBSE 2012]

'छाया मत छूना'- कविता में में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए। [5]

14. निम्नलिखित प्रश्न का संक्षेप में उत्तर दीजिएः

[CBSE 2012]

'छाया मत छूना' कविता में 'मृगतृष्णा' किसे कहा गया है और क्यों? [2]

15. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो- [CBSE 2015]

(क) 'छाया मत छूना' का कवि यथार्थ के पूजन की बात क्यों कहता है? उसकी दृष्टि में यथार्थ का स्वरूप क्या है? [2]

(ख) 'छाया' से क्या तात्पर्य है? कवि उसे छूने से मना क्यों करता है? [2]

16. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिएः [CBSE 2016]

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं, सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी,
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण-
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) 'छाया मत छूना'- कवि ने ऐसा क्यों कहा? [2]

(ख) 'छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी' का क्या तात्पर्य है? [2]

(ग) 'कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी' में कवि को कौन सी यादें कचोटती हैं? [1]

17. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर संक्षेप में लिखो।

[CBSE 2017]

"दुविधा- हत साहस है, दिखता पंथ नहीं"- कथन में किसका यथार्थ चित्रण है? [2]

18. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिएः [CBSE 2011]

'माँ ने कहा लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' इस कथन द्वारा माँ बेटी को को क्या समझाती चाहती है? [2]

19. निम्नलिखित प्रश्न का संक्षेप में उत्तर दीजिएः

[CBSE 2012]

'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को क्या-क्या सीखें दी हैं? [2]

20. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखो- [CBSE 2012]

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना।
आग रोटियाँ सेकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री-जीवन के।

(क) लड़की का अपने चेहरे पर रीझना हानिकर क्यों है? [1]

(ख) कविता में 'आग' के माध्यम से समाज की किस समस्या की ओर संकेत किया है? [1]

(ग) वस्त्र और आभूषण के प्रति नारी का आकर्षण स्वाभाविक क्यों होता है? [1]

(घ) माँ ने उन्हें बन्धन क्यों माना है? [1]

(ङ) माँ ने यह सब सीख बेटी को क्यों दी? [1]

21. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लिखो- [CBSE 2015]

लड़की के विदाई के क्षण माँ के लिए विशेषतः अधिक दुखद क्यों होते हैं? 'कन्यादान' कविता के आलोक में उत्तर दो। [2]

22. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिएः

[CBSE 2015]

(क) 'बेटी, अभी सयानी नहीं थी'- में माँ की चिंता क्या है? 'कन्यादान' कविता के आधार पर लिखिए। [2]

(ख) 'कन्यादान' कविता में बेटी को 'अंतिम पूँजी' क्यों कहा गया है? [2]

23. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखो-

[CBSE 2017]

(क) 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' यह आचरण अब बदलने लगा है,- इस पर अपने विचार लिखें। [2]

(ख) बेटी को 'अंतिम पूँजी' क्यों कहा गया है? [2]

24. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में लिखो।

[CBSE 2018]

'कन्यादान' कविता में व्यक्त किन्ही दो सामाजिक बुराइयों का उल्लेख करो। [2]

25. काव्यांश को पढ़कर पूछे प्रश्नों के उत्तर दजिए: [CBSE 2011]

कभी-कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

(क) साथ कौन देता है और किसका? [1]

(ख) 'यों ही' में निहित अर्थ स्पष्ट करो- [1]

(ग) आवाज़ की हिचक को विफलता क्यों नहीं कहा जा सकता? [1]

(घ) कविता में 'मनुष्यता' का अभिप्राय क्या है? [1]

(ड) संसार में इस प्रकार की 'मनुष्यता' की क्या उपयोगिता है? [1]

26. निम्नलिखित प्रश्न का संक्षेप में उत्तर दीजिए: [CBSE 2012]

'संगतकार' किसे कहते हैं? [1]

27. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दो- [CBSE 2013]

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना
जीवन में हैं सुरंग-सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी:
तन-सुगंध शेष रही बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीति क्षण
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) 'छाया शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए। [1]

(ख) कवि के जीवन की सुरंग-सुधियाँ क्या हैं? [1]

(ग) 'छवियों की चित्र-गंध' से कवि का क्या अभिप्राय है? [1]

(घ) 'कुंतल किसे कहते हैं? कविता में इसका प्रयोग किसकी ओर संकेत करता है? [1]

(ड.) कविता में दुख के दूना होने का क्या कारण बताया गया है? [1]

28. निम्नलिखित प्रश्न का संक्षेप में उत्तर दीजिए- [CBSE 2013]

'छाया मत छूना' कविता की पंक्ति 'जितना ही दौड़ा तू' उतना ही भरमाया' का क्या आशय है? [2]

29. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लिखो- [CBSE 2015]

संगतकार जैसे व्यक्ति के जीवन में क्या उपयोगिता होती है? [2]

30. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर संक्षेप में लिखिए: [CBSE 2016]

संगतकार में त्याग की उत्कृष्ट भावना भरी है- पुष्टि कीजिए। [2]

31. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखों। [CBSE 2016] [5]

वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपनी ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है
जैसे समेटता तो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ समान
जैसे उसे यादि दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था।

(क) "वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से" का भाव स्पष्ट करो-

(ख) मुख्य गायक के अंतरे की जटिल तान में खो जाने पर संगतकार क्या करता है।

(ग) संगतकार मुख्य गायक को क्या याद दिलाता है।

32. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में लिखो। [CBSE 2018]

संगतकार की हिचकती आवाज़ उसकी विफलता क्यों नहीं है? [2]

33. निम्नलिखित प्रश्न के संक्षेप में उत्तर दीजिए- [CBSE 2013]

'कन्यादान' कविता में वस्त्र और आभूषणों को स्त्री के लिए बंधन क्यों कहा है? [2]

34. निम्नलिखित प्रश्न का संक्षेप में उत्तर दीजिए- [CBSE 2013]

'संगतकार' के ऊँचा सुर न करने में मानवता कैसे दिखाई देती है? [2]

उत्तर माला

1. (क) 'हारिल की लकरी' गोपियों ने श्री कृष्ण जी को कहा है। क्योंकि जिस प्रकार 'हारिल' पक्षी के जीवन का आधार लकड़ी का टुकड़ा होता है, उसी प्रकार कृष्ण जी भी गोपियों के जीवन के आधार है।

(ख) इस पंक्ति के द्वारा उन लोगों की ओर संकेत किया गया है, जो लोग चंचल हैं, उनका मन इधर-उधर भटकता रहता है। गोपियाँ कहती हैं कि हमारा मन तो स्थिर है, हमें श्री कृष्ण के संदेशों की ज़रूरत नहीं, यह संदेश उन्हें भेजो जिनका मन चंचल है।

(ग) गोपियों को योग पसन्द नहीं आता, क्योंकि इसे कभी उन्होंने न सुना है, न देखा है और न ही कभी इसे भोगा है।

2. (घ) परशुराम के चरित्र की दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. परशुराम जी बालब्रह्मचारी, अति क्रोधी तथा वीर व्यक्ति थे।

2. परशुराम जी भगवान शिव के शिष्य और क्षत्रियकुल द्रोही थे।

3. (क) 'मुनीसु' परशुराम जी को कहा गया है। क्योंकि परशुराम जी, शिव धनुष तोड़ने वाले को बार-बार मारने की बात कह रहे थे इसलिए लक्ष्मण उनसे बहस कर रहे थे।

(ख) लक्ष्मण इसलिए हँस रहे थे क्योंकि परशुराम अपने बल और शौर्य की गाथा अपने ही मुख से कर रहे थे।

(ग) लक्ष्मण जी के स्वभाव में उग्रता है, प्रतिवाद करने की भावना है। उन्होंने क्रोध और व्यंग से परिपूर्ण व्यवहार किया है।

(घ) लक्ष्मण परशुराम से व्यंग करते हुए कहते हैं कि आप ऐसी डींगे मार रहे हैं जैसे फूँक द्वारा ही पहाड़ उड़ा देना चाहते हैं। मैं आपकी डींगों से डरने वाला नहीं।

(ड.) लक्ष्मण परशुराम पर व्यंग करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार मान्यतानुसार कुम्हड़े की बतिया को तर्जनी ऊँगली दिखाओं तो मर जाती है आप उसी तरह से सब को डरा रहे हैं। लेकिन मैं आपसे डरने वाला नहीं। इस प्रकार लक्ष्मण जी ने कुम्हड़बतिया का उदाहरण दिया है।

4. (क) राम मृदुभाषी थे, उन्होंने अपने को परशुराम का दास बताते हुए संबोधित किया और उनसे मीठे शब्दों में अपराध के लिए क्षमा मांगी। राम अत्यंत सहनशील एवं बड़ों की आज्ञा का पालन करने वाले भी थे। उन्होंने परशुराम से कहा कि मैंने दंड किया है उसके लिए आपकी जो आज्ञा हो कृपया मुझे बताएँ। वह परशुराम के क्रोध को चुपचाप सहते रहे।

(ख) परशुराम ने सेवक उसे कहा है जो सेवा का काम करें, और जिसने उनका धनुष तोड़ा मैं उनके लिए शत्रु से कम नहीं।

(ग) सहसबाहु एक राक्षस था जिसकी सैकड़ों भुजाएं थी।

5. (क) परशुराम का राम तथा लक्ष्मण के प्रति।

(ख) (1) उन्होंने कई बार इस पृथ्वी से क्षत्रियों को युद्ध में हराया था।

(2) वे बहुत ही अभिमानी तथा क्रोधी स्वभाव के मुनि थे।

(ग) 'परशु' की यह विशेषता थी कि वे एक वीर योद्धा थे। साथ ही वे शिव भक्त थे।

(घ) अनुप्रास

(ङ) इस पंक्ति का आशय है कि परशुराम जी लक्ष्मण को गुस्सा करते हुए कह रहे हैं कि तुमने मुझे बिरा/केवल साधु/मुनि समझा है। तुमने अभी मेरा क्रोध नहीं देखा।

6. (क) लक्ष्मण ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि मुनि का यश, मान उनके सिवाय और कोई नहीं कर सकता।

(ख) लक्ष्मण का कथन- कि अपने ही मुँह से आप अपनी प्रशंसा खुद करते हो।

(ग) अपने मुँह अपना गुणगान करने वाला समाज में घमण्डी कहलाता है।

(घ) इस पंक्ति में लक्ष्मण द्वारा यह कहा जा रहा है कि हे महाराजा विश्वामित्र। आप बार-बार अपने यश के बारे में वर्णन करते हो, अगर इतने पर भी संतोष न हुआ हो तो फिर दोबारा कुछ कह दो। लेकिन आप क्रोध करना बन्द मत करो।

(ङ) (1) स्वभाव से विनम्र, शांत तथा वीर योद्धा।

(2) अभिमान न करना।

(3) दूसरों का आदर करना।

7. परशुराम के क्रोध का मूल कारण राम जी द्वारा शिव जी के धनुष को तोड़ना था। वे शिव जी के परम भक्त थे तथा नहीं चाहते थे कि कोई भी उस धनुष को तोड़े।

8. (क) 'गाधिसनु' विश्वामित्र को कहा गया है। वे मुनि परशुराम की इस बात पर मन ही मन मुस्कुरा रहे थे कि अन्य क्षत्रियों की तरह ही वे राम-लक्ष्मण को भी साधारण मानकर मार डालने की बात सोच रहे हैं जबकि राम-लक्ष्मण बहुत पराक्रमी योद्धा हैं। मुनि अज्ञानियों की तरह इनके प्रभाव को समझ नहीं पा रहे।

(ख) स्वयंवर स्थल पर शिव धनुष तोड़ने वाले को परशुराम ने यह कहते हुए धमकाया कि शिव धनुष को तोड़ने वाला सहसबाहु की तरह मेरा शत्रु है, उसे राज समाज से अलग कर दिया जाय नहीं तो सारे राजा मारे जाएँगे।

9. (घ) यह पंक्ति परशुराम जी को लक्ष्मण कहते है कि हमने तो बचपन में ऐसे बहुत से धनुष तोड़े थे, लेकिन कभी किसी ऋषि ने गुस्सा नहीं किया। यह बात इस लिए परशुराम को कही गई क्योंकि राम द्वारा धनुष तोड़े जोने पर परशुराम गुस्से में आ गए थे।

(ड़) लक्ष्मण ने शूरवीरों की निम्न विशेषताएँ बताई हैं- धैर्यवान, मृदुभाषी, कर्मवीर तथा शांत योद्धा।

10. 'कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती है। ''साना-साना हाथ जोड़ि'' पाठ के इस कथन में निहित जीवन मूल्यों को लेखक ने बाखूबी उकेरा है। लेखक बताते हैं कि वास्तव में यह एक सत्य है कि हमारे ग्रामीण समाज में महिलाएँ बहुत कम लेकर समाज को बहुत अधिक लौटाती हैं। वे घर भी संभालती है, बच्चों की देखरेख भी करती हैं और श्रम करके धनोपार्जन भी करती हैं। यह बात हमारे देश की आम जनता पर भी लागू होती है। जो श्रमिक कठोर परिश्रम करके देश की सड़कों, पुलों, रेलवे लाइनों का निर्माण करते हैं या खेतों में कड़ी मेहनत करके अन्न उपजाते हैं, उन्हें बदले में बहुत कम मजदूरी या लाभ मिलता है। लेकिन उनका श्रम देश की प्रगति में बहुत सहायक होता है। इस प्रकार देश की प्रगति में नागरिकों की अहम भूमिका है।

11. 'बादलों की गर्जना' का आह्वान कवि इसलिए करना चाहता है क्योंकि बादल जब गरजते हैं तो लोगों के मन में भी जोश आ जाता है।

12. (क) फसल को उपजाने के लिए नदी के पानी से सींचना पड़ता है, तब जाकर अन्न का उत्पादन होता है।

(ख) 'हाथों का स्पर्श' किसानों के परिश्रम व देखभाल को संबोधित करता है, जिसके द्वारा जल तथा अन्य तत्वों के योगदान से अन्न अथवा फसल परिपूर्ण रूप से उगती है।

(ग) फसल मिट्टी अति उपयोगी होती है। नदियों के जल, किसानों की मेहनत, दूध तथा हवा मिलने के बाद भी उपजाऊ मिट्टी के बिना फसल के लहलहाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है, क्योंकि मिट्टी ही फसल के लिए सभी पोषक तत्व प्रदान करती है।

13. 'छाया मत छूना'- कविता में कवि ने दुख का कारण बताते हुए कहा है कि पुरानी खट्टी-मीठी यादें, पुराने लोग, और बीता हुआ क्षण पुनः आने वाला नहीं बल्कि यही दुख का कारण है।

14. "छाया मत छूना" कविता में प्रभुता की शरण को मृगतृष्णा कहा गया है, क्योंकि जिस प्रकार चिलचिलाती धूप में रेगिस्तान पर पानी होने की मृगतृष्णा होती है, ठीक उसी प्रकार मनुष्यों के लिए धन-दौलत मात्र मृगतृष्णा के समान एक छलावा है। हर सुख के अंदर दुख का अस्तित्व सदा विद्यमान रहता है।

15. (ग) कवि ने यहाँ यथार्थ के पूजन की बात कही है जो कि बिल्कुल सही है। कवि यहाँ कहते हैं कि जो बातें हम भूल चुके हैं या फिर वे जो हमने भविष्य के लिए सोचकर रखी हैं, वे हमारे मन को दुखी करती हैं। कवि कहते हैं कि हमें मुश्किलों का सामना करना चाहिए तथा उनसे मुँह नहीं मोड़ना चाहिए। तभी हम अपने भले की ओर ध्यान दे पाएँगे, नहीं तो सब झूठ है। यथार्थ यही है कि हम अपने भविष्य की ओर देखें नाकि अपने अतीत को पकड़ कर रहें।

(घ) 'छाया' से तात्पर्य जीवन की भूली-बिसरी यादें हैं। इन्हें कभी छूना यानि याद नहीं करना चाहिए। क्योंकि कभी-कभी इनसे हमें काफी तकलीफ होती है। इसलिए हमें चाहिए कि हम उन यादों को भूलकर अपने वर्तमान को स्वीकार करें।

16. (क) 'छाया मत छूना'- कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि छाया से कवि का अभिप्राय पुरानी खट्टी-मीठी यादों से है। पुराने लोग, यादें और क्षण पुनः आने वाला नहीं बल्कि एक टीस देता है। इसलिए कवि ने ऐसा कहा है।

(ख) 'छवियों का चित्र-गंध फैली मनभावनी' से आशय बीते दिनों में साथ रहे लोगों से है जो कवि को अच्छे लगते थे उनके साथ रहने के पल, बातें आदि आज भी कवि के मन को लुभाती हैं।

(ग) 'कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी' में कवि को अपनी प्रिया के साथ बिताये पलों की याद आती है उसके बालों में लगे पुष्प गुच्छों की याद अभी भी चाँदनी को देखकर कवि के मन को कचोटती है।

17. इस कथन में बताया गया है कि कई बार हिम्मत होने के बाद आदमी दुविधा में पड़ जाता और उसे सही रास्ता नहीं दिखता है। यहाँ इसी यर्थाथ का चित्रण किया गया है। जैसे कई बार उचित समय पर मदद न मिलने की वजह से दुखी रहना।

18. माँ ने कहा लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' इस कथन के द्वारा माँ बेटी को समझाती है कि लोकव्यहवार में सावधान रहना। अपनी सरलता, भोलापन, समर्पण प्रकट मत होने देना नहीं तो लोग तेरा शोषण करेंगे।

19. कन्यादान कविता में माँ बेटी को सीख देती है कि तुम अपनी कोमलता और सुंदरता पर आकर्षित होकर मन ही मन खुश मत होना क्योंकि यह समाज स्त्री की सुंदरता, कोमलता और भावुकता को उसकी कमजोरी समझता है। माँ बेटी को समझाते हुए कहती है कि जो वस्तु जिस कार्य के लिए बनी है, उसी कार्य के लिए प्रयोग करना। आग रोटियां सेकने के लिए होती है जलने के लिए नहीं। अंततः मां बेटी से कहती है कि तुम समाज के किसी भी गलत कार्य को स्वीकार मत करना।

20. (क) लड़की का अपने चेहरे पर रीझना हानिकारक इसलिए है क्योंकि वहाँ पानी अधिक गहराई तक है, कहीं यह उसके लिए जानलेवा साबित न हो जाए।

(ख) 'आग' के माध्यम से समाज में फैली दहेज की समस्या की ओर संकेत है।

(ग) वस्त्र और आभूषण के प्रति नारी का आकर्षण स्वभाविक है क्योंकि वे नारी जीवन में शाब्दिक भ्रमों की तरह बंधन है।

(घ) क्योंकि वस्त्र और आभूषण के चक्कर में पड़कर स्त्री अपना सब कुछ भूल जाती है।

(ङ) माँ ने बेटी को यह सीख संसार की निमर्मता से बचने के लिए दी है।

21. यह सच है कि विदाई के क्षणों में माँ-बेटी का दुख बहुत बढ़ जाता है। क्योंकि कन्यादान के समय माँ को ऐसा लगता है कि उसने इतने सालों से पाल-पोस कर बेटी को बड़ा किया। लेकिन जब उसके विवाह के वक्त उसे विदा करना होता है तो ऐसे लगता है, मानों वह अपनी ज़िन्दगी का अंतिम खज़ाना होगा।

22. (ग) 'बेटी, अभी सयानी नहीं थी' में माँ की चिंता यह थी कि उनकी लड़की सीधी और भोली थी। उसे वैवाहिक जीवन के सुखों का कुछ-कुछ अहसास तो था किंतु झंझटों और दुखों का ज्ञान नहीं था। उसे सुख से छिपे दुखों की समझ नहीं।

(घ) 'कन्यादान' कविता में बेटी को 'अंतिम पूँजी' इसलिए कहा गया है क्योंकि माँ अपनी बेटी से सारे सुख-दुख बाँटती थी, वही उनके लिए सब कुछ थी।

23. (क) यह सत्य है कि अब जमाना बदल रहा है। लड़कियाँ चाहे कैसी भी हों, अब उनमें आत्मविश्वास बढ़ रहा है, वे अपने बलबूते पर एक मजबूत स्तम्भ की तरह खड़ी हो रही हैं। अब उनमें डर की भावना भी कम हो रही है।

(ख) हर माँ-बाप के लिए अपनी सन्तान किसी पूँजी से कम नहीं होती चाहे वह लड़का हो या लड़की। जब बेटियों के विवाह का समय आता है तो माँ-बाप को अपनी बेटी को किसी दूसरे को सौंपने में बहुत तकलीफ़ होती है, इसलिए कन्यादान करते समय उन्हें ऐसा लगता है कि मानों उनकी बेटी अंतिम पूँजी हो।

24. स्त्रियों का शोषण, कन्या का दान करके उसे त्याग देना।

25. (क) संगतकार साथ देता है मुख्य गायक का।

(ख) 'यों ही' के द्वारा संगतकार मुख्य गायक से यह कहना चाहता है कि तुम अकेले नहीं हो, मैं। भी तुम्हारे साथ में हूँ।

(ग) संगतकार की हिचक को विफलता इसलिए नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसके पास शक्ति और प्रतिभा है किंतु वह उसे मुख्य गायक को आगे बढ़ाने में लगा देता है और उसके पीछे हिचक कर गाता है।

(घ) कविता में मनुष्यता से यह अभिप्राय है कि संगतकार मुख्य गायक का सहायक होता है। वह अपने बल को मुख्य गायक का बल बनाता है। वह अपनी प्रतिभा शक्ति को मुख्य गायक की प्रतिभा शक्ति में खपा देता है। वह स्वयं पीछे रहकर उसे आगे बढ़ाता है। इन बातों से संगतकार की मनुष्यता का पता चलता है।

(ड.) संसार में इस तरह की मनुष्यता की यह उपयोगिता है कि संगतकार जैसे लोगों के कारण व्यक्ति का, समाज का तथा राष्ट्र का विकास होता है, भाईचारा बढ़ता है, सहयोग बढ़ता है तथा लोग एक दूसरे की मदद करने को प्रेरित होते हैं।

26. संगतकार वह व्यक्ति होता है जो प्रसिद्ध व्यक्ति की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान करता है परंतु स्वयं चर्चा में नहीं आता।

27. (क) छाया शब्द का अर्थ है भूतकाल की यादें।

(ख) कवि के जीवन की सुरंग-सुधियां उसकी भूतकाल की सुहावनी यादें हैं।

(ग) छवियों की चित्र–गंध का अर्थ भूतकाल की मोहक चित्रित यादें हैं।

(घ) कुंतल का अर्थ है सिर के बाल कविता में इसका प्रयोग बालों में लगे फूलों की मनोहर यादों का संकेत देता है।

(ड़) कविता में दुख के दूना होने का कारण भूतकाल की स्मृतियों का पुनः स्मरण करना है।

28. कवि के जीवन के सुरंग–सुधियां उसकी भूतकाल की सुहावनी यादें हैं।

29. संगतकार जैसे व्यक्ति की जीवन में बहुत उपयोगिता होती है। जब तक इन जैसे लोगों का सहयोग न हो तब तक गायक गायिका अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन नहीं कर सकते। इन्हीं की मदद से ही वे सफलता के शिखर तक पहुँच पाते हैं।

30. संगतकार मुख्य गायक का सहायक होता है। वह अपने बल को मुख्य गायक का बल बनाता है। वह अपनी प्रतिभा शक्ति को मुख्य गायक की प्रतिभा शक्ति में खपा देता है। वह स्वयं पीछे रहकर उसे आगे बढ़ाता है। इन बातों से संगतकार की उत्कृष्ट भावना की पुष्टि होती है।

31. (क) इस पंक्ति का भाव यह है कि संगतकार प्राचीन काल से ही मुख्य संगीतकार की संगीत गायन में मदद करता है, इसलिए यह परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है।

(ख) जब मुख्य गायक अंतरे की जटिल तान में खो जाता है तो संगतकार अपनी आवाज़ से मुख्य गायक की आवज़ को वापिस ले आता है तथा गान के 'स्थायी' भाव को संभाले रहता है।

(ग) संगतकार मुख्य गायक को उसके बचपन की याद दिलाता है तब मुख्य गायक को यह याद आता कि वह भी कभी संगतकार की तरह अपरिपक्व था।

32. संगतकार की हिचकती आवाज़ उसकी विफलता नहीं बल्कि सफलता है। यह उसकी संगीत में समझ की ओर भी इशारा करती है। संगतकार मुख्य गायक की आवाज़ से ऊपर आवाज़ नहीं करना चाहता। इसलिए वह हिचकती आवाज़ में ही गाता है।

33. स्त्री के जीवन में वस्त्र और आभूषण भ्रमों की तरह हैं, अर्थात् ये चीजें व्यक्ति को भरमाती हैं। ये स्त्री जीवन के लिए बंधन का काम करते हैं अतः इस बंधन में नहीं बँधना चाहिए। वस्तुतः समाज वस्त्र और आभूषण की बेड़ियों में जकड़कर स्त्री के अस्तित्व को सीमाओं में बाँध देता है।

34. संगतकार मुख्य गायक को प्रतिष्ठित करता है और स्वंय पृष्ठभूमि में रहता है उसका यह कार्य उसकी मनुष्यता का परिचायक है क्योंकि वह अपने साथी मुख्य गायक को ही प्रकाश में लाना चाहता है, स्वयं को नहीं अन्यथा उसका कार्य धोखा, छल, कपट कहा जाना जो इंसानियत के विरूद्ध है।

Smart Notes ....

Smart Notes ....

कृतिका

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

1. 'साना साना हाथ जोड़ि' में कहा गया है कि 'कटाओ' पर किसी दुकान का न होना वरदान है, ऐसा क्यों? भारत के अन्य प्राकृतिक स्थानों को वरदान बनाने में नवयुवकों की क्या भूमिका हो सकती है? स्पष्ट कीजिए।

[CBSE 2011] [4]

2. निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर दीजिए:

[CBSE 2011]

सिक्किम यात्रा के दौरान फौजी-छावनियां देखकर लेखिका के मन में उपजे विचारों को अपने शब्दों में लिखिए। [2]

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप दीजिए-

[CBSE 2011]

(क) 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर बताइए कि देश की सीमा पर फ़ौजियों को कैसी-कैसी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं। [2]

(ख) आज की पीढ़ीकुदरत की खूबसूरती को बिगाड़ रही है, उसे रोकने/समझाने के लिए आप क्या करेंगे? 'साना-साना हाथ जोडि' पाठ के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। [2]

4. देश के प्राकृतिक स्थानों के सौन्दर्य का आनन्द लेते समय अधिकांश सैलानी वहां के पर्यावरण को दूषित कर देते हैं। इस नैसर्गिक सौन्दर्य की सुरक्षा में आप अपने दायित्व का निर्वाह कैसे करेंगे? 'साना साना हाथ जोड़ि, पाठ के संन्दर्भ में उत्तर दीजिए। [CBSE 2015] [4]

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो।

[CBSE 2015]

(क) सिक्किम की यात्रा करते समय लेखिका को बौद्ध धर्म सम्बन्धी किन आस्थाओं और विश्वासों की जानकारी प्राप्त हुई तथा लेखिका ने उनके प्रति क्या प्रतिक्रिया अभिव्यक्त की? [2]

(ख) सिक्किम के यात्रा वृत्तान्त के दौरान लेखिका को सीमा पर तैनात सैनिकों को देखकर किस प्रकार की अनुभूति हुई? [2]

उत्तर माला

1. 'कटाओ' पर किसी दुकान का न होना वरदान इसलिए है क्योंकि अगर वहाँ दुकानें बन गई तो कटाओ का प्राकृतिक सौंदर्य दबने लगेगा साथ ही वहाँ की स्थानीय आबादी भी बढ़ेगी और पर्यटकों की भीड़ भी। अंततः वहाँ प्रदूषण अपने पैर पसारेगा, तरह-तरह की मुश्किलों का निर्माण होगा इसलिए, कटाओ में दुकानों का न होना ही उसके लिए वरदान है।

भारत के अन्य प्राकृतिक स्थलों को वरदान बनाने में नवयुवकों की अहम भूमिका हो सकती है, जैसे पर्यावरण प्रदूषण के बारे में उन स्थानों पर जाकर प्रचार-प्रसार के साथ लोगों में जागरूकता लाना, स्वच्छ भारत अभियान की जानकारी देना, वहाँ साफ-सफाई करना-करवाना, अनावश्यक दुकानों को स्थानिय लोगों की मदद से बंद करवाना आदि-आदि।

2. सिक्किम यात्रा के दौरान फौजी छावनियों को देखकर लेखिका सोचने लगी कि महानगर में रहते कभी ध्यान ही नहीं आया कि जिन बर्फीले इलाकों मे बैसाख के महीने में भी पाँच मिनट में ही हम ठिठुरने लगे थे, हमारे ये जवान पौष और माघ में भी जबकि सिवाय पेट्रोल के सब कुछ जम जाता है, तैनात रहते हैं। घुमावदार और खतरनाक रास्ते बनाने में कितने ही जवानों ने अपने प्राणों की आहूति दे दी।

3. (क) देश की सीमा पर जहां तापमान गर्मी में भी 15 डिग्री सेल्सियस होता है उस कड़कड़ाती ठंड में फौजी पहरा देते हैं जबकि हम वहां पर 1 मिनट भी नहीं रुक सकते हैं। हमारे फौजी सर्दी तथा गर्मी में वहां रहकर देश की रक्षा करते हैं ताकि हम चौन की नींद सो सके। सब जवान हर पल कठिनाइयों से जूझते हैं यह और अपनी जान हथेली पर रखकर जीते हैं। हमें सदा उनकी सलामती की दुआ करनी चाहिए तथा उनके परिवार वालों के साथ हमेशा सहानुभूति प्यार व सम्मान के साथ पेश आना चाहिए। वे देश के सच्चे जवान हैं और देशवासियों की सुरक्षा के लिए कठिन परिस्थितियों में भी निरंतर सजग रहते हैं।

(ख) सैलानी जब प्राकृतिक स्थानों के सौंदर्य का आनंद लेते हैं, तब वहां के पर्यावरण को अनजाने में ही प्रदूषित कर देते हैं। वहां तमाम खाली डिब्बे, कूड़ा कचरा, प्लास्टिक बैग, इत्यादि फेंककर वातावरण को प्रदूषित कर देते हैं। हमें वहां जाकर ऐसा नहीं करना चाहिए और साथियों को भी ऐसा करने से रोकना चाहिए। जन जागरूकता फैलाकर हम उन स्थानों को प्रदूषण से बचा सकते हैं। यही नहीं अपितु स्थानीय पक्षियों जानवरों पर प्रहार करना भी उचित नहीं है। वहां की वनस्पतियों को उखाड़ना भी अनुचित है। ऐसा करके हम प्राकृतिक सुंदरता को ठेस पहुंचाते हैं।

4. आज की पीढ़ी के द्वारा प्रकृति को काफी प्रदूषित किया जा रहा है। हमारे पर्यावरण में प्रदूषण की वजह से कार्बनडाइऑक्साइड की अधिकता बढ़ गई है। इसलिए हर स्थान रहने लायक नहीं रहा है, चाहे वह मैदानी इलाका हो या फिर पर्वतीय क्षेत्र। पर्वतीय क्षेत्र जो कि अपनी प्राकृतिक सुन्दरता तथा ताज़ेपन के लिए जाने जाते हैं, वे भी आज प्रदूषित हो रहे हैं। वहाँ की सुन्दरता भी समाप्त होती जा रही है। वहाँ भी पेड़ कट रहे हैं, जिससे मिट्टी कटाव हो रहा है। जोकि बाढ़ों को आमन्त्रित कर रहे हैं। नदियों का जल भी प्रदूषित हो रहा है। जो सैलानी इन पर्वतीय क्षेत्रों में जाते हैं, वे यहाँ के वातावरण में गंदगी फैला रहे हैं। हमें इन सब बातों को होने से रोकना चाहिए ताकि प्राकृतिक सुन्दरता बरकरार रहे।

5. (क) लेखिका ने सिक्किम की यात्रा करते समय यह जाना कि वहाँ के लोग बौद्ध धर्म को अपनाते हैं तथा पालन करते हैं। बाहर सफेद तथा रंगीन पताकाएँ दिखाई देती थीं, जोकि उनकी आस्थाओं को दिखाती थी। सफेद पताकाएँ अहिंसा एवं शांति के प्रतीक हैं तथा इन पर मंत्र लिखे होते हैं। जब किसी बौद्ध की मृत्यु होती है तो उसकी आत्मा की शांति के लिए 108 सफेद पताकाएँ फहराई जाती हैं। लेकिन जब कोई नया कार्य आरम्भ होता है, तब ये रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं।

(ख) लेखिका ने यह महसूस किया की देश की सीमा पर जहाँ का तापमान गर्मी के मौसम में भी ठिठुराने वाला होता है, उस कड़क ठंड में भी फौजी पहरा देते हैं। वे सर्दी-गर्मी वहाँ तैनात रहते हैं ताकि हम चैन से सो पाएँ। ये फौजी अपनी जान पर खेलकर तथा मुश्किलों का सामना करके जीते हैं। हमें हमेशा उनके प्रति श्रद्धावान तथा नतमस्तक होना चाहिए।

Smart Notes ....

Smart Notes .....

खण्ड घ

लेखन

पत्र, निबंध एवं विज्ञापन लेखन

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 80–100 शब्दों में अनुच्छेद लिखोः

[5 Marks] [CBSE 2011]

(क) पेड़ों का महत्व

(ख) महानगरों में आवास की समस्या

(ग) मदिरापान – एक घात व्यस्त

2. पत्र लेख [5 Marks] [CBSE 2011]

'सामाजिक सेवा कार्यक्रम' के दौरान किसी ग्राम में सफाई अभियान के अनुभवों का उल्लेख करते हुए मित्र को पत्र लिखो–

अथवा

समस्त औपचारिकताएँ पूर्ण करने के बाद भी 'आधार पहचान पत्र' न मिलने की शिकायत करते हुए अपने क्षेत्र के संबद्ध अधिकारी को पत्र लिखो।

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर निबन्ध लिखिएः

[5 Marks] [CBSE 2012]

(क) विद्यालय का वार्षिक उत्सव

विद्यालय का जीवन, वार्षिक उत्सव का दिन, उत्सव का विवरण, आपकी भूमिका।

(ख) परिश्रम ही जीवन का आधार

परिश्रम का महत्व, जीवन में उसकी उपयोगिता, भाग्यवाद का निराकरण।

4. छोटे भाई को पत्र लिखकर मालूम कीजिए कि उसकी पढ़ाई कैसी चल रही है? साथ ही उसे पढ़ाई के सम्बन्ध में कुछ उपयोगी बातें भी बताइए।

[5 Marks] [CBSE 2012]

अथवा

अपने नगर के चिड़ियाघर को देखने पर वहाँ की अव्यवस्था से आपको बहुत दुख हुआ। इस अव्यवस्था के प्रति चिड़ियाघर के निदेशक का ध्यान आकृष्ट करते हुए एक पत्र लिखिए।

5. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिएः [5 Marks] [CBSE 2013]

(क) अविस्मरणीय घटना

कब और कहाँ

आपकी भूमिका

आप पर प्रभाव

(ख) मेरे सपनों का जीवन

महत्वाकांक्षा

रुचि का महत्व

लक्ष्य-निर्धारण

(ग) ओलम्पिक खेलों में भारत

खेलों का महत्व

विजेता खिलाड़ी

भारत का स्थान

6. विदेश यात्रा में सभी प्रकार की व्यवस्था करने वाले मित्र के प्रति आभार की अभिव्यक्ति करते हुए एक पत्र लिखिए। [5 Marks] [CBSE 2013]

अथवा

विद्यालय में दसवीं कक्षा की परीक्षा से पूर्व विभिन्न विषयों के अध्यापन की अच्छी व्यवस्था करने के लिए प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों के प्रति कृतज्ञा ज्ञापन का एक पत्र लिखिए।

7. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 80–100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखोः

[5 Marks] [CBSE 2015]

(क) जब मैंने पहली बार साइकिल चलाई–

कब, कौन-सी साइकिल चलाई

कठिनाइयाँ

चलाने का आनन्द

(ख) प्रिय मित्र

प्रिय होने का कारण

परस्पर संबंध

(ग) मेरे पड़ोसी

कौन

उनकी अच्छाई/बुराई

हमारे संबंध

8. उत्तराखण्ड त्रासदी से पीड़ित मित्र को पुनः पैरों पर खड़ा होने की प्रेरणा देते हुए पत्र लिखो।

[5 Marks] [CBSE 2015]

अथवा

अपने नगर के शिक्षा अधिकारी को पत्र लिखकर विद्यालयों में दोपहर के समय वितरित किए जाने वाले भोजन के गिरते स्तर की ओर उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए।

9. किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिएः

[5 Marks] [CBSE 2016]

(क) सफलता की कुंजी : मन की एकाग्रता

- मन की एकाग्रता क्या और क्यों
- सफलता की कुंजी
- सतत अभ्यास

(ख) पश्चिम की ओर बढ़ते कदम

- पश्चिम की चमक-दमक
- आकर्षण के कारण
- बचाव

(ग) इंटरनेट का प्रभाव

- इंटरनेट–क्या है
- मानव मन पर प्रभाव
- सदुपयोग

10. प्लास्टिक की चीजों से हो रही हानि के बारे में किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखकर अपने सुझाव दीजिए। [5 Marks] [CBSE 2016]

अथवा

तेजस्विन आपका मित्र है और उसने राष्ट्रीय स्तर पर ऊँची कूद में स्वर्ण पदक प्राप्त कर देश का नाम रोशन किया है, उसे बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

11. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिएः [5 Marks] [CBSE 2016]

वर्तमान समय में प्रगतिशील भारत के सामने जो समस्याएँ सुरसा के मुँह की तरह मुँह खोले खड़ी हैं, उनमें बढ़ती जनसंख्या एक विकराल समस्या है। इसके साथ अन्य समस्याएँ भी हैं; जैसे, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आदि। इन सभी समस्याओं में जनसंख्या की समस्या काफी जटिल है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या के अनेक कारण हैं, जैसे–अशिक्षा और अंधविश्वास। अधिकतर लोग बच्चों को भगवान की देन मानकर परिवार नियोजन को अपनाना नहीं चाहते। इस संबंध में सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए गए हैं। जनसंचार माध्यमों द्वारा परिवार नियोजन के संबंध में व्यापक प्रचार किया गया है और किया जा रहा है। अनेक संस्थाएँ भी इस दिशा में कार्य कर रही हैं, फिर भी आशानुरूप सफलता नहीं मिल पाई है। भारत की जनसंख्या विश्व की कुल जनसंख्या का पाँचवाँ भाग है। यहाँ हर वर्ष एक नया ऑस्ट्रेलिया बन जाता है। अतः यहाँ कृषि के लिए भूमि का अभाव हो गया है। आवास की बढ़ती हुई समस्या के कारण यहाँ हरे-भरे जंगलों के स्थान पर कंकरीट के जंगल बन रहे हैं। अमूल्य वन संपदा का विनाश दुर्लभ वनस्पतियों का अभाव, वर्षा पर घातक प्रभाव पड़ रहा है। बेकारी बढ़ रही है। लूट, हत्या, अपहरण जैसी वारदातों को बढ़ावा मिल रहा है। जनसंख्या की समस्या का समाधान कानून द्वारा नहीं जनजागरण तथा शिक्षा द्वारा ही संभव है।

12. किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखो।

[5 Marks] [CBSE 2017]

(क) एक रंगारंग

(ख) वन और पर्यावरण

(ग) मीडिया की भूमिका

13. पी.वी. सिंधु को पत्र लिखकर रियो ओलंपिक में उसके शानदार खेल के लिए बधाई दो और उनके खेल के बारे में अपनी राय लिखो।

[5 Marks] [CBSE 2017]

अथवा

अपने क्षेत्र में जल-भराव की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखो।

14. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिख कर एक तिहाई शब्दों में सार लिखो- [5 Marks] [CBSE 2017]

संतोष करना वर्तमान काल की सामयिक आवश्यक प्रासंगिकता है। संतोष का शाब्दिक अर्थ है 'मन की वह वृत्ति या अवस्था जिसमें अपनी वर्तमान दशा में ही मनुष्य पूर्ण सुख अनुभव करता है।' भारतीय मनीषी ने जिस प्रकार संतोष करने के लिए हमें सीख दी है उसी तरह असंतोष करने के लिए भी कहा है। चाणक्य के अनुसार हमें इन तीन उपक्रमों में संतोष नहीं करना चाहिए। जैसे विद्यार्जन में कभी संतोष नहीं करना चाहिए कि बस, बहुत ज्ञान अर्जित कर लिया। इसी तरह जप और दान करने में भी संतोष नहीं करना चाहिए। वैसे संतोष करने के लिए तो कहा गया है- -जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।' 'हमें जो प्राप्त हो उसमें ही संतोष करना चाहिए।' 'साधु इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय, मैं भी भूखा न रहूँ, साधू न भूखा जाए।' संतोष सबसे बड़ा धन है। जीवन में संतोष रहा, शुद्ध-सात्विक आचरण और शुचिता का भाव रहा तो हमारे मन के सभी विकार दूर हो जाएँगे और हमारे अंदर सत्य, निष्ठा, प्रेम, उदारता, दया और आत्मीयता की गंगा बहने लगेंगी। आज के मनुष्य की सांसारिकता में बढ़ती लिप्तता, वैश्विक बाजारवाद और भौतिकता की चकाचौंध के कारण संत्रास, कुंठा और असंतोष दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। इसी असंतोष को दूर करने के लिए संतोषी बनना आवश्यक हो गया है। सुखी और शांतिपूर्ण जीवन के लिए संतोष सफल औषधि है।

15. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। [5 Marks] [CBSE 2018]

(क) महानगरीय जीवन

(ख पर्वों का बदलता स्वरूप

(ग) बीता समय फिर लौटता नहीं

16. आपके क्षेत्र के पार्क को कूड़ेदान बना दिया गया था। अब पुलिस की पहल और मदद से पुनः बच्चों के लिए खेल का मैदान बन गया है। अतः आप पुलिस आयुक्त को धन्यवाद पत्र लिखिए।

[5 Marks] [CBSE 2018]

अथवा

पटाखों से होने वाले प्रदूषण के प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

17. पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए लगभग 50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

[5 Marks] [CBSE 2018]

अथवा

विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा निर्मित हस्तकला की वस्तुओं की प्रदर्शनी के प्रचार हेतु लगभग 50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर माला

1. (क) पेड़ों का महत्व

पेड़ प्रकृति द्वारा दिए गए बहुत ही सुंदर तथा अनमोल तोहफे हैं। ये मानव जाति के सबसे अच्छे दोस्त हैं। पेड़ों के बिना मानव जीवन असम्भव है। साथ ही कार्बन डाईऑक्साइड जैसी गैसों को खुद में ग्रहण कर लेते हैं। पेड़ तो कई जानवरों तथा पक्षियों का निवास स्थल भी होते हैं। पेड़ भूमि को उपजाउ बनाते हैं हमें अच्छी फसल देते हैं। वे फल और फूलों के स्त्रोत भी हैं, गर्मियों में हमें छाया देते हैं, बरसात में शरण देते हैं। पेड़ों से हमें कई तरह की दवाइयाँ, रबड़ से बनी वस्तुएँ भी प्राप्ति होती है। पेड़ हमें प्रदूषण से भी बचाते हैं, इसलिए इनका बहुत महत्व है।

(ख) महानगरों में आवास की समस्या

आधुनिक युग में महानगरों में रहना एक बहुत बड़ी समस्या होती जा रही है। इसका सबसे बड़ा कारण है, जनसंख्या। जनसंख्या में भी दिन-प्रतिदिन, इजाफा होता जा रहा है, जिससे रहने की जगह कम होती जा रही है। पेड़ कट रहे हैं जिससे अन्य नई समस्याएँ जन्म ले रही हैं। महानगरों की चकाचौंध से आकर्षित

होकर गाँव के युवा लोग शहरों/महानगरों की ओर भाग रहे हैं, लेकिन महानगर में पहुँचने पर बेरोजगारी की समस्या से दो चार होना पड़ता है। इस प्रकार वे युवा जो गाँव से यहाँ तक आते हैं, वे स्लम बस्तियों के चक्कर में घुस जाते हैं, क्योंकि शहरों के महँगे घरों का किराया नहीं दे पाते। इस प्रकार महानगरों में झुग्गियों की संख्या बढ़ती जा रही है।

(ग) मदिरापान

मदिरापान समाज की सबसे बड़ी बुराइयों में से एक बुराई है। इसे सामाजिक कलंक कहा जाए तो उचित ही होगा। जब हमारे अन्दर शराब जाती है तो हमारे संस्कार, विचार, अच्छा व्यवहार सब बाहर निकल जाते हैं। किसी विद्वान ने सही कहा था कि मदिरा इसांन को शैतान बना देती है। साथ ही उसके स्वास्थ्य पर भी बहुत बुरा असर डालती है। इससे फेफड़े, गूर्दे, लीवर तथा दिमाग पर बहुत बुरा असर पड़ता है। शराब की अगर लत लग जाती है तो इससे घर की आर्थिक स्थिति भी बिगड़ जाती है। साथ ही घर में माहौल खराब हो जाता है। जब घर में पैसे की कमी हो जाती है तो शराब के आदी लोगों को चोरी करने की आदत पड़ जाती है। लेकिन अब समय आ गया है कि इस बुरी समस्या का निदान सोचें। इस लत पर अपने आत्मविश्वास से नियंत्रण पाया जा सकता है। आत्म-नियंत्रण इस लत पर काबू पाने की सबसे बड़ी दवा है।

2. परीक्षा भवन,

नई दिल्ली, 110010,

कः खः गः।

दिनांक 10/7/2018

प्रिय राजेश,

स्नेह।

कहो, कैसे हो? आशा करता हूँ सब कुशल मंगल होगा। मैं भी यहाँ ठीक-ठाक हूँ।

आपको तो पता ही है कि मुझे लोगों की मदद करने में कितना मजा आता है। इसी शौक के तहत मैंने हाल ही में एक ''सामाजिक सेवा कार्यक्रम'' में हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम के दौरान हमें दिल्ली के ही एक गाँव मकसूदपुर में ले जाया गया। जहाँ पहुँचकर हमने बहुत सारे कामों में हिस्सा लिया तथा उस गाँव के विकास में योगदान देने का प्रथम कदम उठाया। उस गाँव के बच्चों को पढ़ाया, बुजुर्गों को इलाज के लिए कुछ स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध करवाई। लड़कियों तथा स्त्रियों को शिक्षा/पढ़ाई के प्रति जागरूक करवाया तथा छोटे बच्चों को स्कूलों की जानकारी दी। इस प्रकार इस कार्य को करते हुए मुझे बहुत मजा आया।

चलो, अब पत्र बन्द करता हूँ। आपको मेरी जानकारी कैसी लगी, इसका जवाब मुझे अवश्य देना।

घर में सबको प्रणाम।

आपका दोस्त,

च छ ज।

अथवा

सेवा में,

भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण,

संसद मार्ग,

नई दिल्ली।

विषय-समस्त औपचारिकताओं के बावजूद आधार पहचान पत्र का न मिलना।

महोदय,

मैं दिल्ली के मालवीय नगर का निवासी हूँ। मैंने लगभग 2 महीने पहले आधार पहचान पत्र पाने के लिए आवेदन किया था। उसी से संबंधित जितनी भी औपचारिकताएँ थी,वे सभी समय पर पूरी कर दी गई थी। लेकिन अभी तक मुझे मेरा आधार पहचान पत्र नहीं मिला है। इसी संबंध में मैं कई बार आधार कार्ड कार्यालय के अधिकारियों से पूछताछ कर चुका हूँ। लेकिन उन्होंने कोई उचित जानकारी नहीं दी। लेकिन आधार पहचान पत्र न मिल पाने के कारण मुझे और मेरे परिवार को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। कई सरकारी योजनाओं के लाभ भी नहीं मिल पाए।

महोदय, मुझे आधार पहचान पत्र की बहुत आवश्यकता है। आपसे निवेदन है कि मेरा आधार कार्ड शीघ्र अतिशीघ्र दिलवाने की कोशिश करें, आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद।

भवदीय,

क ख ग।

दिनांक-10/7/2018

3. (क) विद्यालय का जीवन बहुत ही अनुशासन रहता है। व्यक्ति बहुत समझदार और आत्मनिर्भर हो जाता है।

इस रविवार हमारे विद्यालय में वार्षिक उत्सव हुआ जिसके लिए सभी छात्र छात्राएं काफी उत्साहित थे। वार्षिक उत्सव के मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री थे जिन्होंने उत्सव की काफी प्रशंसा की। वार्षिक उत्सव में सभी के माता-पिता आए थे और वही भोजन भी हुआ।

उस दिन विद्यालय में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए थे जैसे कि नृत्य संगीत और वाद-विवाद। मैंने विद्यालय की कुछ छात्राओं के साथ समूह में नृत्य प्रस्तुत किया जिसकी तैयारी हम पिछले महीने से कर रहे थे। सभी लोगों के लिए वार्षिक उत्सव काफी आनंदमय रहा।

(ख) परिश्रम ही जीवन का आधार

हमारे जीवन में परिश्रम अति महत्वपूर्ण है। परिश्रम के बिना तो पशु-पक्षी भी अपना भोजन या जीवन यापन नहीं कर सकते हैं। परिश्रम हमारे जीवन में सहनशीलता लाता है व परिश्रम से प्राप्त हुए सभी सफलताओं का एक मधुर आभास कराता है। परिश्रमी व्यक्ति अपनी हार से कभी विचलित नहीं होता तथा समाज में भी लोगों के हृदय में एक उच्च श्रेणी प्राप्त करता है।

इस बात से संकोच नहीं कि भाग्य मनुष्य की सफलताओं में योगदान देता है किंतु बिना परिश्रम भाग्य भी किसी कार्य का नहीं रहता। भाग्यवादी मनुष्य सदा भाग्य को बोल देते हैं तथा पर्याप्त परिश्रम ना कर पाने के कारण उनकी सफलता अपूर्ण रह जाती है। इसलिए परिश्रम बिना कोई सफलता परिपूर्ण नहीं होती।

4. पंजाबी बाग

नई दिल्ली।

दिनाँक - 25/08/18

प्रिय,

मैं यहां कुशल से हूँ और आशा करती हूँ कि तुम भी वहां कुशल होंगे। माताजी ने बताया कि तुम्हारी परीक्षाएं आरंभ होने वाली हैं। मुझे उम्मीद है कि तुम मन लगाकर पढ़ रहे होगे। यदि तुम अच्छे से नहीं पढ़ोगे तो परीक्षा के समय तुम्हें परेशानी होगी।

मैं तुम्हें यह सलाह देना चाहूँगी कि तुम सुबह उठकर पढ़ाई किया करो और साथ ही में जो कार्य पूर्ण हो गए होंगे उनका भी संशोधन करते रहो। इसके साथ अपनी सेहत का भी ध्यान रखना। एक दिन में तुम कई विषय एक साथ पढ़ लिया करो जिससे कि तुम्हारी हर विषय में रुचि बनी रहें माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और छोटी बहन को खूब सारा प्यार।

तुम्हारी प्रिय बहन,

क; ख; ग;

अथवा

सेवा में,

निदेशक,

चिड़ियाघर,

चांदनी चौक, दिल्ली-110006

विषय - चिड़ियाघर की अव्यवस्था के संबंध में

महोदय,

चिड़ियाघर में फैली गंदगी की ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित कराना चाहती हूँ। मैं कुछ दिन पहले चिड़ियाघर गई थी और वहां चारों तरफ बदबू फैल रखी हुई थी। साथ ही में चिड़ियाओं को भोजन समय पर नहीं दिया जा रहा था और चारों और कूड़ा फैला हुआ था। यदि यह कूड़ा नहीं उठाया गया तो बीमारियां फैल सकती हैं।

आशा है आप चिड़ियाघर के सफाई कर्मचारियों को तुरंत उचित निर्देश देकर कार्यवाही करेंगे और साथ ही में चिड़ियों का पूरा ध्यान रखा जाए।

भवदीय,

क. ख. ग.

जनकपुरी नई दिल्ली

दिनाँक - 25/08/18

5. (क) हर इंसान की जिन्दगी में कभी-कभी कुछ घटनाएँ ऐसी हो जाती है जो हमेशा के लिए एक याद बन कर रह जाती है। मेरे भी जीवन में एक ऐसी घटना घटी जो हमेशा के लिए मेरे मानस पटल पर रह गई। यह उस समय की बात है जब मैंने कक्षा 10 में प्रवेश ही लिया था मुझे और मेरी माँ को रक्षा बन्धन पर मामाजी के घर हिसार जाना था। पिताजी ने हमें रेवाड़ी रेलवे स्टेशन से गाड़ी में चढ़ा दिया था तथा वे वापिस घर चले गए। हम दोनों गाड़ी में आराम से बैठे हुए थे तथा सहयात्रियों से बातचीत कर रहे थे। तभी अचानक गाड़ी झटके से खाने लगी। हम सब डर गए तथा खिड़की से बाहर झाँकने लगे। तभी गाड़ी थोड़ी सी टेढ़ी होने लगी तो ऐसे लगा की गाड़ी आज पलट जाएगी। फिर गाड़ी झटके से रूकी तथा टेढ़ी ही खड़ी हो गई। हम सब लोग जल्दी-जल्दी गाड़ी से बाहर आए तब पता चला कि गाड़ी के कुछ डिब्बे पटरी से उतर गए थे। यह तो भगवान का शुक्र था कि गाड़ी उलट नहीं गई और हम सब बच गए। थोड़ी ही देर के बाद घोषणा हुई कि सभी यात्री गाड़ी से अपना-अपना समान निकाल लें और दूसरी गाड़ी जो कुछ ही देर में आने वाली है, उस पर सवार हो जाएँ तथा अपने-अपने स्टेशनों पर उतर जाएँ। इस प्रकार थोड़ी देर के बाद के जब दूसरी गाड़ी आई तो हम सब

यात्री उस गाड़ी में बैठे और हिसार पहुँचे। इस प्रकार यह घटना मैं कभी-भी नहीं भूल पाऊँगी।

(ख) बचपन में ही हमें सिखाया जाता है। कि सफल जीवन का सपना देखो। एक सफल इंसान बनो तथा अपने सपने को पूरा करने की उम्मीद हमेशा रखो, क्योंकि उम्मीद पर ही दुनिया कायम है।

हर इंसान का कोई न कोई एक सपना अवश्य होता है, जिसे पूरा करना उसके जीवन का लक्ष्य बन जाता है। मेरे भी जीवन का एक सपना था- एक सफल वैज्ञानिक तथा पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम की तरह बनना। अर्थात् मैं, अपने पूर्व राष्ट्रपति की तरह एक अच्छा सफल इंसान बनना चाहता था। मैंने इंटरनेट पर उनके बारे में न जाने कितनी खोजबीन की। आखिर में मुझे अपने जीवन का सबसे हसीन सपना पूरा करने का मौका भी मिल गया। लेकिन साथ ही यहाँ युक्तियाँ भी मिल गई है- अपना लक्ष्य याद रखें। स्वयं को पुरूस्कृत करें। कुछ समय के लिए छुट्टी लें। सकारात्मक सोच रखें तथा सकारात्मक लोगों के साथ रहें। जब कभी गलती हो जाए तो उसी से सबक लें। इस प्रकार मंजिल ही मिल जाएगी।

(ग) ओलम्पिक खेलों में सन् 1900 में भारत ने सबसे पहली बार हिस्सा लिया था। जिसमें सिर्फ एक भारतीय खिलाड़ी था इस दौरान उससे दो सिल्वर मेडल जीते। 1920 ओलम्पिक में भी ग्रीष्म कालीन हमारे देश ने एक पूरी टीम भेजी तथा उस समय के बाद से हर ग्रीष्म कालीन ओलम्पिक में खेलने के लिए भेज दिया जाता था। अभी हाल में हुए 2016 के ग्रीष्म कालीन ओलम्पिक में भारत के लगभग 118 सदस्यों/खिलाड़ियों ने भाग लिया था तथ वहाँ से बहुत से मेडल जीकर लौटे थे। 1920 से 1980 के लंबे समय तक ओलम्पिक में भारतीय हॉकी टीम का काफी दबदबा रहा है। लेकिन अब अधिकतर खेलों में भारत अपनी पहचान बनाता जा रहा है।

6. सेवा में,

परीक्षा भवन,

नई दिल्ली-110070,

क. ख. ग.

प्रिय कमल, स्नेह।

आशा है कि आप सब कुशलतापूर्वक होंगे। हम भी यहाँ सब ठीक-ठाक हैं। आपकी बहुत याद आ रही है। हम अभी दो दिन पहले ही आपके पास (लंदन) से लौटे हैं। यहाँ आकर बहुत अच्छा लगा। गर्मी की छुट्टियों का फायदा इस बार बहुत अच्छे से उठाया। जब हम आपके पास लंदन आए थे, तो पता नहीं चला कि दिन कब खत्म हो गए। आपके पास आने के बाद हमें अपने घर में और आपके घर में कोई अन्तर ही नहीं लगा, क्योंकि आपने इतने अच्छे से इंतजाम किए थें। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करते हुए अब यह पत्र बन्द करता हूँ घर में सब को प्रणाम।

भवदीय,

च, छ, ज।

अथवा

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

डी. पी. एस. विद्यालय,

नई दिल्ली- 110070

दिनाँक - 10/7/18

विषय - प्रधानाचार्य तथा अध्यापको के प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्ति का एक पत्र।

महोदय,

मैं च.छ.ज. आपके विद्यालय कक्षा 10वीं कक्षा का छात्र हूँ। मैंने यह पत्र आप सभी अध्यापकों तथा प्रधानाचार्य के लिए लिखा है जिसमें मैंने आप सब का धन्यवाद करने का निश्चय किया है। आपने कड़ी मेहनत करके हमें आज इस मंजिल तक ला खड़ा किया है। बस कुछ ही दिनों में फाइनल परीक्षा होने वाली है। हम अब पूरी तरह से परीक्षा के लिए तैयार है। इस तैयारी में आप सभी का बहुत बड़ा योगदान है मैं आप सब का आभार प्रकट करता हूँ तथा बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। आशा है आप मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करेंगे।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

क, ख, ग।

कक्षा 10A

7. (क) **जब मैंने पहली बार साइकिल चलाई**

यह उन दिनों की बात है, जब मैं कक्षा 5 में थी। गर्मी की छुट्टियाँ चल रही थीं। घर पर चचेरे तथा ममेरे भाई-बहन आए हुए थे। हम सब लोग मजे कर रहे थे। अचानक एक दिन पिताजी ने सबसे पूछा कि क्या उन सबको साइकिल चलानी आती है? तो मेरे सभी भाई-बहनों ने हाँ में जवाब दिया। अकेली मैं ही थी, जिसे साइकिल चलानी नहीं आती थी। तब मेरे

पिताजी ने मेरे हम उम्र भाइयों तथा बहनों लेकिन घर में छोटी साइकिल तो थी नहीं। तब पिताजी मेरे लिए एक नई साइकिल लाए और मेरे भाईयों तथा बहनों ने मिलकर मुझे साइकिल सिखाई। शुरू में तो बहुत बार गिरी, लेकिन धीरे-धीरे संभल गई तथा एक दो दिन के अन्दर ही साइकिल पूरी तरह चलाना सीख गई। इस प्रकार सीखते हुए मैंने पूरी तरह से साइकिल चलाना सीख लिया। आज जब भी कोई राशन का सामान बाजार से लाना होता है तो माँ मुझे साइकिल से लाने को कहती हैं।

(ख) **प्रिय मित्र**

कहते हैं कि जीवन में और कुछ हो या न हो लेकिन एक सच्चा तथा प्रिय मित्र होना बहुत आवश्यक है। जीवन में सच्चे मित्र का दिल में एक अलग स्थान होता है। सच्चा मित्र वही होता है जो कि मुसीबत पर हमेशा आपके साथ होता है। ऐसी ही मेरी एक मित्र है सेजल। वह स्वभाव से बहुत अच्छी है तथा मिलनसार है। किसी भी काम के लिए उसे अगर कहा जाए तो वह कभी भी मना नहीं करती, हमेशा मदद के लिए तैयार रहती है। जब कभी मैं निराश होती हूँ या उदास होती हूँ, वह हमेशा मुझे खुश करने की कोशिश करती है। किसी भी विषय पर उससे अगर मदद माँगनी हो तो मैं बेहिचक कह देती हूँ। यहाँ तक कि वह मेरे घर भी आकर मेरी मदद कर देती है। इसीलिए वह मुझे बहुत प्रिय है। भगवान ऐसे मित्र सबको दें।

(ग) **मेरे पड़ोसी**

कहते हैं कि अच्छा पड़ोसी बड़े ही नसीब से मिलता है। क्योंकि जब कभी भी जरूरत पड़ती है तो रिश्तेदारों से पहले पड़ोसी ही मदद करते हैं। हमारे घर के बिल्कुल पास बंसल अंकल तथा आंटी रहते हैं जो कि बहुत अच्छे पड़ोसी हैं। अंकल जी, तो कोई भी बात हो, काम हो, बिना कहे ही उसका हिस्सा बन जाते हैं तथा समस्याओं को सुलझा देते हैं। ऑटी जी की तो बात ही निराला है, बाजार जाना हो, तब आंटी जी सलाह देती है कि कहाँ जाना बेहतर होगा, कोई भी पकवान बनाना हो, तब आंटी जी हाजिर हो जाती है। किसी की शादी की तैयारियाँ करनी हो तब वहाँ ऑटीजी न पहुँचे, ऐसा नहीं हो सकता। किसी के घर में कोई दुःख की घड़ी हो तब वहाँ भी आंटीजी पहुँच जाती है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि दुनिया का कोई भी काम बिना आंटी के नहीं हो सकता। यही अपनेपन की भावना ही ने हम सबको उनके साथ जोड़ा हुआ है। हम सब भी उनको बहुत प्यार करते हैं। ऐसे पड़ोसी मिलना किस्मत की बात होती है। भगवान आंटी जी तथा अंकल जी को अच्छी सेहत दे, जिससे कि वे इसी तरह ऊर्जावान रहें तथा सबको एकता के धागे में पिरोकर रखे।

8. उत्तराखण्ड त्रासदी से पीड़ित मित्र को पुनः पैरों पर खड़ा होने की प्रेरणा देते हुए पत्र लिखें।

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

कः खः गः,

दिनांक 12/07/18

प्रिय मित्र राजेश,

स्नेह।

कहो कैसे हो? आशा करता हूँ कि अब वहाँ सब कुशल मंगल होगा। अंकल जी व ऑटीजी भी ठीक होंगे। हम सब भी यहाँ ठीक है और दिन-रात आप सब की कुशलता चाहते हैं।

यह जानकर अच्छा लगा कि अब उत्तराखंड में जीवन फिर से चलने लग गया है। उत्तराखण्ड की त्रासदी ने वहाँ के लोगों का जीवन अस्त व्यस्त कर दिया था। सब कुछ पानी से सरोबार हो गया था। अब जब खबरों में देखा कि वहाँ सब कुछ ठीक हो गया है, तो मैंने यह पत्र लिखने की सोचा। अब आप अपनी जीवन की नैया को पार लगाना शुरू करो। फिर से दुकान पर जाना शुरू करो। भगवान ने अगर ये दिन दिखाएँ हैं तो वे अच्छे दिन भी दिखाएँगे। किसी भी चीज की जरूरत हो तो मुझे अवश्य बताना। मैं हमेशा एक फोन कॉल दूर हूँ। हिम्मत से काम लो तथा फिर से अपने पैरों पर जमकर खड़े हो जाओ। चलो, अब पत्र बन्द करता हूँ, मेरे पत्र का जवाब अवश्य देना।

आपका दोस्त,

च छ ज

अथवा

सेवा में,

शिक्षा अधिकारी

नई दिल्ली-70

दिनांक- 12/07/2018

विषय - विद्यालयों में दोपहर के समय वितरित किए जाने वाले भोजन के गिरते स्तर की ओर आकर्षित करने हेतु पत्र।

महोदय,

मैं कःखःगः वसन्त कुँज के एक सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चे का बड़ा भाई हूँ। हाल ही में मेरे छोटे भाई की तबीयत खराब हो गई थी, उसका पेट खराब हो गया था। यह सिर्फ एक दिन की बात नहीं बल्कि यह रोज हो रहा है तो डॉक्टर के पास लेकर गए तो उन्होंने कहा कि यह सब ठीक खाना न खाने की वजह से हो रहा है। तब पता चला कि यह सब विद्यालय में वितरित होने वाले खाने की वजह से हो रहा है, जो कि काफी गंदा है। ऐसा खाना परोसा जा रहा है जिसमें सड़ी हुई सब्जियों तथा गुणहीन दालों का इस्तेमाल हो रहा है। ऐसा कब तक चलेगा। हमने मिलकर विद्यालय प्रबन्धक से भी शिकायत की थी। लेकिन उन्होंने एक न सुनी। अतः आपसे निवेदन है कि आप इस तरफ ध्यान दें ताकि बच्चों के जीवन से खिलवाड़ न हो। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद

भवदीय,

कः खः गः

9. (क) **सफलता की कुंजी – मन की एकाग्रता**

जब हम मेहनत करते हैं तो उसका नतीजा जब अच्छा होता है तो हमारा जीवन सफल हो जाता है। अगर हम यही काम मन की एकाग्रता के साथ करते हैं तो मन को और भी खुशी से मिलती है। सफलता पाने की यही सबसे बड़ी कुंजी है। किसी भी काम को करने से पहले आपको अपना ध्येय/उद्देश्य निश्चित करना चाहिए। ध्येय के बगैर कोई भी काम सफल नहीं होता/उद्देश्य प्राप्ति के लिए बड़ी मेहनत करना बहुत जरूरी है, यह कभी भी व्यर्थ नहीं जाती। जब हम कोई भी काम कर रहे होते हैं तो उसके लिए मन की एकाग्रता का होना ही सफलता की निशानी है। क्योंकि जब हम एकाग्र होते है तो हमारी शक्ति जागृत हो जाती है। इससे हमारे सामने आने वाली मुश्किलें खत्म हो जाती हैं या फिर न के बराबर हो जाती हैं। जब हम योग में ध्यान करते हैं तो हमारा दिमाग शांत तथा स्थिर होता है। उस समय हमें सिर्फ ध्यान ही लगाना चाहिए और इधर-उधर की बातों में ध्यान नहीं लगाना चाहिए। इसी तरह हम अभ्यास करते-करते एकाग्र होना शुरू हो जाते हैं। जब हमारी इन्द्रियाँ स्थिर हो जाती हैं तो हमारे द्वारा कोई भी काम सफल होगा ही। जब कोई व्यक्ति पिआनो बजाता है तो वह इतना एकाग्र हो जाता है कि उसे पता ही नहीं चलता कि उसकी उंगलियाँ कैसे चल रही हैं। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि इतने एकाग्रशील हो गये थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि कब उनके शरीर में दीमक ने घर बना लिया। इसलिए यह सत्य है कि एकाग्रता ही सफलता की कुंजी है।

(ख) **पश्चिम की ओर बढ़ते कदम**

भारतीय संस्कृति और सभ्यता विश्व में बहुत प्रसिद्ध हैं। हमारी परम्पराएँ, संस्कार, त्योहार तथा रीति रिवाज़ हमेशा से लोगों को आकर्षित करते रहे हैं। विदेशी लोग हमेशा भारत आकर यहाँ की भाषाएँ सीखते हैं, यहाँ के मन्दिर तथा तीर्थस्थान उन्हें बहुत पसंद आते हैं। परन्तु वर्तमान में स्थिति बदल गई है। हम भारतीय अपनी सभ्यता तथा संस्कृति से उतना प्यार नहीं करते जितना कि विदेशी लोग करते हैं। हमें पश्चिम के पहनावे पहनना ज्यादा अच्छा लगता है। हमें वहाँ के खाने-खाना बहुत पसंद है। हम संयुक्त परिवार की बजाए एकल परिवार में रहना ज्यादा पसंद कर रहे हैं। आज हम इतने ज्यादा आधुनिक हो गये हैं कि हम स्वयं तो हिंदी भाषा बोलते नहीं, बल्कि अपने बच्चों को भी हिंदी बोलने से मना करते है, क्योंकि अंग्रेज़ी बोलना एक स्टेट्स सिंबल हो चुका है। इसी प्रकार विदेशी जीवन शैली धीरे-धीरे हमारे ऊपर अपना कब्ज़ा जमाती जा रही है। पहले तो हम अंग्रेज़ों के गुलाम थे, अब हम उनकी जीवन-शैली के गुलाम हो चुके हैं। हमारा भारत 'अतुल्य भारत' है और हमें अपनी संस्कृति पर गर्व होना चाहिए। पश्चिमी पहनावे या संस्कृति को अपनाने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन हमें अपनी संस्कृति की जड़ों को भी भूलना नहीं चाहिए।

(ग) इंटरनेट आधुनिक विज्ञान का एक बहुत ही महत्वपूर्ण आविष्कार है। इसके ज़रिये दुनिया के किसी भी कोने से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा दुनिया के सम्पर्क में आ सकते है। इसके द्वारा हम अपने संदेश भेज सकते हैं या दूसरों के संदेशे जान सकते हैं। इंटरनेट की खोज ने हमें बहुत सारे फायदे दिए हैं। इंटरनेट के द्वारा हमारी पहुँच वर्ल्ड वाइड वेब तक पहुँच जाती है। जिसके द्वारा हम कई तरह की जानकारियों वाले पेज खोल सकते हैं। इन पेजों पर हम कितनी भी देर तक काम कर सकते हैं। साथ ही अगर हम किसी भी पेज को अगर सेब करना चाहें तो वह भी कर सकते हैं। इसके द्वारा हम अपने प्रोजेक्टस भी समय पर पूरा कर सकते हैं। इंटरनेट की सुगमता और उपयोगिता की वजह से आज हर विद्यालय कॉलेज, दुकानों इसका प्रयोग होने लगा है। इंटरनेट कनेक्शन पाने के लिए

हमें पैसे जमा कराने पड़ते हैं। जैसे ही हम पैसे जमा कराते है, इसका प्रयोग हम दुनिया के किसी भी कोने से एक हफ्ते या उससे ज्यादा समय के लिए कर सकते हैं। यह सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि हमारा इंटरनेट का प्लान क्या है। इंटरनेट के आने पर हमारी दुनिया काफी बदल गई है। इस प्रकार इंटरनेट ने हमारे जीवन पर काफी प्रभाव डाला है।

10. सेवा में,

संपादक महोदय,

हिन्दुस्तान,

नई दिल्ली।

दिनांक–12/07/18

विषय– प्लास्टिक की चीज़ों से हो रही हानि के बारे में सुझाव हेतु पत्र।

महोदय,

मैं क, ख, ग, दिल्ली निवासी आपको इस विषय पर पत्र लिखना चाहती हूँ कि हमारे दिल्ली शहर में जहाँ देखों प्लास्टिक की बोतलों, प्लास्टिक के थैलों, पोलीथीन आदि के ढेर लगे हुए हैं। इन कूड़ों के ढेरों के पास गायें खाना ढूँढने आती हैं, तब ये प्लास्टिक की चीज़े खाने के साथ गायों तथा जानवरों के मुँह में चली जाती हैं, जिससे कि उनकी मौत भी हो जाती है। इसके अलावा प्लास्टिक की थैलियाँ उड़ती हुई आसपास की नालियों में भी पहुँच जाती है, जिससे कि पानी बहुत बुरी तरह से रूक जाता है और जल भराव की स्थिति हो जाती है। पानी इकट्ठा होने पर बदबू मारने लगता है साथ ही मच्छर–मक्खियाँ भी इकट्ठा होने लगती है। इससे बीमारियाँ भी फैल रही है। इसलिए आपसे अनुरोध है कि हमारे शहर में प्लास्टिक बोतलों, थैलों तथा अन्य वस्तुओं का प्रयोग निषेध करवा दें। आशा है, यह इस सुझाव को समझेंगे तथा कोई ज़रूरी कदम उठाएँगें।

सधन्यवाद,

दिल्ली निवासी।

अथवा

परीक्षा भवन,

नई दिल्ली।

क, ख, ग,

दिनांक–12/07/18

प्रिय तेजस्विन,

स्नेह।

आशा है, आप सब कुशलतापूर्वक होंगे। हम सब भी यहाँ ठीक ठाक हैं।

मैंने यह पत्र आपको बधाई देने के लिए लिखा है। आपने तो कमाल कर दिया, नेशनल लेवल पर स्वर्ण पदक प्राप्त करना कोई आसान काम नहीं है। इसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। जो आपने की है। हिम्मत और एकाग्रता तो आपकी विशेषता है। घर के सभी लोग तो आप पर गर्व महसूस कर रहे होंगे। मुझे भी आप पर बहुत गर्व है। आने वाली अगली प्रतियोगिताओं में भी अच्छे से हिस्सा लेना और इसी तरह स्वर्ण पदक ला कर अपने माता–पिता तथा देश का नाम रोशन करते रहना।

चलो, अब पत्र बंद करता हूँ। पत्र का जवाब ज़रूर देना।

तुम्हारा दोस्त,

च, छ, ज।

11. जनसंख्या – एक विकराल समस्या

हमारे देश में वैसे तो बहुत सारी समस्याएँ हैं, जिनमें सबसे प्रमुख समस्या बढ़ती जनसंख्या है। इस समस्या के मुख्य कारण– अशिक्षा और अंधविश्वास है। इस अंधविश्वास के चलते भारतीय लोग लगातार बच्चे पैदा कर रहे हैं। सरकार इस समस्या से निपटने के लिए उपाय कर रही है लेकिन हम सबको मिलजुल कर इस समस्या का समाधान करना होगा, नहीं तो प्राकृतिक वन संपदा तो खत्म ही हो जाएगी। साथ ही बेकारी, चोरी, डकैती आदि की समस्या भी बहुत अधिक बढ़ जायेंगी।

12. (क) **एक रंगारंग**

इस वर्ष होली के अवसर पर हमारे शहर के प्रसिद्ध क्लब– पंचशील क्लब ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया था। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री मनोज तिवारी थे। कार्यक्रम में लगभग 1500 नागरिक थे। सभा भवन रंग–बिरंगी रोशनी तथा फूलों से सुसज्जित था। सबसे पहले कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप जला कर किया गया था। साथ ही सरस्वती की आराधना भी की गई थी जोकि पंचशील में रहने वाले बच्चों ने की थी। इस गीत के साथ ही छोटी–छोटी लड़कियों ने एक नृत्य भी प्रस्तुत किया जोकि बहुत ही मनमोहक था। सरस्वती आराधना के बाद अन्य नृत्यों की शुरुआत हुई। जिसमें (सोलो) एकल प्रस्तुतिकरण था। थोड़े समय के बाद पंजाबी गानों की शुरुआत हुई, जिन्होंने रंग जमा दिया। इसके बाद भांगड़ा तथा गिद्दा नृत्य भी हुए। काफी जोशीला प्रस्तुतिकरण था। दर्शक गण भी उस समय काफी जोश

में आ गए थे। ज़ोर-ज़ोर से सब लोग तालियाँ बजा रहे थे। जो मंच संभाल रहे थे, वे भी बीच-बीच में चुटकुले सुनाकर मनोरंजन कर रहे थे। कुछ ही देर के बाद कविता पाठ भी हुआ जोकि काफी प्रभावशाली था। इस गुदगुदाते हुए कार्यक्रम के बाद सभी कलाकारों को पुरस्कार भी दिए गए। अंत में रसदार तथा स्वादिष्ट भोजन परोसा गया। सचमुच यह कार्यक्रम होली के जैसा ही मस्त था।

(ख) **वन औ पर्यावरण**

वन और पर्यावरण एक दूसरे के पूरक हैं। ये जीवनदायक हैं। वर्षा लाते हैं तथा धरती की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाते हैं। वन ही बाढ़ों से रक्षा भी करते हैं। वनों की वजह से ही भूमि कटाव नहीं होता। सूखा नहीं पड़ता और रेगिस्तान भी नहीं फैलता।

वन हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे हमें पर्यावरण में फैले प्रदूषण से बचाते हैं। इन्हीं जंगलों में असंख्य जीव-जन्तु, जानवर, पशु, पक्षी रहते हैं जिससे कि हमारा संतुलन बना हुआ है। अगर वर्तमान में सही मात्रा में पेड़-पौधे लगाए जाएँ तो प्रदूषण की समस्या से काफी हद तक निपटा जा सकता है। वैश्विक ताप या गर्मी को रोकने का सबसे शक्तिशाली उपाय भी वन हैं। इसके अलावा वन हमें परमाणु ऊर्जा के खतरे से भी बचाते हैं। वनों से ही हमें न जाने कितनी कीमती जड़ी-बूटियाँ मिलती है। वन, नदिया, झरने और अन्य प्राकृतिक संसाधन जो हमारे दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाली महत्वपूर्ण वस्तुओं का भण्डार है। वनों से हमें लकड़ियाँ, फूल-पत्ती, खाद्य पदार्थ, गोंद तथा अन्य बहुत सी सामग्रियाँ मिलती है। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश में वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है, जिसका प्रमुख कारण है, बढ़ती हुई जनसंख्या।

आवास पूर्ति के लिए जंगलों को काटा जा रहा है जो कि बहुत ही खतरनाक है। आज हमें वनों की बहुत आवश्यकता है, क्योंकि जनसंख्या बढ़ने से उद्योग बढ़ रहे हैं, वाहन भी बढ़ रहे हैं। इनके प्रदूषण को रोकने के लिए वनों का होना अति आवश्यक है। इसलिए वन को बचाने हेतु सरकार को इस तरफ ध्यान देना आवश्यक है।

(ग) **मीडिया की भूमिका**

मीडिया किसी भी समाज के विभिन्न वर्गों, व्यक्तियों, राजनीतिज्ञों, संस्थाओं के बीच पुल का काम करती है। मीडिया को किसी भी समाज का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ कहा जा सकता है। आधुनिक युग में मीडिया का अर्थ- समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, टी.वी., रेडियो, इंटरनेट आदि से होता है। हमारे देश की उन्नति तथा प्रगति का श्रेय मीडिया को भी जाता है। अगर मीडिया को समाज का निर्माता कहा जाए तो गलत नहीं होगा। इतिहास गवाह है कि जब हमारा देश गुलामी की जकड़ में था, तब मीडिया ने ही पूरे देश में लोगों के मन देश भक्ति की भावना जागृत करवाई थी। आज भी मीडिया के सामने बड़े-बड़े सत्ताधारी, राजनीतिज्ञ, फिल्म कलाकार अपना सिर झुकाते हैं। क्योंकि मीडिया चाहे तो उन्हें अर्श पर ले जा सकती है और अगर मीडिया चाहे तो उन्हें फर्श पर ला सकती है। लोगों को जागरूक करने में भी मीडिया का बहुत बड़ा योगदान है। लोगों को पोलियो के प्रति सचेत कराना हो, एड्स के प्रति जागरूक कराना हो, बाल मज़दूरी पर रोक लगाना हो, वोट डालने की ज़िम्मेदारी को बताना हो, धूम्रपान के खतरों से अवगत करना हो नशों के बारे सचेत करना हो, मीडिया खूब अच्छे तरीके से लोगों को जागरूक करती है। देश के भ्रष्टाचारियों पर कड़ी नज़र रखना तथा उनके स्टिंग ऑपरेशन करके इन सफेदपोशों के काले चेहरों को दुनिया के सामने लाने में भी मीडिया की अहम भूमिका होती है। मैच का सीधा प्रसारण हो या प्रधानमन्त्री के मन की बात, मीडिया अपनी भूमिका बखूबी निभाता है।

13. परीक्षा भवन,

नई दिल्ली,

क; ख; ग।

दिनाँक - 12/07/18

प्रिय सिंधु जी,

नमस्ते।

मैं क; ख; ग; दिल्ली निवासी हूँ तथा आपके द्वारा ओलंपिक में खेले गए सभी मैचों को मैंने देखा था। आपके सभी मैच शानदार थे। साथ ही आपने रजत पदक भी जीता था। आप अपने खेल में और अभ्यास करके अगले ओलम्पिक खेल में स्वर्ण पदक लाकर देश का नाम रोशन करें यही हम आशा करते हैं तथा उसके लिए आपको बहुत सारी शुभकामनाओं देते हैं। एक बार फिर से आपको तथा आपके परिवार को बहुत सारी बधाइयाँ देती हूँ।

धन्यवाद।

आपकी शुभचिंतक,

क; ख; ग;

अथवा

विषयः जल-भराव की समस्या के रोकथाम हेतु पत्र

महोदय,

मैं क; ख; ग; बसंत कुँज निवासी आपसे अपने इलाके में होने वाली परेशानियों की रोकथाम के लिए पत्र लिखना चाहता हूँ।

आप तो जानते ही हैं कि बरसात का मौसम चल रहा हैं लेकिन गलियो तथा कॉलोनियों में पानी निकलने की सही व्यवस्था न होने की वजह से बरसात का पानी गलियों में जमा हो रहा है। घरों के आगे तो पानी दो-दो फुट तक जमा हो गया है, जिसकी वजह से घर से निकलना भी दूभर हो गया है। इसके अलावा जल भराव की वजह से काफी मच्छर पैदा हो रहे है, जिसकी वजह से बीमारियाँ भी होंगी। हर गली-मोहल्ले में स्थित गम्भीर हो जाएगी। अतः आपसे निवेदन है कि आप शीघ्र अति शीघ्र इस जल भराव की समस्या को निपटाने का प्रयास करें। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद।

भवीदय,

वसन्त कुँज निवासी,

क; ख; ग;

14. संतोष-वास्तविक धन

संतोष का अर्थ है मन की वह हालत जब मनुष्य पूर्ण सुख अनुभव करता है। हमे केवल तीन चीज़ों में संतोष नहीं करना चाहिए- विद्यार्जन, जप तथा दान/संतोष ही सबसे बड़ा धन है। अगर हमारे अंदर संतोष है तो हमारे अंदर के सभी विकार खत्म हो जाएँगे। आज हम मनुष्यों में लालच, तृष्णा तथा कुंठा की भावना बढ़ती जा रही है। इसी असंतोष को दूर करना ही संतोष कहलाता है। हमारे सुखी जीवन की सबसे उत्तम दवा है- संतोष।

15. महानगरीय जीवन

विकास की अंधी दौड़ में दौड़ते हुए लोग इतने व्यस्त हो चुके हैं कि उनके पास परस्पर एक दूसरे का हाल जानने का समय नहीं है। महानगर में यही जीवन लोगों की दिनचर्या बन चुका हैं।

महानगर का जीवन लोगों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। महानगर में लोगों को हर तरह की सुख सुविधाएं उपलब्ध हो जाती है परंतु वहीं दूसरी ओर यह कई कारणों से महानगर अभिशाप भी बन गया है।

भारत में दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, चेन्नई आदि शहरों को महानगर बताया गया है। ऊंची-ऊंची इमारतों, बड़े-बड़े कल-कारखानों, दौड़ती हुई गाड़ियां और घनी आबादी वाले शहरों को महानगर बोला गया है। यहां पर रहने वाले लोगों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है इसका एक कारण व्यवस्थाओं तथा व्यवसायों की अधिकता भी है।

महानगर में हर तरीके के साधनों की उपलब्धता है चाहे वह खेल कूद, मनोरंजन, व्यवसाय कोई भी क्षेत्र हो, महानगरों का गतिशील जीवन भौतिक सुख सुविधाओं से भरा हुआ है व्यक्तियों की भौतिक क्षमता को और बढ़ने हेतु यहां पर सकारात्मक वातावरण तथा साधनों की उपलब्धता है।

महानगर में समस्त भौतिक सुखों की उपलब्धता देखी जा सकती है परंतु यही सुख-सुविधाएं मनुष्य के पतन का कारण बन जाती हैं। परस्पर प्रेम भाव, भाईचारा, सद्भाव, दया, इन सब का भाव मनुष्य में निरंतर समाप्त होता जा रहा है तथा इसके विपरीत चोरी, डकैती, हत्या, मारकाट और अलग-अलग अपराध दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। लोग कई वर्षों तक अपने पड़ोसियों से बिना मिले बिना परिचय के काम चला लेते हैं क्योंकि उनके पास समय का अभाव रहता है। इसी समय के अभाव के कारण संबंधों का नाश होता जाता है।

महानगरीय जीवन में इतनी व्यस्तता का एक और कारण है, आपसी प्रतिस्पर्धा, हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से श्रेष्ठ बनना चाहता है अधिक धन और सम्मान कमाना चाहता है सब इसी दौड़ में शामिल है। सब इसी झूठी लालसा को सर्वोत्तम मानते हैं दिखावे की लालसा में भी सही और गलत के मध्य अंतर नहीं समझ पाते और कभी-कभी कुछ ऐसे कृत्य करते हैं जो मानवता को शर्मसार कर देते हैं। इन्हीं अतृप्त इच्छाओं की वजह से मानव जीवन अभिशप्त होता चला जाता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि महानगरीय जीवन सिक्के के दो पहलू की तरह है जिसमें एक पहलू वरदान तथा दूसरा पहलू अभिशाप है।

महानगरीय जीवन को स्वर्ग के समान बनाया जा सकता है परंतु उसके लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा से मानव जीवन के साधनों का उपयोग किया जाए और मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि रखा जाए ताकि हर व्यक्ति उनका पालन कर सके।

अथवा

पर्वों का बदलता स्वरूप

मनुष्य को अपने जीवन काल में अनेक प्रकार के कार्यों में व्यस्त रहना पड़ता है इस व्यस्तता की वजह से उसको मनोरंजन के लिए समय निकालना मुश्किल हो जाता है परंतु पर्वों की वजह से मनुष्य के जीवन में खुशहाली एवं आनंद का समय आता है और वह अपने जीवन की नीरसता को दूर कर जीवन में आनंद भर पाता है अतः मनुष्य के जीवन में पर्वों का महत्व सर्वोच्च है।

मनुष्य के जीवन में पर्व एक नई उमंग और उत्साह भरने का सर्वोत्तम माध्यम है हर धर्म के अपने-अपने पर्व होते हैं और उनको मनाने का तरीका भी अलग-अलग होता है परंतु भावनाएं एक ही होती हैं हर धर्म के व्यक्ति अपने-अपने पर्वों को पूर्ण उल्लास और आनंद के साथ मनाते हैं जिस प्रकार किसी जाति, धर्म और समुदाय की अलग-अलग परंपराएं होते हैं उसी प्रकार पर्व को मनाने की भी अपनी अपनी रीतियां होती हैं। हमारे देश भारत में दिवाली सबसे ज्यादा धूमधाम से मनाया जाता है इस त्यौहार की तैयारियां वर्षा ऋतु के बाद प्रारंभ हो जाती हैं यह त्यौहार प्रकाश का त्यौहार होता है इस त्यौहार पर लोग पूरे घर में दीपक रखते हैं पूरा घर दीपकों से दुल्हन की तरह सजा दिया जाता है यह धर्म विजयदशमी कहलाता है विजयदशमी असत्य पर सत्य की और अधर्म पर धर्म की विजय का संदेश है।

अलग-अलग रंगों से खेला हुआ त्यौहार होली कहलाता है यह त्यौहार प्रेम का प्रतीक है लोग आपसी मतभेद भुलाकर एक दूसरे के साथ प्रेम से रहने का प्रयास करते हैं और एक दूसरे पर रंग लगाते हैं उसी प्रकार अलग धर्मों में ईसाइयों का प्रमुख त्यौहार क्रिसमस संसार में पाप और दुराचार का अंधकार दूर करने का संदेश देता है और मुसलमानों में ईद आपसी प्रेम बंधुत्व का संदेश देती है इस प्रकार हर धर्म के त्योहारो में यह समानता है की सभी धर्म आपसी प्रेम भाव को बढ़ाने का महान उद्देश्य पूरा करते हैं।

बदलते समय के साथ इन त्यौहारों का स्वरुप ही बदल गया है बाजारों में इन त्योहारों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है दिवाली पर बिजली के रंगीन बल्बों की एक झलक द्वारा सजावट दिखाई दे जाती है इन बदलते स्वरूप की वजह से पारंपरिक स्वरूप कहीं छिप गया है। पारंपरिक स्वरुप में खील बताशे की खुशबू और बताशे से भरी बड़ी बड़ी थालियां दिखाई देती थी अब यह सब मुश्किल से देखने को मिलता है नवीन स्वरूप के त्यौहारों में उल्लास और उमंग कम दिखाई पड़ता है खुशियों के पल भी अब दिखावा बन गए हैं त्योहारों पर बाजार हफ्ते भर पहले से ही जगमगाहट उठते हैं।

पारंपरिक चीजें गायब होती जा रही हैं और आधुनिकता से सजी हुई मशीनी उपहार से जुड़ गई हैं इस प्रकार हम अपनी परंपराओं से दूर होते जा रहे हैं। इस वजह से सामाजिक और सामुदायिक विकास भी प्रभावित होता जा रहा है।

अथवा

बीता समय फिर नहीं लौटता

मनुष्य के जीवन में सबसे अधिक मूल्य समय का होता है। किसी महापुरुष ने सच ही कहा है- 'समय की चोटी को पकड़ो' इसका अर्थ यह है कि आने वाले समय को पहले से ही पहचान कर उसकी तैयारी कर लेनी चाहिए। संसार के सभी महापुरुष समय के महत्व को पहचानते हैं, स्वीकारते हैं तथा अपने जीवन में प्रत्येक पल का सही उपयोग करते हैं। खोया हुआ धन पुनः प्राप्त किया जा सकता है, खोया हुआ मान-सम्मान भी कठिन परिश्रम से दोबारा प्राप्त किया जा सकता है किंतु एक बार समय हाथ से चला गया तो लाख प्रयत्न करने पर भी उसे दोबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। समय का महत्व अंग्रेजी की एक प्रसिद्ध कहावत 'एन इंच ऑफ टाइम कैन नॉट बी बॉट विध एन इंच ऑफ गोल्ड' से भी लगाया जा सकता है।

अक्सर असफल व्यक्ति समय ना होने का बहाना करते मिलते हैं, वे कहते हैं कि अगर पर्याप्त समय मिला होता तो वे भी आज सफल होते। वास्तविकता यह है कि वे व्यक्ति आलसी होते हैं उनके पास समय का उचित तरीके से उपयोग करने की कोई योजना नहीं होती है। इतिहास में लिखा है कि किस प्रकार प्रत्येक सफल व्यक्ति ने अपना कार्य निर्धारित समय पर किया और समय का सदुपयोग किया। विद्यार्थियों के भी जीवन में समय का बहुत महत्व है। जो विद्यार्थी समय को नष्ट करता है, उसे विद्या नहीं आ सकती। विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है कि वह समय का सदुपयोग करें तथा एक समुचित समय तालिका के अनुसार अध्ययन करें तथा उसका कठोरता से पालन करें। समय का सदुपयोग ही मनुष्य को सफल बना सकता है।

असफल लोगों में आमतौर पर यह देखा जाता है कि वह आज का काम कल पर छोड़ देते हैं और इस प्रकार समय का दुरुपयोग करते हैं। जैसा कि कहा गया है कि बीता समय किसी के लिए लौट के नहीं आता इसलिए हमें आज के समय का उचित उपयोग करना चाहिए।

16. महानगरीय जीवन

कृष्णा नगर

नई दिल्ली

दिनांक 17/08/2015

सेवा में

श्रीमान पुलिस आयुक्त महोदय

कृष्णा नगर

नई दिल्ली

विषय- धन्यवाद ज्ञापन के लिए पत्र

महोदय,

मैं कृतज्ञ हूं कि आपने मेरी प्रार्थना को गंभीरता से लेते हुए हमारे क्षेत्र के पार्क को कूड़ा मुक्त कराने के लिए दी गई मेरी प्रार्थना पर शीघ्र कार्रवाई की।

आप के कारण अब यह पार्क स्वच्छ और पूरा साफ सुथरा हो गया है अब बच्चे फिर से यहां पर खेल सकते हैं और आनंद ले सकते हैं आपके इस कार्य के लिए हम आप को अपना धन्यवाद अर्पित करते हैं ।

धन्यवाद

आपका विश्वासी

रोहित शर्मा

अथवा

कृष्णा नगर

नई दिल्ली

दिनांक 17/08/2015

प्रिय मित्र

सस्नेह नमस्ते

कुशल रहकर आपकी कुशलता की कामना करता हूं और विश्वास रखता हूं कि आप स्वस्थ होंगे इस पत्र के द्वारा मैं आपको खुशी के अवसर पर फोड़े जाने वाले पटाखे के नुकसान के विषय पर प्रकाश डालना चाहता हूँ त्यौहारों का समय निकट आ रहा है।

मित्र! कार्बन डाइ ऑक्साइड पर्यावरण तथा शरीर के लिए बहुत ही हानिकारक गैस है यह गैस पटाखों के फूटने पर उत्पन्न होती है इस तरह की अन्य कई गैसें पटाखों के फूटने पर उत्पन्न होती हैं और वायुमंडल में घुल जाती हैं यह गैसें पर्यावरण को बहुत ही ज्यादा प्रभावित करती हैं।

ग्लोबल वार्मिंग की समस्या का एक कारण यह गैसें भी हैं कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी जहरीली गैस पटाखों से निकलती है जो हृदय की मांसपेशियों को आहत करती हैं। श्वसन के द्वारा मनुष्य इन गैसों को अंदर ले लेता है जिससे यह तरह-तरह की बीमारियां उत्पन्न कर देती हैं। ये गैसे जीव जंतुओं को भी नुकसान पहुंचाती हैं। पटाखों की वजह से वायु प्रदूषण के साथ-साथ ध्वनि प्रदूषण फैलता है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

इस पत्र के जरिए में यह कोशिश करना चाहता हूं की आने वाले त्यौहार पर हम कम से कम पटाखे जलाएं और पटाखे जलाने के स्थान पर वृक्ष लगाएं जिससे कि पर्यावरण का संतुलन बना रहे और लोग इसी तरह आने वाले सारे त्यौहार आनंद के साथ मनाते रहे।

आप को तथा परिवार को मेरा अभिवादन

आपका प्रिय मित्र

रोहित

17. विज्ञापन

स्वस्थ पर्यावरण स्वस्थ जीवन

मानव पर्यावरण का महत्वपूर्ण उपभोक्ता है, पर्यावरण ही उस का सुरक्षा कवच है।

संरक्षित- संपोषित- स्वच्छ पर्यावरण, उल्लसित और सफल जीवन की पहचान है।

प्राकृतिक संसाधनों का दोहन रोकना है, आज हम सबको यह संकल्प करना है।

प्राकृतिक संपदा का जब विवेक पूर्ण उपयोग होगा, तभी धरा पर जीवन प्रफुल्लित रहेगा।

आइए! संकल्प दोहराएं ! पर्यावरण के प्रति जागरूक रहेंगे, पर्यावरण को स्वस्थ रखेंगे।

वन और प्राकृतिक विभाग नई दिल्ली द्वारा जनहित में प्रसारित।

अथवा

आदर्श विद्यालय

संजय नगर

दिनांक 08/08/2018

दिन - सोमवार

हस्तकला वस्तुओं की प्रदर्शनी

विशेषताएं

(I) सभी प्रदर्शित वस्तुएं विद्यार्थियों द्वारा निर्मित हैं।

(II) इन वस्तुओं के निर्माण में किसी भी प्रकार की मशीन का प्रयोग नहीं किया गया है।

(III) सभी वस्तुएं विद्यार्थियों की प्रतिभा का परिचय कराती हैं।

(IV) वस्तुओं का निर्माण प्राकृतिक संसाधनों से किया गया है।

(V) सभी वस्तुएं पर्यावरण को स्वच्छ करने में सहायक हैं।

(VI) कुछ विशेष वस्तुएं उचित मूल्य पर बिक्री के लिए उपलब्ध हैं।

प्रदर्शनी का समय - प्रातः 9:00 बजे से अपराह्न 3:00 बजे तक

प्रदर्शनी का स्थान - विद्यालय का सभागार

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें - 8722222

अवश्य आएं! लाभ उठाएं! अमूल्य धरोहर पाएं!

विद्यालय परिवार द्वारा जनहित में प्रसारित

Smart Notes ....

CBSE
Sample Question Paper

Hindi
Class X

Time : 3 hrs **MM : 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र के चार खण्ड हैं- क, ख, ग और घ।

(ii) चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खंड (क)

अपठित अंश

15 अंक

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढिए और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए- **8**

सुबुद्ध वक्ता अपार जनसमूह का मन मोह लेता है, मित्रों के बीच सम्मान और प्रेम का केन्द्र-बिन्दु बन जाता है। बोलने का विवेक, बोलने की कला और पटुता व्यक्ति की शोभा है, उसका आकर्षण है। जो लोग अपनी बात को राई का पहाड़ बनाकर उपस्थित करते हैं, वे एक ओर जहाँ सुनने वाले के धैर्य की परीक्षा लिया करते हैं, वहीं अपना और दूसरे का समय भी अकारण नष्ट किया करते हैं। विषय से हटकर बोलने वालों से, अपनी बात को अकारण खींचते चले जाने वालों से तथा ऐसे मुहावारों और कहावतों का प्रयोग करने वालों से जो उस प्रसंग में ठीक ही न बैठ रहे हों, लोग ऊब जाते हैं। वाणी का अनुशासन, वाणी का संयम और संतुलन तथा वाणी की मिठास ऐसी शक्ति है जो हर कठिन स्थिति में हमारे अनुकूल ही रहती है, जो मरने के पश्चात भी लोगों की स्मृतियों में हमें अमर बनाए रहती है। हाँ, बहुत कम बोलना या सदैव चुप लगाकर बैठे रहना भी बुरा है। यह हमारी प्रतिभा और तेज को कुंद कर देता है। अतएव कम बोलो, सार्थक और हितकर बोलो। यही वाणी का तप है।

(i) व्यक्ति की शोभा और आकर्षण किसे बताया गया है? 2

(ii) कैसे व्यक्तियों से लोग ऊब जाते हैं? 2

(iii) वाणी का तप किसे कहा गया है? 2

(iv) बहुत कम बोलना भी अच्छा क्यों नहीं है? 1

(v) 'राई का पहाड़ बनाना' मुहावरे का अर्थ लिखिए। 1

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखितः **7**

क्या रोकेंगे प्रलय मेध ये, क्या विद्युत-घन के नर्तन,
मुझे न साथी रोक सकेंग, सागर के गर्जन-तर्जन।

मैं अविराम पथिक अलबेला रूके न मेरे कभी चरण,
शूलों के बदले फूलों का किया न मैने मित्र चयन।
मैं विपदाओं में मुसकाता नव आशा के दीप लिए,
फिर मुझको क्या रोक सकेंगे जीवन के उत्थान पतन।

मैं अटका कब, कब विचलित मैं, सतत डगर मेरी संबल,
रोक सकी पगले कब मुझको यह युग की प्राचीर निबल।
आंधी हो, ओले वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे ये जग के खंडन-मंडन।

मुझे डरा पाए कब अंधड, ज्वालामुखियों के कंपन,
मुझे पथिक कब रोक सके हैं अग्निशिखाओं के नर्तन।
मैं बढ़ता अविराम निरंतर तन मन में उन्माद लिए,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत नर्तन।

(i) कविता में आए मेघ, सागर की गर्जना और ज्वालामुखी किनके प्रतीक हैं, कवि ने उनका संयोजन यहाँ क्यों किया है? 2

(ii) 'शूलों के बदले फूलों का किया न मैने चयन' - पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। 2

(iii) 'युग की प्राचीर' से क्या तात्पर्य है? 1

(iv) उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर कवि के स्वभाव की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 1

(v) 'उत्थान पतन' शब्द में समास बताइए। 1

खंड (ख)

व्याकरण **15 अंक**

3. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। **1×3=3**

(क) अध्यापिका ने छात्रा की प्रशंसा की तथा उसका उत्साह बढ़ाया। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ख) जो ईमानदार है वही सम्मान का सच्चा अधिकारी है। (सरल वाक्य में बदलिए)

(ग) ज्यों ही घंटी बजी छात्र अंदर चले गए। (रचना के आधार पर वाक्य भेद लिखिए)

4. निम्नलिखित वाक्यों में वाच्य परिवर्तन कीजिए। **1×4=4**

(क) हम रात भर कैसे जागेंगे? (भाव वाच्य में बदलिए)

(ख) तानसेन को संगीत सम्राट कहते हैं। (कर्तृ वाच्य में बदलिए)

(ग) उनके द्वारा कैप्टन की देशभक्ति का सम्मान किया गया। (कर्तृ वाच्य में बदलिए)

(घ) माँ ने अवनि को पढ़ाया (कर्म वाच्य में बदलिए)

5. रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए। **1×4=4**

(क) आज समाज में <u>विभीषणों</u> की कमी नहीं है।

(ख) रात में <u>देर तक</u> बारिश होती रही।

(ग) हर्षिता निबंध <u>लिख रही</u> है।

(घ) इस पुस्तक में <u>अनेक</u> चित्र है।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए। **1×4=4**

(क) श्रृंगार रस के भेदों के नाम लिखिए।

(ख) करूण रस का मूल स्थायी भाव लिखिए।

(ग) अद्‌भुत रस का अनुभाव लिखिए।

(घ) हास्य रस का संबधित काव्य पंक्तियाँ लिखिए।

खंड (ग)

(पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक) 30 अंक

7. निम्नलिखित गद्‌यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखिएः

पढ़ने लिखने में स्वयं कोई बात नहीं जिससे अनर्थ हो सके। अनर्थ का बीच उसमें हरगिज नहीं। अनर्थ पुरूषों से भी होते हैं। अपढ़ों और पढ़े लिखों, दोनों से अनर्थ, दुराचार और पापाचार के कारण औरही होतं हैं और वे व्यक्ति विशेष के चाल चलन देखकर जाने भी जा सकते हैं। अतएव स्त्रियों को अवश्य पढ़ाना चाहिए। जो लोग यह कहते हैं कि पुराने जमाने में यहाँ स्त्रियाँ न पढ़ती थीं अथवा उन्हें पढ़ने की मुमानियत थी वे या तो इतिहास से अभिज्ञता नहीं रखते या जान बूझकर लोगों को धोखा देते हैं। समाज की दृष्टि में ऐसे दंडनीय हैं क्योंकि स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है- समाज की उन्नति में बाधा डालना है।

(क) कुछ लोग स्त्री शिक्षा के विरोध में क्या तर्क देते हैं और क्यों 2

(ख) अनर्थ का मूल स्रोत कहाँ होता है 2

(ग) स्त्री शिक्षा के विरोधी दंडनीय क्यों हैं 1

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिएः **2×4=8**

(क) देवदार की छाया और फादर कामिल बुल्के के व्यक्तित्व में क्या समानता थी?

(ख) शिष्या ने डरते हुए बिस्मिल्ला खाँ से क्या कहाँ? खाँ साहब ने उसे कैसे समझाया?

(ग) बालगोबिन भगत की पुत्रवधू की ऐसी कौन सी इच्छा थी जिसे वे पूरा न कर सके? कारण स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'एक कहानी यह भी' नामक पाठ की लेखिका मन्नू भंडारी का साहित्य की अच्छी पुस्तकों से परिचय कैसे हुआ?

9. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूंकि पहारू।।
इहाँ कुम्हड़बतिआ कोउ नाहीं। जे तरजनी देखी मरि जाहीं।।
देखि कुठारू सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिसरोकी
सुरमहिसुर हरिजन अरू गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।।
बधे पापु अपकीरति हारें। मारतहू पा परिअ तुम्हारें।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। व्यर्थ धरहु धनु बानकुठारा।।

(क) रघुकुल की परंपरा की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं? 2

(ख) ''इहाँ कुम्हड़बतिआ कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।'' कहकर लक्ष्मण ने अपने कौन सी विशेषता बताई है? 2

(ग) प्रस्तुत काव्यांश में 'कुम्हडबतिया' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है? 1

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए: 2×4=8

(क) 'आत्मकथ्य' कविता में जीवन के किस पक्ष का वर्णन किया गया है।

(ख) 'श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' द्वारा रचित कविता 'उत्साह' के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'कन्यादान' कविता में वस्त्र और आभूषणों को शाब्दिक भ्रम क्यों कहा गया है?

(घ) मुख्य गायक एवं संगतकार के मध्य जुड़ी कड़ी अगर टूट जाए तो उसके क्या परिणाम हो सकते हैं? स्पष्ट कीजिए।

11. 'साना-साना हाथ जोडि' पाठ में कहा गया है कि कटाओ पर किसी दुकान का न होना वरदान है। ऐसा क्यों? भारत के अन्य प्राकृतिक स्थानों को वरदान बनाने में नवयुवकों की क्या भूमिका हो सकती है? स्पष्ट कीजिए। 4

अथवा

'माता का अंचल' पाठ में वर्णित तत्कालीन विद्यालयों के अनुशासन से वर्तमान युग के विद्यालयों के अनुशासन की तुलना करते हुए बताइए कि आप किस अनुशासन व्यवस्था को अच्छा मानते हैं और क्यों?

खंड (घ)

(लेखन) 20 अंक

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। 10

(क) स्वच्छ भारत एक कदम स्वच्छता की ओर

- प्रस्तावना
- स्वच्छता का महत्व
- वर्तमान समय में स्वच्छता को लेकर भारत की स्थिति
- उपसंहार

(ख) ऊर्जा की बढ़ती माँग: समस्या और समाधान

- प्रस्तावना
- ऊर्जा के पारंपरिक स्रोतों का समाप्त होना
- नवीन स्रोतों की आवश्यकता
- हमारी ऊर्जा पर निर्भरता
- उपसंहार

(ग) **सामाजिक संजाल (सोशल नेटवर्किंग) वरदान या अभिशाप**

- प्रस्तावना
- सोशल नेटवर्किंग के लाभ
- सोशल नेटवर्किंग से हानियाँ
- उचित प्रयोग के लिए सुझाव
- उपसंहार

13. आपकी कक्षा के कुछ छात्र छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों को सताते हैं। इस समस्या के बारे में प्राचार्य जी को पत्र बताएँ और कोई उपाय भी सुझाइए। 5

अथवा

आज दिन-प्रतिदिन सूचना और संचार माध्यम लोगों के बीच लोकप्रिय होते जा रहे हैं। ऐसे में पत्र लेखन पीछे छूटता जा रहा है। पत्र लेखन का महत्व बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

14. आपके शहर में विश्व पुस्तक मेले का आयोजन होने जा रहा है। इसके लिए 25 से 50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। 5

अथवा

आपकी बड़ी बहन ने एक संगीत सिखाने की संस्था खोली है। इसके लिए 25 से 50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए।